ISSN : 3107-7757

अंतस

अर्धवार्षिक पत्रिका अंक-29, 26 जनवरी 2026

कैंपस जीवन के बहुरंगी आयाम

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर

नियम-निर्देश

- अंतस के आगामी अंक के प्रकाशन हेतु अपनी मौलिक एवं यथासंभव अप्रकाशित रचनाएं भेजने का कष्ट करें।
- रचनाएं यथासंभव टाइप की हुई हों, रचनाकार का पूरा नाम, पद एवं संपर्क विवरण का उल्लेख अपेक्षित है।
- लेखों में शामिल छाया-चित्र तथा आंकड़ों से संबंधित आरेख होना चाहिए।
- अनुदित लेखों की प्रामाणिकता अवश्य सुनिश्चित करें। अनुवाद में सहायता हेतु संस्थान राजभाषा प्रकोष्ठ से संपर्क कर सकते हैं।
- प्रकाशन के लिए किसी भी लेखक को किसी प्रकार का मानदेय नहीं दिया जाएगा।
- अंतस में उन सभी प्रकार के विचारों का स्वागत होगा जो संस्थान परिसर में रहने वाले अथवा काम करने वाले लोगों का प्रतिनिधित्व करते हैं किन्तु किसी प्रकार के राजनीतिक विचारों को प्रोत्साहित नहीं किया जाएगा।
- अंतस में प्रकाशित रचनाओं में निहित विचारों के लिए संपादक मंडल अथवा राजभाषा प्रकोष्ठ उत्तरदायी नहीं होगा और इसके लिए पूरी की पूरी जिम्मेदारी स्वयं लेखक की होगी।
- रचनाएं अंतस के अनवरत दो अंकों में प्रकाशित न होने की स्थिति में संबंधित रचनाकार राजभाषा प्रकोष्ठ से जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।
- प्रयुक्त भाषा सरल, स्पष्ट एवं सुवाच्य हिंदी भाषा हो।

साभार
संपादक मंडल

अंतस परिवार

संरक्षक
प्रोफेसर मणीन्द्र अग्रवाल

निर्देशन
प्रोफेसर ब्रज भूषण

कुलसचिव
श्री विश्व रंजन

मुख्य संपादक
प्रोफेसर संतोष कुमार मिश्र

संपादक
श्री विजय कुमार पाण्डेय

संपादन सहयोग
प्रोफेसर शिखा दीक्षित
प्रोफेसर कांतेश बालानी
प्रोफेसर अर्क वर्मा
प्रोफेसर ललित सारस्वत
प्रोफेसर अमर कुमार बेहेरा
प्रोफेसर हिमांशु यादव

अनुवाद एवं साहित्यिक सहयोग
श्री जगदीश प्रसाद
श्री दुर्गेश कुमार मिश्र

वर्तनी शोधन
श्री अरविन्द कुमार सैनी

अभिकल्प
श्री नितेश कुमार

छायाचित्र
श्री गिरीश पंत (आईएमओसी)
एवं एआई

विशेष सहयोगः प्रस्तुत अंक के सभी रचनाकार, समस्त संस्थान कर्मी एवं संस्थान प्रशासन।

संकेतक

शुभेच्छा
निदेशक 03
उप निदेशक 04
कुलसचिव 05
संपादकीय
मुख्य संपादक 06
रिपोर्ट
हिंदी दिवस-2025 07
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की दसवीं बैठक 10
विश्व हिंदी दिवस-2026 11
अक्षर साहित्यिक महोत्सव-2025 12
साक्षात्कार
श्री अंकुर गर्ग 13
गुरु दक्षिणा
डॉ. दीपक नरुला 17
साहित्यिक यात्रा
आईआईटी कानपुर सागा 20
पहियों पर दोस्तीः कैंपस जीवन के रंगों से रंगी एक अविस्मरणीय दास्तान 20
कैंपस जीवन के बहुरंगी आयाम 22
सुबह का भूला 23
तुम ही नहीं हो केवल बंधु 24
मानिनी मन रे 25
आईआईटी कानपुरः सुविधाओं से सजा ज्ञान का आकाश 25
कैंपस जीवन के बहुरंगी आयामः मोडी-देवनागरी लिपि की कर्सिव सिस्टर? 26
मेरी दृष्टि में 27
मुझे अपने कॉलेज ले चलो यारों 27
राजा और मछली 28
था बहुत कुछ सोचने को 29
कैंपस जीवन के बहुरंगी आयाम में केंद्रीय विद्यालय की उपस्थिति 29
एक हैं छोटे पंडित 30
आईआईटी कानपुर प्रांगणः जीवन आत्मनिर्भरता, अभिव्यक्ति, संघर्ष और सृजन की तपोभूमि...... 31
तुम्हें है बहुत चलना अभी 32
कुछ लोग हैं 33
भाषा-विमर्श
समरसता 33
तकनीकी लेख
भारत में मानव रहित विमान (ड्रोन) प्रशिक्षण एवं लाइसेंसिंगः आवश्यकता, संभावनाएं और आईआईटी कानपुर आरपीटीओ की अग्रणी भूमिका 35
विरासत
हार की जीत 38
अतिथि रचनाकार
कैंपस बहुरंगी 41
बाल बत्तीसी
सोन मछली 46

शुभेच्छा

निदेशक की कलम से...

प्रिय पाठकगण,

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर की हिंदी पत्रिका 'अंतस' के इस नवीन अंक को आप सभी के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत हर्ष की अनुभूति हो रही है। इस बार का विषय 'कैंपस जीवन के बहुरंगी आयाम' संस्थान के उस जीवंत, सृजनशील और बहुआयामी परिसर के जीवन को प्रतिबिंबित करता है, जो शिक्षा, अनुसंधान, नवाचार, साहित्य, संस्कृति, खेल और मानवीय मूल्यों का अप्रतिम संगम है।

यह संस्थान न केवल उत्कृष्ट तकनीकी शिक्षा और उच्चस्तरीय अनुसंधान के लिए देश और दुनिया में विख्यात है, बल्कि यह एक ऐसे समग्र परिवेश का निर्माण भी करता है, जहां विद्यार्थियों का बौद्धिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और नैतिक विकास उत्कृष्ट रूप से होता है। यहां का कैंपस जीवन केवल कक्षाओं और प्रयोगशालाओं तक ही सीमित न रहकर संवाद, सहयोग, रचनात्मकता और सीखने का एक प्रमुख केन्द्र भी है।

संस्थान ने विज्ञान, अभियांत्रिकी, प्रौद्योगिकी और नवाचार के क्षेत्र में अनेक उल्लेखनीय उपलब्धियां हासिल की हैं। अंतरिक्ष विज्ञान, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, साइबर सुरक्षा, सतत ऊर्जा, संज्ञानात्मक विज्ञान, चिकित्सा प्रौद्योगिकी एवं बहुविषयक अनुसंधान जैसे क्षेत्रों में आईआईटी कानपुर की भूमिका निरंतर सशक्त होती जा रही है। हाल के वर्षों में स्थापित नए विभागों, स्कूलों और अनुसंधान केंद्रों ने संस्थान को वैश्विक स्तर पर व्यापक पहचान प्रदान की है। इन उपलब्धियों का प्रमुख श्रेय संस्थान के समर्पित शैक्षणिक समुदाय, प्रतिभाशाली विद्यार्थी और प्रेरणादायी बहुरंगी परिसरीय जीवन को जाता है।

संस्थान का कैंपस मानव जीवन के विविध रंगों से सुसज्जित है। यहां पर शैक्षणिक उत्कृष्टता के साथ-साथ खेल, सांस्कृतिक गतिविधियां, साहित्य, संगीत, नाटक, वाद-विवाद, सामाजिक सेवा और नवाचार कैंपस को निरंतर ऊर्जावान एवं गतिशील बनाए रखती हैं। विभिन्न पृष्ठभूमि से आए विद्यार्थी जब अपने विचार, अनुभव और संस्कृति साझा करते हैं, तो परिसर एक बहुरंगी सामाजिक परिवेश का रूप ले लेता है। यही विविधता संस्थान की सबसे बड़ी शक्ति है। यहां व्यतीत किया गया प्रत्येक दिन विद्यार्थियों के व्यक्तित्व को निखारने, उनके दृष्टिकोण को व्यापक बनाने और उन्हें जीवन की विविध चुनौतियों के लिए तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि 'कैंपस जीवन के बहुरंगी आयाम' विषय पर आधारित यह अंक पाठकों को आईआईटी कानपुर के परिसर जीवन के विविध पहलुओं से परिचय कराएगा और उन्हें आत्मचिंतन, संवाद तथा सृजन के लिए प्रेरित करेगा।

अंत में, अंतस के इस अंक के सफल एवं समयबद्ध प्रकाशन हेतु मैं सभी रचनाकारों, संपादक मंडल तथा प्रकाशन से जुड़े समस्त सदस्यों को हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं। आशा है कि यह पत्रिका भविष्य में भी भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर के साहित्यिक और सांस्कृतिक जीवन को समृद्ध करती रहेगी तथा हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती रहेगी।

आप सभी को गणतंत्र दिवस की शुभकामनाएं। धन्यवाद!

मणीन्द्र अग्रवाल
निदेशक

शुभेच्छा

उप निदेशक की कलम से...

प्रिय पाठकों,

आप सभी को नूतन वर्ष 2026 एवं 77वें गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं!

संस्थान की हिंदी पत्रिका 'अंतस' का 29वां अंक 'कैंपस जीवन के बहुरंगी आयाम' विषय पर प्रकाशित किया गया है। यह उल्लेखनीय है कि पारिस्थितिकी तंत्र में जीवन का महत्व सर्वोपरि है। हमारे सामाजिक विकास की गुणवत्ता, व्यक्तियों के जीवन की गुणवत्ता पर पूर्णतः निर्भर करती है। जीवन के विभिन्न आयामों में हमारे आस-पास के वातावरण का प्रमुख योगदान होता है। यह द्रष्टव्य है कि जब एक शिशु धीरे-धीरे अपने जीवन में विकास करता है तो उसके समग्र विकास हेतु विभिन्न प्रकार के वातावरण जैसे विद्यालयी एवं कैंपस वातावरण, उसके इस विकास की श्रृंखला में इष्टतम योगदान देते हैं।

इस संस्थान के संकाय सदस्यों/विद्यार्थियों एवं कर्मचारियों द्वारा रचित कृतियां संस्थान के बहुआयामी परिवेश तथा राजभाषा हिंदी के प्रति लोगों के उत्कट प्रेम को दर्शाती हैं। हमारे संस्थान में देश के विभिन्न हिस्सों का प्रतिनिधित्व होने की वजह से कैंपस जीवन विभिन्न प्रकार की अद्वितीय बहुरंगी प्रतिभाओं से भरा हुआ है। इस परिसर में विभिन्न भाषाओं को प्रयोग करने वाले, विभिन्न वेश-भूषा को धारण करने वाले, विभिन्न प्रकार के व्यंजनों एवं खान-पान का प्रयोग करने वाले एवं विभिन्न प्रकार की सांस्कृतिक विविधताओं वाले लोग निवास करते हैं। अतः यहां का परिसरीय जीवन भारत वर्ष की 'विभिन्नता में एकता' की प्रमुख विशेषता को दर्शाता है। इस पत्रिका की विभिन्न कृतियां भी परिसरीय जीवन की विभिन्नताओं को परिलक्षित करते हुए कैंपस जीवन के बहुरंगी आयाम को भलीभांति प्रदर्शित करती हैं।

'अंतस' में परिसरवासियों ने अपनी लेखनी के माध्यम से अपनी विभिन्नताओं को बड़ी ही सफलता के साथ इसके विषय वस्तु के साथ सुसंगत किया है। मुझे हर्ष है कि संस्थान के सभी कर्मियों ने पत्रिका के अन्य तत्वों से तादात्म्य स्थापित करते हुए इस पत्रिका में अपनी भागीदारी निरंतर बढ़ाई है और हिंदी साहित्य में अपनी प्रतिभा को विभिन्न आयाम देने के साथ ही परिसरीय जीवन के बहुरंगी आयामों को भी समाहित किया है।

संस्थान का राजभाषा प्रकोष्ठ वर्षपर्यन्त साहित्य से जुड़ी विभिन्न गतिविधियों का सफलता पूर्वक आयोजन करता है। जिसमें साहित्यिक गोष्ठियां, कवि सम्मेलन, साहित्यिक उत्सव, भारतीय भाषा उत्सव आदि शामिल हैं। इन सभी आयोजनों का मुख्य उद्देश्य संस्थान में हिंदी साहित्य, साहित्यिक गतिविधियों एवं भाषा के प्रति जागरुकता पैदा करना होता है जिससे उनके अंदर हिंदी साहित्य की समझ विकसित हो सके तथा वे इसका लुत्फ भी उठा सकें। हमारे संस्थान के अनेक विद्यार्थी, संकाय सदस्य एवं कर्मचारी हिंदी साहित्य में गहरी रुचि रखते हैं जिसे वे अंतस पत्रिका के माध्यम से व्यक्त करते हैं।

आप सभी से अनुरोध है कि आप अपने कृतियों के माध्यम से इस पत्रिका के प्रकाशन में अपना बहुमूल्य सहयोग प्रदान करें। मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास भी है कि सभी परिसरवासी अपनी मौलिक रचनाओं से पत्रिका को और अधिक समृद्ध एवं सुरुचिपूर्ण बनाने में हर संभव सहयोग प्रदान करते रहेंगे।

शुभकामनाओं के साथ, हार्दिक धन्यवाद!

ब्रज भूषण
उप निदेशक

शुभेच्छा

कुलसचिव की कलम से...

प्रिय पाठकों,

आप सभी को नव वर्ष 2026 एवं 77वें गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं। संस्थान की हिंदी पत्रिका 'अंतस' का प्रस्तुत अंक 'कैंपस जीवन के बहुरंगी आयाम' जैसे रुचिकर विषय को लेकर प्रकाशित हुआ है।

हमारा संस्थान विविधताओं से भरा हुआ संस्थान है। यहां पर देश के लगभग हर राज्य का प्रतिनिधित्व है। यहां पर बहु भाषाओं एवं बहु संस्कृति का संगम भी दिखाई पड़ता है। संस्थान के अंदर बहुत से क्लब एवं संस्थाएं अस्तित्व में हैं जो भिन्न-भिन्न संस्कृतियों को प्रदर्शित करने का कार्य करती हैं। एक और जहां श्री सर्वजनिन काली पूजा समिति, विवेकानंद समिति एवं महिला संघ जैसी अनौपचारिक समितियां/संस्थाएं अपने कार्यक्रमों के माध्यम से संस्थान की सांस्कृतिक विरासत में बहुरंग भरने का कार्य करती हैं वहीं औपचारिक संस्थाओं के रूप में कार्यालय, विद्यार्थी कार्य के माध्यम से विद्यार्थियों के लिए अंतराग्नि, उद्घोष एवं आईआईटी कल्चरल मीट जैसे कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है, जिसमें विद्यार्थियों की बहुमुखी प्रतिभा देखने को मिलती है। राजभाषा प्रकोष्ठ भी वर्षपर्यन्त अनेकों साहित्यिक कार्यक्रमों का आयोजन करता रहता है जहां पर देश भर के रंगमंच कर्मियों तथा साहित्यकारों को एक ही मंच से सुना जा सकता है। समय-समय पर पूर्व-छात्र पुनर्मिलन सम्मेलनों का आयोजन भी किया जाता है जिसमें हमें संस्थान के पूर्व-छात्रों से मिलने एवं उनकी उपलब्धियों को जानने-समझने का अवसर मिलता है।

यदि शैक्षणिक दृष्टिकोण से कैंपस जीवन के बहुरंगी आयाम की बात करें तो यहां पर साल भर शैक्षणिक व्याख्यानों/सम्मेलनों का आयोजन होता रहता है, जिनके माध्यम से देश-विदेश के अनेक वक्ताओं को सुनने का अवसर मिलता है। साथ ही साथ, संस्थान में नियमित रूप से अन्य शैक्षणिक संस्थानों के विद्यार्थियों एवं अध्यापकों के शैक्षणिक भ्रमण भी होते रहते हैं जहां पर पारस्परिक ज्ञानार्जन होता है। समय-समय पर देश के प्रधानमंत्री एवं राष्ट्रपति जैसे अति विशिष्ट अतिथियों की मेजबानी करने का सौभाग्य भी संस्थान को मिलता रहता है जो संस्थान के बहुरंगी आयामों को और भी समृद्ध बनाता है। संस्थान के अंदर चल रही तमाम परियोजनाओं के माध्यम से शैक्षणिक एवं अनुसंधान संबंधी तंत्र को सतत रूप से सुदृढ़ बनाने का कार्य किया जा रहा है ताकि इसका लाभ देश एवं समाज को मिल सके। छात्रों के लिए योग की कक्षाएं एवं खेल-कूद संबंधी विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है जिससे कि उनका शरीर एवं मस्तिष्क स्वस्थ बना रहे और वह अपने अध्ययन के प्रति एकाग्रचित बने रहें।

'अंतस' पत्रिका के प्रस्तुत अंक में कई रचनाकारों ने भी अपनी रचनाओं के माध्यम से कैंपस जीवन के बहुरंगी आयाम पर अपने विचार साझा किए हैं जो पाठकों को निश्चय ही पसंद आएंगे। पत्रिका के संपादन मंडल के सभी सदस्यों को पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई।

एक बार पुनः गणतंत्र दिवस की ढ़ेरों शुभकामनाओं के साथ!

विश्व रंजन
कुलसचिव

संपादकीय

मुख्य संपादक की कलम से...

सभी पाठकों को सादर प्रणाम!

अंतस के सभी पाठकों एवं लेखकों को इस नए अंक के प्रकाशन पर हार्दिक बधाई एवं आभार! साथ ही साथ आप सभी को 77वें गणतंत्र दिवस की अशेष शुभकामनाएं।

पत्रिका का प्रस्तुत अंक 'कैंपस जीवन के बहुरंगी आयाम' जैसे जीवंत विषय को लेकर प्रकाशित किया जा रहा है। निश्चित रूप से हमारा कैंपस इसे सही मायनों में चरितार्थ करता है। संस्थान का कैंपस विविधताओं से भरा हुआ है। यहां पर अलग-अलग भाषाओं एवं संस्कृति की बयार बहती हुई नजर आती है जो कैंपस जीवन को और भी ज्यादा सुखद एवं जीवंत बनाती है।

संस्थान के बहुमुखी विद्यार्थियों, संकाय सदस्यों एवं कर्मचारियों के निरंतर सहयोग से यह पत्रिका अपनी गुणवत्तापूर्ण रचनाओं के कारण केवल कैंपस में ही नहीं अपितु विश्व भर में लोकप्रिय बनी हुई है एवं बहुत से पाठक इसके नवीनतम अंक का इंतजार करते रहते हैं। मुझे पत्रिका के पाठकों एवं इसके रचनाकारों के साथ यह जानकारी साझा करते हुए अत्यन्त हर्ष की अनुभूति हो रही है कि पत्रिका की लोकप्रियता एवं गुणवत्ता के कारण भारत सरकार के राष्ट्रीय विज्ञान पुस्तकालय (राष्ट्रीय विज्ञान संचार और नीति अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली), द्वारा अभी हाल ही इस पत्रिका को आइएसएसएन नंबर (3107-7757) प्रदान किया गया है। आइएसएसएन नंबर प्राप्त होने के पश्चात निश्चित रूप से इस पत्रिका के स्तर में और भी गुणवत्ता आएगी और पत्रिका के रचनाकारों को भी और गुरुतर आत्मसम्मान की अनुभूति होगी।

इस अंक की शुरुआत हिंदी पखवाड़ा एवं हिंदी दिवस समारोह की रिपोर्ट से है जिसका आयोजन 16 से 30 सितंबर 2025 तक किया गया। रिपोर्ट पढ़ने से आपको जानकारी मिलेगी कि तकनीकी संस्थान होने के बावजूद भी संस्थान के विद्यार्थियों एवं कर्मचारियों में हिंदी भाषा के प्रति कितना अधिक जुड़ाव है। तत्पश्चात नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की दसवीं बैठक का विवरण है। कानपुर में स्थित 32 कार्यालय, इस समिति के सदस्य हैं एवं यह संस्थान अध्यक्षीय कार्यालय है। आदरणीय निदेशक महोदय इस समिति के अध्यक्ष हैं। इस समिति का उद्देश्य राजभाषा के प्रयोग को बढ़ावा देना और राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के मार्ग में आई कठिनाइयों को दूर करने के लिए एक संयुक्त मंच प्रदान करना है। आगे आपको 'अक्षर' साहित्यिक महोत्सव-2025 के बारे में जानने को मिलेगा जिसमें राष्ट्रीय स्तर के कई श्रेष्ठ साहित्यकारों एवं रंगमच कर्मियों ने आकर अपनी प्रस्तुतियां दीं और साहित्य प्रेमियों को अपनी प्रस्तुतियों से साहित्य और कला का रसास्वादन कराया।

आगे साक्षात्कार के हिस्से में आप मिलेंगे श्री अंकुर गर्ग से जिन्होंने इस संस्थान के संगणक विज्ञान एवं अभियांत्रिकी विभाग से स्नातक की उपाधि प्राप्त की तथा इसरो के अंतर्गत तृष्णा एवं जी-20 उपग्रहों जैसे मिशनों पर अनुसंधान कार्य कर रहे हैं। गुरुदक्षिणा में इस बार आपकी मुलाकात होगी डॉ. दीपक नरुला से जिन्होंने सामाजिक परिस्थितियों में धैर्य एवं संतुलन बनाकर जीवन का शिखर प्राप्त किया।

इस बार की साहित्य यात्रा में, पत्रिका के मूल विषय पर समर्पित रचनाओं में प्रोफेसर अमर कुमार बेहेरा की **पहियों पर दोस्तीः कैंपस जीवन के रंगों से रंगी एक अविस्मरणीय दास्तान,** शाहाना सुल्ताना की **कैंपस जीवन के बहुरंगी आयाम,** पंकज चतुर्वेदी का **तुम ही नहीं हो केवल बंधु,** प्रोफेसर देवी प्रसाद मिश्रा की **मानिनी मन रे,** सारंग एस. नांदेडकर की **कैंपस जीवन के बहुरंगी आयामः मोडी देवनागरी लिपि की कर्सिव सिस्टर**, संजय खरा की **मुझे अपने कॉलेज ले चलो यारों**, डॉ ज्योति मिश्रा की **एक हैं छोटे पंडित,** योगेश सिंह की **आईआईटी कानपुर प्रांगणः जीवन आत्मनिर्भरता, अभिव्यक्ति, संघर्ष और सृजन की तपोभूमि,** एकता बब्बर की **तुम्हें है बहुत चलना अभी** आपको निश्चित ही पसंद आएगी। इस बार शुभम बैरागी का तकनीकी लेख **भारत में मानव रहित विमान (ड्रोन) प्रशिक्षण एवं लाइसेंसिगः आवश्यकता, संभावनाएं और आईआईटी कानपुर आरपीटीओ की अग्रणी भूमिका** एक सूचनापरक लेख है। अतिथि रचनाकार में सुरेश तिवारी की रचना **कैंपस बहुरंगी** सामाजिक सेवा और सामुदायिक जुड़ाव पर एक वृहद संदेश देती है।

अंत में आप सभी से अनुरोध है कि आप अपनी आईएसएसएन नंबर प्राप्त 'अंतस' पत्रिका के लिए गुणवत्तापूर्ण रचनाएं एवं लेख भविष्य में भी यूं ही उपलब्ध कराते रहें जिससे आने वाले अंक और भी ज्यादा उत्कृष्ट स्वरूप में प्रकाशित हो सके। अंतस परिवार के सभी सदस्यों को इस अंक के सफल प्रकाशन पर हार्दिक बधाई।

धन्यवाद!

संतोष कुमार मिश्र
मुख्य संपादक

रिपोर्ट

हिंदी दिवस-2025

संविधान सभा ने दिनांक 14 सितंबर 1949 को हिंदी को राजभाषा के रूप में अंगीकार किया और तब से ही इस दिवस की स्मृति में, प्रतिवर्ष 14 सितंबर 'हिंदी दिवस' के रूप में मनाया जाता है। संविधान सभा द्वारा सौंपे गए संवैधानिक और प्रशासनिक उत्तरदायित्वों एवं संविधान की भावना के अनुरूप तथा प्रेरणा, प्रोत्साहन और सद्भावना की नीति के साथ, राजभाषा हिंदी का प्रचार-प्रसार करने तथा इसके प्रयोग को बढ़ाने के निरंतर प्रयास किए जाते हैं।

हिंदी दिवस के अवसर पर भारत सरकार द्वारा 5वें अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का आयोजन गांधीनगर, गुजरात में दिनांक 14-15 सितंबर 2025 को माननीय केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह की अध्यक्षता में किया गया जिसमें इस संस्थान से श्री विजय कुमार पाण्डेय, राजभाषा अधिकारी एवं श्री अरविन्द कुमार सैनी, कनिष्ठ सहायक ने सहभागिता की। इसी क्रम में, संस्थान में दिनांक 14 से 30 सितंबर 2025 के बीच हिंदी दिवस एवं हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया, जिसके अंतर्गत संस्थान के संकाय सदस्यों, कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों तथा विद्यालय स्तर पर विद्यालय के छात्र/छात्राओं के लिए विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इन सभी प्रतियोगिताओं में लगभग 430 विद्यार्थियों, कर्मचारियों एवं स्कूली छात्रों ने भाग लिया। इन प्रतियोगिताओं के विजेता प्रतिभागियों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार से है।

श्रुतलेखन प्रतियोगिता

क्र सं.	नाम	पदनाम	विभाग/अनुभाग	स्थान
1	श्री चौटी शिवानन्द	वरिष्ठ शोधार्थी छात्र	आई.के.एस	प्रथम
2	श्रीमती सिन्धुश्री एस. के.	कनिष्ठ सहायक	आंतरिक अंकेक्षण अनुभाग	द्वितीय
3	श्री विवेक राव वादी	सहायक शारीरिक शिक्षा अधिकारी ग्रेड-2	शारीरिक शिक्षा विभाग	तृतीय
4	सुश्री नीरजा काटकर	वरिष्ठ परियोजना एसोसिएट	संगणक विज्ञान एवं अभियांत्रिकी	सांत्वना

कहानी लेखन (चित्र देखकर) प्रतियोगिता

क्र सं.	नाम	पदनाम	विभाग/अनुभाग	स्थान
1	श्री शुभम बैरागी	परियोजना कार्यपालक अधिकारी	वांतरिक्ष अभियांत्रिकी	प्रथम
2	श्री अभिषेक सरोज	कनिष्ठ सहायक	भर्ती अनुभाग	द्वितीय
3	श्री विजय कुमार	कनिष्ठ सहायक	परिचय पत्र प्रकोष्ठ	द्वितीय
4	सुश्री शाहाना सुल्ताना	वरिष्ठ पुस्तकालय सूचना सहायक	पुस्तकालय	तृतीय
5	श्री सौरभ सिंह	कनिष्ठ सहायक	केंद्रीय भण्डारण एवं क्रय अनुभाग	सांत्वना
6	श्रीमती अकांक्षा सिंह	वरिष्ठ सहायक	बीएसबीई	सांत्वना

हिंदी निबंध लेखन प्रतियोगिता

क्र सं.	नाम	पदनाम	विभाग/अनुभाग	स्थान
1	श्री विकास यादव	कनिष्ठ सहायक	संगणक केंद्र	प्रथम
2	श्री मनोज कुमार वर्मा	अधीक्षक	आंतरिक अंकेक्षण अनुभाग	द्वितीय
3	श्री अनुज कुमार सोनी	कनिष्ठ अधीक्षक	केंद्रीय भण्डारण एवं क्रय अनुभाग	द्वितीय
4	श्री प्रशांत कुमार साहू	अधीक्षक	वांतरिक्ष अभियांत्रिकी	तृतीय
5	सुश्री निधि अग्रवाल	कनिष्ठ सहायक	संस्थान निर्माण विभाग	सांत्वना
6	श्री अनुभव कुमार आर्य	वरिष्ठ सहायक	अधिष्ठाता, शैक्षणिक कार्य	सांत्वना

जीवन के अविस्मरणीय पल (वाक) प्रतियोगिता

क्र सं.	नाम	पदनाम	विभाग/अनुभाग	स्थान
1	श्री सुरेंद्र	वरिष्ठ तकनीशियन	रसायन विभाग	प्रथम
2	श्रीमती आकांक्षा अवस्थी	एसोसिएट काउंसलर	काउंसलिंग सर्विस	द्वितीय
3	प्रो. अमर कुमार बेहेरा	एसोसिएट प्रोफेसर	डिजाइन अनुभाग	तृतीय
4	श्री मनोज कुमार वर्मा	अधीक्षक	आंतरिक अंकेक्षण अनुभाग	तृतीय
5	श्री विकास कुमार	वरिष्ठ सहायक	वांतरिक्ष अभियांत्रिकी	सांत्वना

आशुभाषण प्रतियोगिता

क्र सं.	नाम	पदनाम	विभाग/अनुभाग	स्थान
1	प्रो. अमर कुमार बेहेरा	एसोसिएट प्रोफेसर	डिजाइन अनुभाग	प्रथम
2	श्री गिरीश पंत	विजिटिंग प्रोजेक्ट रिसर्च मैनेजर	संस्थान मीडिया आउटरीच सेंटर	द्वितीय
3	श्री अभिषेक सरोज	कनिष्ठ सहायक	भर्ती अनुभाग	द्वितीय
4	श्रीमती आकाँक्षा अवस्थी	एसोसिएट काउंसलर	काउंसलिंग सर्विस	तृतीय
5	श्री उपेंद्र कुमार पाराशर	वरिष्ठ तकनीकी अधीक्षक	भौतिकी विभाग	सांत्वना

राजभाषा एवं सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता

क्र सं.	नाम	पदनाम	विभाग/अनुभाग	स्थान
1	श्री अनुज कुमार सोनी	कनिष्ठ अधीक्षक	केंद्रीय भण्डारण एवं क्रय अनुभाग	प्रथम
2	श्री मो. नौशाद	अधीक्षक	केंद्रीय भण्डारण एवं क्रय अनुभाग	द्वितीय
3	श्री विकास यादव	कनिष्ठ सहायक	संगणक केंद्र	तृतीय
4	श्री उत्कर्ष सिंह	कनिष्ठ सहायक	अधिष्ठाता, विद्यार्थी कार्य	तृतीय
5	श्री विजय कुमार	कनिष्ठ सहायक	परिचय पत्र प्रकोष्ठ	सांत्वना

दिए गए विषय पर चित्र बनाकर रंग भरो प्रतियोगिता

(कक्षा 1 से 3 के लिए)

क्र सं.	नाम	पिता का नाम	विद्यालय	कक्षा	स्थान
1	आव्या बाजपेई	श्री अशित बाजपेई	कैंपस स्कूल आईआईटी कानपुर	2	प्रथम
2	राशिदा	श्री नवाब अली	अपॉरच्युनटी स्कूल आईआईटी कानपुर	3	द्वितीय
3	धान्या	श्री विजय कुमार	अपॉरच्युनटी स्कूल आईआईटी कानपुर	3	तृतीय
4	सहज शुक्ला	श्री श्याम किशोर	कैंपस स्कूल आईआईटी कानपुर	2	सांत्वना

दिए गए विषय पर हिंदी में 10 वाक्य लिखिए

(कक्षा 4 और 5 के लिए)

क्र सं.	नाम	पिता का नाम	विद्यालय	कक्षा	स्थान
1	वेदांत रंजन	श्री राजेश रंजन	कैंपस स्कूल आईआईटी कानपुर	4	प्रथम
2	आनंद कुमार	श्री बलराम जी	अपॉरच्युनटी स्कूल आईआईटी कानपुर	4	द्वितीय
3	अमन कुशवाहा	श्री वीरेंद्रनाथ	कैंपस स्कूल आईआईटी कानपुर	5	तृतीय
4	केहुल कुमार	श्री राजकुमार श्रीवास्तव	कैंपस स्कूल आईआईटी कानपुर	5	सांत्वना
5	आराध्या दुबे	श्री मुरली दुबे	केंद्रीय विद्यालय आईआईटी कानपुर	5	सांत्वना

दिए गए विषय पर निबंध लेखन प्रतियोगिता

(कक्षा 6 और 8 के लिए शब्द सीमा 200 से 250 शब्द)

क्र सं.	नाम	पिता का नाम	विद्यालय	कक्षा	स्थान
1	खुशी	श्री अशोक सिंह	अपॉरच्युनटी स्कूल आईआईटी कानपुर	8	प्रथम
2	अनन्या	श्री खेमपाल	केन्द्रीय विद्यालय आईआईटी कानपुर	7	द्वितीय
3	मुक्ति श्रीवास्तव	श्री राजकुमार श्रीवास्तव	नर्चर इंटरनेशनल स्कूल कानपुर	8	तृतीय
4	प्रिंसी	श्री राजकुमार	अपॉच्युनिटी स्कूल आईआईटी कानपुर	8	तृतीय
5	अभय प्रताप सिंह	श्री अंजनी कुमार चौधरी	अपॉच्युनिटी स्कूल आईआईटी कानपुर	6	सांत्वना

दिए गए विषय पर स्वरचित कविता लेखन

(कक्षा 9 से 12 के लिए)

क्र सं.	नाम	पिता का नाम	विद्यालय	कक्षा	स्थान
1	अवनीश त्रिवेदी	श्री सुबोध कुमार	डॉ. वीरेंद्र स्वरूप एजुकेशन सेंटर कानपुर	10	प्रथम
2	हर्ष प्रताप यादव	श्री झुन्नी लाल यादव	केंद्रीय विद्यालय आईआईटी कानपुर	11	द्वितीय
3	आदित्य पंत	श्री गिरीश पंत	केंद्रीय विद्यालय आईआईटी कानपुर	11	तृतीय
4	अतरेयी दीक्षित	श्री बसंत लाल शर्मा	केंद्रीय विद्यालय आईआईटी कानपुर	9	सांत्वना

संस्थान के विद्यार्थियों के लिए प्रतियोगिताएं

काव्यांजलि प्रतियोगिता

क्र सं.	नाम	कार्यक्रम	विभाग/अनुभाग	स्थान
1	प्रदीप विश्नोई	बीटेक	वांतरिक्ष अभियांत्रिकी	प्रथम
2	छाया	बीटेक	विद्युत अभियांत्रिकी	द्वितीय
3	समृद्धि केदारी	बीटेक	विद्युत अभियांत्रिकी	तृतीय
4	कुशाग्र शुक्ला	एमबीए	प्रबंधन विज्ञान विभाग	सांत्वना

तर्क प्रतियोगिता

क्र सं.	नाम	कार्यक्रम	विभाग/अनुभाग	स्थान
1	समृद्धि केदारी	बीटेक	विद्युत अभियांत्रिकी	प्रथम
2	विराग राठौड़	बीटेक	संगणक विज्ञान अभियांत्रिकी	द्वितीय
3	करण चौहान	बीटेक	रासायन अभियांत्रिकी	तृतीय
4	अंजली प्रिया	बीएस	गणित सांख्यिकी	सांत्वना

किरदार प्रतियोगिता

क्र सं.	नाम	कार्यक्रम	विभाग/अनुभाग	स्थान
1	ऋषभ प्रताप	बीटेक	जनपद अभियांत्रिकी	प्रथम
2	छाया	बीटेक	विद्युत अभियांत्रिकी	द्वितीय
3	अमृत द्विवेदी	बीटेक	यांत्रिकी अभियांत्रिकी	तृतीय
4	अंतिमा धाकड़	बीटेक	जनपद अभियांत्रिकी	सांत्वना

संसदीय वाद-विवाद प्रतियोगिता

क्र सं.	नाम	कार्यक्रम	विभाग / अनुभाग	स्थान
1	अक्षिता	बीटेक	जनपद अभियांत्रिकी	प्रथम
2	आलोक तेजस	बीटेक	भौतिक अभियांत्रिकी	प्रथम
3	अमृत द्विवेदी	बीटेक	यांत्रिक अभियांत्रिकी	प्रथम
4	अनुज सिंह	बीटेक	जनपद अभियांत्रिकी	प्रथम
5	निहारिका महावर	बीटेक	पदार्थ विज्ञान एवं अभियांत्रिकी	प्रथम
6	समृद्धि केदारी	बीटेक	विद्युत अभियांत्रिकी	प्रथम
7	विराग राठौड़	बीटेक	संगणक विज्ञान अभियांत्रिकी	प्रथम
8	विवेक सिंह	बीटेक	यांत्रिक अभियांत्रिकी	प्रथम
9	यांशिका सिंह	बीटेक	यांत्रिक अभियांत्रिकी	प्रथम
10	प्रदीप विश्नोई	बीटेक	वांतरिक्ष अभियांत्रिकी	द्वितीय
11	वैभव कुमार मौर्य	बीटेक	जनपद अभियांत्रिकी	द्वितीय
12	आस्था यादव	बीटेक	विद्युत अभियांत्रिकी	द्वितीय
13	रक्षा	बीटेक	यांत्रिक अभियांत्रिकी	द्वितीय
14	गौरव स्वर्णकार	बीटेक	विद्युत अभियांत्रिकी	द्वितीय
15	जयपाल	बीटेक	यांत्रिक अभियांत्रिकी	द्वितीय
16	यश सोनी	बीटेक	जनपद अभियांत्रिकी	द्वितीय
17	आशुतोष सिंह	बीटेक	बीएसबीई	द्वितीय
18	अंजलि प्रिया	बीएस	गणित सांख्यिकी	द्वितीय
19	यज्ञेश	बीटेक	जनपद अभियांत्रिकी	द्वितीय
20	अमित कुमार	बीटेक	यांत्रिक अभियांत्रिकी	तृतीय
21	अंतिमा धाकड़	बीटेक	जनपद अभियांत्रिकी	तृतीय
22	आशीष शर्मा	बीटेक	यांत्रिक अभियांत्रिकी	तृतीय
23	छाया	बीटेक	विद्युत अभियांत्रिकी	तृतीय
24	करण चौहान	बीटेक	रासायन अभियांत्रिकी	तृतीय
25	ऋषभ प्रताप	बीटेक	जनपद अभियांत्रिकी	तृतीय
26	रोहन उपाध्याय	बीटेक	रासायन अभियांत्रिकी	तृतीय
27	समीर बरनवाल	बीटेक	रासायन अभियांत्रिकी	तृतीय
28	उज्ज्वल राज	बीटेक	यांत्रिक अभियांत्रिकी	तृतीय

इन सभी प्रतियोगिताओं के समापन के पश्चात दिनांक 30 सितंबर 2025 को भव्य रूप में हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया गया जिसमें अधिष्ठाता प्रशासन, प्रोफेसर कुमार वैभव श्रीवास्तव मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित हुए तथा समस्त विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया। इस अवसर पर संस्थान के अधिकारियों, कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों ने भारी संख्या में पहुंचकर समारोह की गरिमा बढ़ाई।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की दसवीं बैठक का आयोजन

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति कानपुर कार्यालय-3 की दसवीं बैठक का आयोजन समिति के अध्यक्ष एवं संस्थान के उप निदेशक प्रोफेसर ब्रज भूषण की अध्यक्षता में दिनांक 24 अक्टूबर 2025 को संपन्न हुआ। इस बैठक में 23 सदस्य कार्यालयों से कुल 66 विभागाध्यक्ष/वरिष्ठ अधिकारी/सदस्य सचिव आदि ने भाग लिया। यह भी विदित हो कि इसी दिन सदस्य कार्यालयों एवं अध्यक्षीय कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन भी किया गया। इस कार्यशाला में अतिथि वक्ता भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान खड़गपुर के वरिष्ठ हिंदी अधिकारी, डॉ. राजीव कुमार रावत थे तथा यह कार्यशाला दो सत्रों में आयोजित की गई। प्रथम सत्र का विषय 'राजभाषा कार्यान्वयन में कृत्रिम बुद्धिमत्ता एवं कम्प्यूटिंग टूल्स की भूमिका' तथा द्वितीय सत्र का विषय 'राजभाषा वार्षिक लक्ष्यों की प्राप्ति में प्रशासनिक कार्मिकों की भूमिका' था। इस कार्यशाला में सदस्य कार्यालयों तथा इस संस्थान से कुल 65 अधिकारी/कर्मचारी ने भाग लिया। इस कार्यशाला का उद्घाटन समिति के अध्यक्ष प्रोफेसर ब्रज भूषण द्वारा कुलसचिव श्री विश्व रंजन, प्रोफेसर अर्क वर्मा, सदस्य सचिव श्री विजय कुमार पाण्डेय एवं सभी प्रतिभागियों की उपस्थिति में दीप प्रज्वलन एवं हिंदी गीत के साथ किया गया। हिंदी कार्यशाला की समाप्ति के पश्चात कार्यसूची के अनुसार नराकास की दसवीं बैठक का आयोजन किया गया।

समिति के सदस्य सचिव श्री विजय कुमार पाण्डेय ने सभी का हार्दिक स्वागत एवं अभिनंदन किया। तत्पश्चात दिनांक 1 जनवरी 2025 से 30 जून 2025 तक की छमाही रिपोर्ट की समीक्षा की। उन्होंने आगे यह भी जानकारी दी कि राजभाषा नियम 5 के अधीन हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में ही दिया जाना चाहिए। नराकास की पत्रिका 'अभिव्यक्तियां' के लिए आईएसएसएन नंबर के संबंध में सूचित किया कि इससे संबंधित सभी अपेक्षित कार्रवाई पूरी की जा चुकी है। उपस्थित सभी कार्यालय प्रमुखों से यह भी अनुरोध किया कि सभी कार्यालय अपने यहां से कम से कम दो गुणवत्तापूर्ण लेख/रचनाएं उपलब्ध कराएं जिससे इस नराकास की पत्रिका समय पर प्रकाशित हो

सके और इसकी गुणवत्ता भी बनी रहे।

छमाही के दौरान उत्कृष्ट कार्य करने वाले निम्नलिखित कार्यालयों एवं सदस्य कार्यालयों द्वारा आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को अध्यक्ष महोदय द्वारा सम्मानित किया गया।

छमाही के दौरान श्रेष्ठ कार्य निष्पादन हेतु निम्न कार्यालयों को सम्मानित किया गया।

1. क्षेत्रीय कार्यालय कर्मचारी राज्य बीमा निगम कानपुर
2. कम्पनी रजिस्ट्रार कानपुर
3. पावर ग्रिड कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड कानपुर

छमाही के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं एवं उनके विजेताओं के विवरण

क्षेत्रीय कार्यालय कर्मचारी राज्य बीमा निगम, कानपुर द्वारा दिनांक 04.07.2025 को प्रशासनिक शब्दावली एवं अनुवाद प्रतियोगिता

क्र सं.	नाम	कार्यक्रम	विभाग/अनुभाग	स्थान
1	श्रीमती अर्चना सिंह	सामाजिक सुरक्षा अधिकारी	क.रा.बी. चिकित्सालय जाजमऊ कानपुर	प्रथम
2	श्री अनुज कुमार सोनी	कनिष्ठ अधीक्षक	भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर	प्रथम
3	श्री मनोज कुमार वर्मा	अधीक्षक	भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर	द्वितीय
4	श्री सुभाष कुमार झा	सहायक प्रबंधक	ईसीजीसी लिमिटेड कानपुर	तृतीय

एचएएल, कानपुर द्वारा दिनांक 20.08.2025 को सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता

क्र सं.	नाम	कार्यक्रम	विभाग/अनुभाग	स्थान
1	श्री राजेन्द्र विश्वकर्मा	वरिष्ठ सहायक	भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर	प्रथम
2	श्री नीलांबर	सहायक महाप्रबंधक	भारतीय खाद्य निगम, मण्डल कार्यालय कानपुर	द्वितीय
3	श्री गौरव कुमार	कनिष्ठ सचिवालय सहायक	केंद्रीय विद्यालय आईआईटी कानपुर	तृतीय
4	श्री सर्वेश सिंह	प्रबंधक	भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण	चतुर्थ

विश्व हिंदी दिवस-2026

ईसीजीसी, कानपुर द्वारा दिनांक 10.09.2025 राजभाषा ज्ञान एवं अनुवाद प्रतियोगिता

क्र सं.	नाम	कार्यक्रम	विभाग/अनुभाग	स्थान
1	सुश्री रोमा साहू	कनिष्ठ सहायक	भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर	प्रथम
2	श्री नीलांबर	सहायक महाप्रबंधक	भारतीय खाद्य निगम, मण्डल कार्यालय कानपुर	द्वितीय
3	श्रीमती रूपाली बाजपेई	सहायक	क.रा.बी. चिकित्सालय जाजमऊ, कानपुर	तृतीय

अध्यक्षीय संबोधन

समिति के अध्यक्ष एवं इस संस्थान के उप निदेशक प्रोफेसर ब्रज भूषण ने उपस्थित समस्त सदस्यों का स्वागत तथा आभार प्रकट करते हुए कहा कि नराकास की पत्रिका प्रकाशन में सभी सदस्य अपना रचनात्मक योगदान दें और नराकास को उत्कृष्ट नराकास बनाने में अपना सहयोग उपलब्ध कराएं। उन्होंने आगे सभी सदस्य कार्यालयों का दिन भर चली हिंदी कार्यशाला में सहभागिता करने के लिए धन्यवाद ज्ञापित किया और कहा कि आप लोग आज दिन भर व्यस्त रहे। दिन भर व्यस्त रहकर आपने आज की इस कार्यशाला के माध्यम से जो ज्ञानार्जन किया, वह आपके कार्यालयीन कार्यों के लिए बहुत ही उपयोगी सिद्ध होगा। उन्होंने कार्यशाला के वक्ता डॉ. राजीव कुमार रावत का भी धन्यवाद एवं आभार प्रकट किया जिन्होंने दिन भर चली कार्यशाला के दौरान हिंदी संबंधी उपलब्ध टूल्स की जानकारी प्रतिभागियों के साथ साझा की। अंत में सदस्य सचिव श्री विजय कुमार पाण्डेय, राजभाषा अधिकारी द्वारा सभी को धन्यवाद ज्ञापित किया गया। तत्पश्चात राष्ट्रगान के साथ बैठक की कार्यवाही संपन्न हुई।

संस्थान राजभाषा प्रकोष्ठ, शिवानी केंद्र एवं छात्र हिंदी साहित्य सभा के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक 10 जनवरी 2026 को विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर 'ओपेन माइक' कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसके अधीन प्रोफेसर भारत लोहनी, प्रोफेसर अंकुश शर्मा एवं विभिन्न छात्रों तथा कर्मचारियों ने अपनी रचनाओं का काव्यपाठ किया। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि, संस्थान के उप निदेशक प्रोफेसर ब्रज भूषण एवं विशिष्ट अतिथि कुलसचिव श्री विश्व रंजन थे।

इसी श्रृंखला में दिनांक 17 जनवरी 2026 को राजभाषा प्रकोष्ठ, शिवानी केंद्र एवं छात्र हिंदी साहित्य सभा के संयुक्त तत्वावधान में विश्व हिंदी दिवस के अंतर्गत स्व. विनोद कुमार शुक्ल की पुण्य स्मृति में व्याख्यान एवं 'पुष्पांजलि' कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें नरेश सक्सेना, कुमार अंबुज, पंकज चतुर्वेदी, व्योमेश शुक्ल, कविता कादम्बरी एवं विहाग वैभव ने भाग लिया तथा संचालन विश्वनाथ 'विश्व' ने किया। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि उप निदेशक, प्रोफेसर ब्रज भूषण ने अपने संबोधन में कहा कि राजभाषा प्रकोष्ठ एवं शिवानी केंद्र दोनों मिलकर संस्थान में राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु अच्छा एवं सराहनीय कार्य कर रहे है और यह कार्य संस्थान में प्रत्यक्ष रूप से दिखाई भी दे रहा है। इस अवसर पर सभी ने इस कार्यक्रम की भूरि-भूरि प्रशंसा की। प्रोफेसर अर्क वर्मा द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

अक्षर साहित्यिक महोत्सव-2025

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर के शिवानी केन्द्र, राजभाषा प्रकोष्ठ, अंतराग्नि, छात्र हिंदी साहित्य सभा एवं गाथा के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक 9 से 11 अक्टूबर 2025 तक तीन दिवसीय भव्य साहित्यिक महोत्सव 'अक्षर-2025' का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया। इस महोत्सव का उद्देश्य भारतीय साहित्य, संगीत, नृत्य एवं रंगमंच कला की विविध विधाओं को एक साझा मंच प्रदान करना तथा विद्यार्थियों एवं साहित्य प्रेमियों को भारतीय सांस्कृतिक धरोहर से जोड़ना रहा।

कार्यक्रम का शुभारंभ दिनांक 9 अक्टूबर 2025 को अपराहन 2:30 बजे इस संस्थान के आउटरीच ऑडिटोरियम में 'अंतराग्नि-2025' एवं 'अक्षर-2025' के संयुक्त उद्घाटन सत्र के साथ हुआ। समारोह के उद्घाटन अवसर पर संस्थान के कार्यवाहक निदेशक प्रोफेसर जितेन्द्र कुमार बेहेरा, अधिष्ठाता विद्यार्थी कार्य, प्रोफेसर प्रतीक सेन, शिवानी केन्द्र के मुख्य समन्वयक, प्रोफेसर कांतेश बालानी, शिवानी केन्द्र के सह-समन्वयक प्रोफेसर अर्क वर्मा एवं प्रभारी प्रोफेसर राजभाषा प्रकोष्ठ, प्रोफेसर संतोष कुमार मिश्र उपस्थित रहे। इस अवसर पर कार्यवाहक निदेशक प्रोफेसर बेहेरा ने कहा कि 'अक्षर' हो या फिर 'अंतराग्नि' इस तरह के कार्यक्रमों से परिसरवासियों को विविध क्षेत्रों से कार्यक्रम में प्रस्तुति देने वाले कलाकारों, रंगमंच कर्मियों, साहित्यकारों एवं फिल्म तथा पत्रकारिता से जुड़े लब्धप्रतिष्ठित व्यक्तियों से जुड़ने एवं उन्हें समझने का अवसर प्राप्त होता है। प्रोफेसर संतोष कुमार मिश्र ने भाषा और संस्कृति के मिश्रण के बारे में बताया और सभी से 'अक्षर' एवं 'अंतराग्नि' से जुड़ने का आह्वान किया। इस अवसर पर तीन दिवसीय पुस्तक मेले का आयोजन भी किया गया जिसमें देश भर के प्रतिष्ठित प्रकाशकों जैसे राजकमल, वाणी, अमरचित्र कथा, निखिल प्रकाशन आदि ने भाग लिया। इस पुस्तक मेले का उद्घाटन प्रोफेसर मनोज कुमार हरबोला ने किया। 'अक्षर' के तहत आयोजित विभिन्न साहित्यिक कार्यक्रमों में परिसरवासियों ने उत्साहपूर्वक भारी संख्या में भागीदारी की तथा साहित्यिक रस का भरपूर लुत्फ उठाया ।

उद्घाटन के पश्चात प्रसिद्ध कवि व्योमेश शुक्ल द्वारा 'प्रेमचंद और बनारस' विषय पर रोचक व्याख्यान प्रस्तुत किया गया, जिसने श्रोताओं को साहित्यिक संवेदनाओं से सराबोर कर दिया। शाम को 'स्वर संध्या' में मोहम्मद वकील एवं समूह ने शास्त्रीय संगीत की अनूठी प्रस्तुति दी। इसके बाद उत्तर प्रदेश के लोकगीत कार्यक्रम में सिद्धार्थ सिंह एवं समूह ने पारंपरिक लोकधुनों से वातावरण को जीवंत कर दिया। तत्पश्चात, लखनऊ से पधारे हिमांशु बाजपेयी एवं प्रज्ञा शर्मा द्वारा प्रस्तुत शानदार दास्तानगोई 'दास्तान-ए-कैफी आज़मी' ने लोगों को मंत्रमुग्ध कर दिया। इस दौरान उन्होंने कैफी जी के प्रेम एवं विवाह से संबंधित प्रसंग का वर्णन किया। इसी के साथ अक्षर प्रथम दिवस का समापन हुआ।

दूसरे दिन दिनांक 10 अक्टूबर 2025 को साहित्यिक महोत्सव अक्षर-2025 की शुरुआत 'ओपन माइक-उभरते सितारे' के साथ हुआ। इसके बाद दिवस के दूसरे आयोजन 'बच्चों का कोना' में संस्थान में कार्यरत कार्मिकों के बच्चों ने अपनी प्रस्तुतियां दीं। तत्पश्चात अमृता भूषण जो कुशल कथक नृत्यांगना हैं ने अपने विद्यार्थियों के साथ कथक नृत्य की प्रस्तुति दी और उत्तर प्रदेश की लोक कला के रंग बिखेरे। इसके उपरांत वाराणसी से आए साहित्यकार व्योमेश शुक्ला ने रूपवाणी समूह के साथ जयशंकर प्रसाद की के प्रसिद्ध महाकाव्य 'कामायनी' का नाट्य रूपांतरण प्रस्तुत किया। नाट्य रूपांतरण इतना सजीव और आनंददायक था कि इसे देखने लिए दर्शकों को ऑडिटोरियम में बैठने के लिए जगह नहीं मिल रही थी और सैकडों की संख्या में दर्शकों ने खड़े होकर इस कार्यक्रम का आनंद लिया और खूब तालियां बजाईं। अगली प्रस्तुति में कोलकाता पश्चिम बंगाल से प्रसिद्ध गायिका ईशा चक्रवर्ती और उनके साथियों ने अपनी शास्त्रीय प्रस्तुति से सभी का मन मोहा। दिवस के अंतिम आयोजन में दिल्ली से आए सूफी गायक युसूफ खान निजामी ने सूफी गायन की प्रस्तुति से पूरे सभागार में अद्भुत सम्मोहन की छटा बिखेरी। दर्शकों से भरे सभागार में सभी ने भरपूर आनंद लिया।

तीसरे दिन दिनांक 11 अक्टूबर को शैक्षणिक और बौद्धिक सत्रों का आयोजन हुआ। प्रातः 11 बजे 'कल्पना से करुणा तक : साहित्य और कला के माध्यम से मानवीय संवेदनाओं की खोज' विषय पर इस संस्थान के मनोचिकित्सक डॉ. आलोक बाजपेयी, कहकशां के संस्थापक आनंद कक्कड़ और डॉ. मधु सहगल ने विचार साझा किए। इसके उपरांत 'यथार्थ या मनोरंजन : आज के दौर में सिनेमा के प्रयोजन' विषय पर परिचर्चा आयोजित की गई जिसमें अभिनेता सहर्ष शुक्ला, पंचायत वेब सीरीज के बनराकस दुर्गेश कुमार एवं प्रसिद्ध लेखिका भावना मिश्रा ने भाग लिया। परिचर्चा के दौरान सहर्ष शुक्ला ने कहा कि सिनेमा समाज से

बनता है और समाज सिनेमा से। वहीं दुर्गेश कुमार ने कहा कि जीवन में तीन चीजें हैं ज्ञान का संकलन और फिर अभ्यास और अथक अभ्यास के बाद जीवन में चमत्कार होता है। इस सत्र का संचालन भावना मिश्रा ने किया।

दिवस के अंतिम आयोजन में ओपन एयर थिएटर में कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। कवि सम्मेलन की अध्यक्षता नरेश सक्सेना ने की। लखनऊ से आए लोकेश त्रिपाठी ने पढ़ा 'सुनो अब राम भी मिल जाएं शायद, कई रावण दिखे मुझको मुझी में।'

प्रयागराज के कवि और नागरी प्रचारिणी सभा के अध्यक्ष व्योमेश शुक्ला ने कहा, 'तुम हो कि मुकदमा लिखा देती हो।' मशहूर शायर अजहर इकबाल ने कहा कि 'दया अगर लिखने बैठूं तो होते हैं अनुवादित राम, रावण को भी नमन किया ऐसे थे मर्यादित राम।'

लखनऊ से आए और आयोजन के अध्यक्ष नरेश सक्सेना ने प्रसिद्ध कविता 'मछलियां और पानी' पढ़कर श्रोताओं को ताली बजाने पर मजबूर किया।

कवयित्री सान्या राय ने सुनाया, 'आपके हक की आजादी मेरे हक का अवसाद वो अंतिम संवाद, और पग से ही पहिया धंसा दिया पाताल में।' संचालन कर रहे एकाग्र शर्मा ने सुनाया कि 'भिखारी बोला अपना एक रुपया संभालो, भीख देने की औकात नहीं है तो ऐसे शौक मत पालो।'

उन्नाव से आए कवि विश्वनाथ 'विश्व' ने सुनाया कि 'देश को जगाने हेतु, भारत बचाने हेतु गाती रही कविता।'

सभी ने इस महाकवि सम्मेलन को बहुत सराहा एवं इस साहित्यिक रस का आनंद लिया। अंत में प्रोफेसर अर्क वर्मा ने सभी कवियों को सम्मानित किया एवं सादर धन्यवाद ज्ञापित किया साथ ही अक्षर-2025 के सफल आयोजन हेतु सभी का आभार प्रकट किया, एवं अगले वर्ष फिर से मिलने का वादा किया।

श्री अंकुर गर्ग

समाज एवं देश निर्माण में अनेक लोगों की मेहनत एवं परिश्रम लगा होता है तथा यह हम नागरिकों से ही मिलकर होता है। आज भारत को विकसित भारत बनाने में अनेकों लोग अपने-अपने क्षेत्रों में सर्वश्रेष्ठ योगदान दे रहे हैं जिसमें संस्थान के कुछ पूर्व छात्र भी शामिल हैं, जो कि उच्च पदों पर आसीन हैं एवं इस देश को नए शिखर पर ले जाने हेतु संकल्पित हैं। संस्थान से निकले ऐसे अनेकों पूर्व छात्रों की एक लंबी श्रृंखला रही है जो भारत को विकसित भारत बनाने की दिशा में चल रही अनेकों परियोजनाओं से जुड़कर देश के इस सपने को साकार करने का कार्य कर रहे हैं। 'अंतस' पत्रिका के 29 वें अंक के माध्यम से हम ऐसे ही एक पूर्व छात्र श्री अंकुर गर्ग से आपका परिचय करा रहे हैं जो इसरो संगठन से जुड़कर भारत के इस सपने को साकार करने का कार्य रहे हैं। आइए जानते हैं श्री अंकुर गर्ग जी की भावी परियोजनाओं एवं उनके लक्ष्यों के बारे में...

अंतस परिवारः कृपया हमें अपने प्रारंभिक बचपन के बारे में बताएं और कैसे आपकी यात्रा अंततः आपको आईआईटी कानपुर ले आई।

अंकुर गर्गः मेरा जन्म 25 फरवरी 1992 को मध्य प्रदेश के जबलपुर में हुआ था। मेरी संपूर्ण स्कूली शिक्षा सीबीएसई स्कूल महर्षि विद्या मंदिर, जबलपुर से संपन्न हुई। इन वर्षों ने मेरे लिए एक मजबूत शैक्षणिक नींव रखने का काम किया और विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी में मेरी रुचि को भी आकार दिया।

स्कूल के बाद, मैंने जबलपुर इंजीनियरिंग कॉलेज से कंप्यूटर विज्ञान और इंजीनियरिंग में स्नातक की उपाधि वर्ष 2013 में प्राप्त की। अपने स्नातक वर्षों के दौरान, मेरा रुझान तकनीकी समझ और अनुसंधान-उन्मुख वातावरण के प्रति पैदा हुआ जिसने मुझे गेट परीक्षा के लिए गंभीरता से तैयारी करने के लिए प्रेरित किया।

मैं 2013 में गेट परीक्षा में शामिल हुआ तथा एक अच्छी रैंक प्राप्त की और बाद में आईआईटी कानपुर में लिखित परीक्षा और साक्षात्कार प्रक्रिया से गुजरा। उल्लिखित परीक्षाएं उत्तीर्ण करने के बाद, वर्ष 2013 में मैंने आईआईटी कानपुर में प्रवेश लिया जो मेरी शैक्षणिक और व्यावसायिक यात्रा में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर साबित हुआ।

अंतस परिवारः इसरो से जुड़ने संबंधी आपके निर्णय को किसने प्रभावित किया? क्या आपने किसी अन्य करियर पथ पर विचार किया और क्या आपका इसरो या वैज्ञानिक अनुसंधान की ओर झुकाव शुरु से ही था या फिर आपके इंजीनियरिंग वर्षों के दौरान विकसित हुआ?

अंकुर गर्गः बचपन से, मैं हमेशा रात्रि के आकाश से मंत्रमुग्ध रहता था। मैं तारों को देखता था और सोचता था कि वे कैसे बने और उनसे परे क्या है। यह जिज्ञासा मेरे साथ रही, लेकिन यह मेरे इंजीनियरिंग वर्षों के दौरान बहुत मजबूत हो गई। उस समय चंद्रयान, मंगलयान, आईआरएनएसएस और विभिन्न रॉकेट लॉन्च जैसे प्रमुख भारतीय अंतरिक्ष मिशनों के मीडिया कवरेज ने मुझे गंभीरता से प्रेरित किया। इन उपलब्धियों ने मुझे अंतरिक्ष विज्ञान में कार्य करने और ऐसे मिशनों में योगदान देने के बारे में स्वप्न दिखाया।

शैक्षणिक रूप से, मैं एक ऐसे रास्ते पर था जो आमतौर पर सॉफ्टवेयर विकास करियर की ओर जाता है। आईआईटी कानपुर से कंप्यूटर विज्ञान में स्नातक होने के पश्चात मेरे लिए सबसे सामान्य विकल्प एक सॉफ्टवेयर इंजीनियर के रूप में एक बड़ी बहुराष्ट्रीय कंपनी में शामिल होना था। हालांकि, अंतरिक्ष में मेरी बढ़ती रुचि ने मुझे एक अलग दिशा में जाने के लिए प्रेरित किया।

मैंने इसरो भर्ती परीक्षा में सम्मिलित होने का फैसला किया और अखिल भारतीय रैंक में प्रथम स्थान प्राप्त किया। उस सफलता ने मुझे अपने जुनून का अनुसरण करने के लिए आत्मविश्वास दिया और प्रेरित किया। मैं अंततः अंतरिक्ष अनुप्रयोग केंद्र (इसरो) में शामिल हो गया। पीछे मुड़कर देखने पर, बचपन की जिज्ञासा और मेरे इंजीनियरिंग वर्षों के दौरान मिली प्रेरणा के संयोजन ने मुझे इसरो में शामिल होने के मेरे निर्णय को आकार देने में एक प्रमुख भूमिका निभाई।

अंतस परिवारः किन अनुभवों या मार्गदर्शकों ने आपके करियर पथ को प्रभावित किया?

अंकुर गर्गः मेरे करियर पथ पर सबसे बड़ा प्रभाव उस उत्कृष्ट कार्य से आया जो इसरो मेरे प्रारंभिक वर्षों के दौरान कर रहा था। चंद्रयान और मंगलयान जैसे मिशनों और उनके आस-पास के

मजबूत मीडिया कवरेज ने मुझ पर गहरी छाप छोड़ी। भारत को ऐसे मील के पत्थर हासिल करते देखकर मेरे अंदर गर्व और जिज्ञासा की भावना पैदा हुई जिसने धीरे-धीरे अंतरिक्ष विज्ञान और प्रौद्योगिकी में योगदान करने की मेरी इच्छा को आकार दिया।

इन अनुभवों ने मुझमें एक दीर्घकालिक प्रेरणा पैदा की और अंततः मुझे इस क्षेत्र को अपने करियर पथ के रूप में चुनने के लिए प्रेरित किया।

अंतस परिवारः क्या आपके पास अपने आईआईटी कानपुर दिनों की कोई अच्छी यादें हैं?

अंकुर गर्गः मेरे पास आईआईटी कानपुर में अपने दिनों की कई अच्छी यादें हैं। हॉल-7 में जीवन , कैंटीन, मेस, एमटी एवं दोस्तों और वरिष्ठों के साथ रोजमर्रा की दिनचर्या/वार्तालाप ने मेरी जीवन यात्रा को खास बनाया। संस्थान का परिसर सुंदर और शांतिपूर्ण है, चारों तरफ खुली जगहें हैं जहां प्रेरणादायी वातावरण बनाने वाले पक्षियों की लगातार चहचहाहट सुनी जा सकती है।

मुझे प्रो. हरीश कार्निक, प्रो. मणीन्द्र अग्रवाल, प्रो. सुमित गांगुली, प्रो. धीरज संघी, प्रो. सुरेंद्र बसवाना, प्रो. संजीव सक्सेना और प्रो. अनिल सेठ सहित कई प्रतिभावान प्रोफेसरों से सीखने का सौभाग्य मिला। मैं उनकी शिक्षा का हमेशा स्मरण करता हूं। शैक्षणिक वातावरण, सहकर्मियों के साथ संवाद एवं उनके मार्गदर्शन ने मेरी सोच को आकार देने में प्रमुख भूमिका निभाई।

आईआईटी कानपुर के उन दिनों ने मुझे एक्सपोज़र, आत्मविश्वास और अनुभव दिए जो मैं आज भी अपने व्यावसायिक करियर में प्राप्त करना जारी रखता हूं।

अंतस परिवारः आपने ओशनसैट–3, कार्टोसैट-2 एस, रिसोर्ससैट, ईओएस-08 और माइक्रोसैट/नैनोसैट श्रृंखला जैसे प्रमुख मिशनों में योगदान दिया है। सबसे चुनौतीपूर्ण परियोजना क्या थी?

अंकुर गर्गः मेरे लिए, सबसे चुनौतीपूर्ण परियोजना ओशनसैट-3

थी। यह मिशन समुद्र की विशेषताओं का अध्ययन करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, विशेष रूप से क्लोरोफिल एकाग्रता प्राप्त करने में, जो संभावित मछली क्षेत्रों का पता लगाने के लिए एक प्रॉक्सी के रूप में कार्य करता है। ये परामर्श पूरे भारत में मछुआरों के साथ साझा किए जाते हैं जो सीधे उनकी आजीविका की सहायता करते हैं। इस सामाजिक प्रभाव के कारण जिम्मेदारी और भी अधिक महसूस हुई।

ओशनसैट-3 आधारित सेंसर, महासागर के रंगों के अध्ययन के लिए विश्व के सर्वश्रेष्ठ सेंसरों में से एक है। यह कम लागत वाले स्वदेशी हार्डवेयर, एक अद्वितीय डेटा अधिग्रहण योजना और कई उन्नत सॉफ्टवेयर एल्गोरिदम का उपयोग करता है। मैंने इस मिशन के लिए एंड-टू-एंड प्रोसेसिंग पाइपलाइन विकसित करने के लिए एक अगुवा के रूप में कार्य किया। प्रारंभ में, कई लोगों ने महसूस किया कि सिस्टम की जटिलता, इसके निष्पादन को सीमित कर सकती है। लेकिन इसरो की मजबूत समीक्षा प्रणाली, कठिन परीक्षण और निरंतर शोधन हर चुनौती को दूर करने में सक्षम साबित हुई।

जब उपग्रह को अंततः लॉन्च किया गया और डेटा आने लगा तो सब कुछ बिल्कुल योजना के अनुसार हुआ। आज भी, ओशनसैट-3 उत्कृष्ट गुणवत्ता वाले डेटा प्रदान करता है और देश भर के मछुआरे अपनी आजीविका के लिए इस मिशन का उपयोग करके प्रदत्त परामर्श से लाभान्वित होते हैं।

अंतस परिवारः एआई ने उपग्रह डेटा को संशोधित करने और इसकी व्याख्या को आसान बनाने में कैसे मदद की है और क्या आप इसे उन पाठकों के लिए सरल शब्दों में समझा सकते हैं जो विषय से परिचित नहीं हैं?

अंकुर गर्गः आज अंतरिक्ष में पृथ्वी का प्रेक्षण करने वाले हजारों उपग्रहों के साथ जो डेटा वापस भेजा जाता है उसका परीक्षण करना व्यक्ति के लिए बहुत कठिन कार्य होता है और यहीं पर एआई एक गेम-चेंजर बन गया है। एआई मॉडल डेटा में त्रुटियों को स्वचालित रूप से पता लगा सकते हैं और सही कर सकते हैं,

मिनटों के भीतर जानकारी की विशाल मात्रा को संसाधित कर सकते हैं, और यहां तक कि एक प्रशिक्षित विश्लेषक की तरह पैटर्न की व्याख्या भी कर सकते हैं। डीप लर्निंग, एलएलएमएस और एजेंटिक एआई सिस्टम के उद्भव के साथ, उपग्रह डेटा प्रोसेसिंग तेज, अधिक सटीक और लगभग पूरी तरह से स्वचालित हो गया है। यह, यहां तक कि वास्तविक समय में भी वैज्ञानिकों और एजेंसियों को मौसम अलर्ट, महासागर की जानकारी या फसल गुणवत्ता जैसी उपयोगी अंतर्दृष्टि प्रदान करने के लिए उपयोग किया जा सकता है।

अंतस परिवारः आप वर्तमान में तृष्णा (इंडो–फ्रेंच मिशन), जी20 उपग्रह और रिसोर्ससैट-3एस स्टीरियो मिशन जैसे मिशनों के लिए एल्गोरिदम विकास का नेतृत्व करते हैं। क्या आप हमें इन परियोजनाओं और अपनी भूमिका के बारे में थोड़ा बता सकते हैं?

अंकुर गर्गः मैं वर्तमान में तीन महत्वपूर्ण आगामी परियोजनाओं में शामिल हूं जिनमें से प्रत्येक का एक अद्वितीय वैश्विक उद्देश्य है।

तृष्णा इसरो और सीएनईएस (फ्रांस) के बीच एक सहयोगी मिशन है। इसका मुख्य उद्देश्य पानी के दबाव का अध्ययन करना है जिसका अर्थ है कि पौधे कितनी मात्रा में पानी की कमी महसूस कर रहे हैं और वे इसका उपयोग कितनी कुशलता से कर रहे हैं। सरल शब्दों में पानी का दबाव हमें बताता है कि क्या फसलें, जंगल या प्राकृतिक वनस्पति पर्याप्त पानी प्राप्त कर रही हैं या कमी का सामना कर रही हैं। तृष्णा दुनिया में अपनी तरह का पहला मिशन है और इसका डेटा कृषि, सूखा निगरानी, जलवायु अध्ययन और सतत जल प्रबंधन में सहायता करेगा।

जी20 उपग्रह भारत सरकार द्वारा परिकल्पित और इसरो द्वारा कार्यान्वित एक और अद्वितीय मिशन है। इसका उद्देश्य दुनिया भर में जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण के स्तर, वन अग्नि और पर्यावरणीय प्रभावों का अध्ययन करना है। यह सभी जी20 देशों के बीच एक सहयोगात्मक प्रयास है जिसमें भारत उपग्रह मंच, पेलोड और लॉन्च वाहन प्रदान करके केंद्रीय भूमिका निभा रहा है। यह मिशन पृथ्वी के स्वास्थ्य की निगरानी के लिए एक साझा वैश्विक प्रणाली बनाएगा।

रिसोर्ससैट-3एस स्टीरियो मिशन, पृथ्वी के उच्च-रिज़ॉल्यूशन 3डी मानचित्रों को उत्पन्न करने पर केंद्रित है। इससे यह पता लगाने में मदद मिलेगी कि मानव गतिविधियों, भूकंप, भूस्खलन और अन्य प्राकृतिक प्रक्रियाओं के कारण समय के साथ क्षेत्र की ऊंचाई कैसे बदलती है। ये 3डी डेटासेट शहरी नियोजन, जल विज्ञान, बाढ़ मॉडलिंग, बुनियादी ढांचे के विकास और आपदा

प्रबंधन के लिए बेहद मूल्यवान होंगे।

मैंने इन सभी परियोजनाओं में एल्गोरिदम और प्रसंस्करण पाइपलाइनों से संबंधित अनुसंधान कार्यों का नेतृत्व किया जिनके माध्यम से अपरिष्कृत उपग्रह डेटा को उपयोग योग्य और कार्रवाई योग्य उत्पादों में परिवर्तित किया जाता है।

अंतस परिवारः आपको हाल ही में विज्ञान युवा शांति स्वरूप भटनागर पुरस्कार 2025 प्राप्त हुआ है। जब आपको यह पुरस्कार मिला तो आपको कैसा लगा?

अंकुर गर्गः मुझे वास्तव में अत्यन्त हर्ष की अनुभूति हुई। मेरे लिए इसको शब्दों में व्यक्त करना मुश्किल है। मैं इस सम्मान को अपने माता-पिता, दादा-दादी, मार्गदर्शकों, वरिष्ठों, सभी शुभचिंतकों का आशीर्वाद मानता हूं, जिन्होंने मेरी यात्रा के दौरान मेरा मार्गदर्शन और समर्थन किया है। इस सभी में मेरी पत्नी ने निरंतर सहायता की है। राष्ट्रीय स्तर पर मेरे कार्य को मान्यता प्रदान किया जाना मेरे लिए वास्तव में गर्व की बात है। यह एक सम्मान और प्रेरणा दोनों है जो मुझे विज्ञान और भविष्य के राष्ट्रीय मिशनों में और भी अधिक सार्थक योगदान करने के लिए प्रोत्साहित करता है।

अंतस परिवारः कई छात्र इसरो में कार्य करने का स्वप्न देखते हैं। आप उन युवा शोधकर्ताओं को क्या सलाह देंगे जो अंतरिक्ष विज्ञान, डेटा प्रोसेसिंग, या एआई से संबंधित क्षेत्रों में अपना करियर बनाना चाहते हैं?

अंकुर गर्गः मैं छात्रों को उत्सुक रहने, नई तकनीकों को सीखने और अंतरिक्ष विज्ञान एवं एआई में हो रहे रोमांचक नवाचारों का अनुसरण करने के लिए प्रोत्साहित करूंगा। वैश्विक अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था तेजी से बढ़ रही है, और भारत एक प्रमुख हितधारक के रूप में उभर रहा है। नई भारतीय अंतरिक्ष नीति के साथ, अंतरिक्ष क्षेत्र ने निजी कंपनियों और स्टार्टअप के लिए बड़े पैमाने पर इसे खोला है। आज भारत में 200 से अधिक युवा अंतरिक्ष स्टार्टअप पहले ही आ चुके हैं, जो उपग्रहों और रॉकेटों से लेकर एआई आधारित एनालिटिक्स और डेटा प्रोसेसिंग तक सब कुछ पर कार्य कर रहे हैं।

मेरी सलाह सक्रिय रूप से यह पता लगाने की है कि दुनिया भर में क्या हो रहा है। वास्तविक समस्याओं को हल करने के लिए अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी, एआई, डेटा विज्ञान और यहां तक कि क्वांटम कंप्यूटिंग का उपयोग कैसे किया जा रहा है। उन चुनौतियों को देखें, रचनात्मक रूप से सोचें, और अपने आप से पूछें कि आप इन तकनीकों का उपयोग करके किन नई समस्याओं को हल कर सकते हैं।

चाहे कोई इसरो में शामिल हो या स्टार्टअप का निर्माण करे; सभी का लक्ष्य वैश्विक अंतरिक्ष क्षेत्र में भारत के नेतृत्व में नवाचार और योगदान करना होना चाहिए। इस क्षेत्र में अनुसंधान कार्य करने का यह एक बेहतरीन एवं उपयुक्त समय है और युवा शोधकर्ता इसके भविष्य को आकार देने में एक प्रमुख भूमिका निभा सकते हैं।

अंतस परिवारः आपके अनुसार अपनी कड़ी मेहनत के अलावा, इतनी कम उम्र में आपकी उपलब्धि में किसने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई?

अंकुर गर्गः मेरे माता-पिता और दादा-दादी बचपन से ही मेरी ताकत का सबसे बड़ा स्रोत रहे हैं। मेरी पत्नी का निरंतर समर्थन और मेरे मार्गदर्शकों, वरिष्ठों और शुभचिंतकों के मार्गदर्शन ने मुझे हर स्तर पर प्रेरित एवं प्रोत्साहित करने का कार्य किया।

मैं इसरो और अंतरिक्ष अनुप्रयोग की कार्यप्रणाली तथा परिवेश को भी श्रेय दूंगा जो अंतरिक्ष विज्ञान और प्रौद्योगिकी में सीखने, सहयोग और बहु-विषयक कार्यों के संपर्क के लिए एक अद्वितीय वातावरण प्रदान करता है। इन सभी ने मेरी अनुसंधान समझ एवं अनुभव दोनों को संवर्धित करने का कार्य किया।

अंतस परिवारः आप अपना खाली समय कैसे बिताना पसंद करते हैं?

अंकुर गर्गः मैं अपने खाली समय में, दुनिया भर से अंतरिक्ष विज्ञान में हो रहे नवीनतम अनुसंधान कार्यों को पढ़ने और उनको खोजने का आनंद लेता हूं। मुझे यात्रा भी पसंद है और जब भी मुझे अवकाश मिलता है तो मैं नए स्थानों पर जाने और कुछ अलग अनुभव करने की कोशिश करता हूं।

अंतस परिवारः धन्यवाद...

गुरु दक्षिणा

डॉ. दीपक नरुला

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर का अपने पूर्व छात्रों के साथ सदैव अटूट संबंध रहा है। संस्थान अपने छात्रों के भविष्य को संवारने और निखारने के लिए सतत रुप से प्रयत्नशील रहता है तथा उनके व्यावसायिक जीवन के विकास में सहभागी बनकर स्वयं को गौरवान्वित महसूस करता है। संस्थान के पूर्व छात्र, पूरी दुनिया में अपनी प्रतिभा का लोहा मनवा रहे हैं और साथ ही अपनी मातृ संस्था एवं समाज के प्रति अपने दायित्वों का सफलतापूर्वक निर्वहन भी कर रहे हैं। पूर्व छात्र संस्थान की बेहतरी के लिए समय-समय पर अपना शैक्षणिक, बौद्धिक एवं आर्थिक सहयोग प्रदान करने में भी कभी पीछे नहीं रहे हैं।

संस्थान की गृह पत्रिका 'अंतस' के इस 29वें अंक में 'गुरु दक्षिणा' शीर्षक के अंतर्गत हम संस्थान के पूर्व मेधावी छात्र एवं मेटा कैपिटल्स के अध्यक्ष डॉ दीपक नरुला जी से मिलते हैं। आइए जानते हैं डॉ दीपक नरुला जी से जुड़े हुए कुछ अनुभवों, यादों, सफलताओं एवं उपलब्धियों के बारे में!

अंतस परिवारः हमें अपने बचपन के शुरुआती दिनों के बारे में बताइए और यह भी साझा कीजिए कि आपकी यात्रा आपको अंततः भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर तक कैसे लेकर आई?

डॉ. दीपक नरुलाः मेरे पिताजी भारत सरकार के डाक विभाग में कार्यरत थे। मेरा जन्म दिल्ली में हुआ और मैं लगभग दस वर्ष तक वहीं रहा। भारत सरकार की ओर से दूसरे देशों में डाक व तार व्यवस्था में सुधार हेतु मेरे पिताजी मिस्र गए, जहां एक वर्ष तक मेरी स्कूली शिक्षा हुई। इस दौरान, दस वर्ष की आयु में ही मैंने अच्छी अरबी सीख ली। तत्पश्चात वहां से हम अफगानिस्तान चले गए तथा ग्यारह से सोलह वर्ष की आयु तक मैंने काबुल में रहकर शिक्षा ग्रहण की। वहां एक हिंदुस्तानी स्कूल में पांच वर्षों तक पढ़ाई की, जो मेरे जीवन के अत्यंत निर्णायक वर्ष साबित हुए।

मुझे बारहवीं कक्षा की सीबीएसई बोर्ड परीक्षा में गणित विषय में 100 में से 100 अंक प्राप्त हुए तथा गणित ओलंपियाड में भी पदक मिला। वास्तव में, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान में आने का तो कभी सोचा ही नहीं था किंतु पिताजी के कहने पर मैंने भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान की प्रवेश परीक्षा दी। यद्यपि भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान की परीक्षा बहुत कठिन थी लेकिन गणित में अच्छे प्रदर्शन के कारण मुझे प्रवेश मिल गया और यह

गणित विषय में हाई स्कूल में प्राप्त प्रशिक्षण के कारण संभव हो पाया।

अंतस परिवारः भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर में आपके दिन कैसे रहे? कृपया हमारे साथ कोई यादगार अनुभव या घटना साझा करें।

डॉ. दीपक नरुलाः अभियांत्रिकी की तरफ मेरा रुझान नहीं था। मेरी योजना अर्थशास्त्र पढ़ने की थी यहां तक कि मैंने दिल्ली के सेंट स्टीफेंस महाविद्यालय में प्रवेश भी ले लिया था। पिताजी के कहने पर मैंने भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान की परीक्षा दी और मेरा चयन भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर में विद्युत अभियांत्रिकी में हो गया।

कानपुर रेलवे स्टेशन देखकर ऐसा लगा कि मैं कहां आ गया, परंतु भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान का परिसर मुझे अच्छा लगा। एक सप्ताह यहां रहने के बाद मैंने पिताजी को फोन किया और कहा कि मुझे यहां नहीं रहना है, आप आकर मुझे ले जाइए। पिताजी मुझे लेकर दिल्ली आ गए और मैंने सेंट स्टीफेंस कॉलेज में पुनः प्रवेश ले लिया। लेकिन तीन दिन बाद मित्रों के कहने पर मैं फिर से कानपुर वापस आ गया।

मुझे दिल्ली में ही पढ़ने का मन था इसलिए मैंने भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान दिल्ली के लिए स्थानान्तरण का आवेदन किया और वर्ष के अंत तक मुझे भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान दिल्ली भी मिल गया था पर मुझे तब तक भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर अच्छा लगने लगा और मैंने दिल्ली जाने से इंकार कर दिया। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर में मेरे जो दोस्त बने हैं उनसे आज तक अच्छी दोस्ती है तथा इस संस्थान में जो गणित और विश्लेषणात्मक सोच सीखी वो आगे बहुत काम आयी।

अंतस परिवारः क्या कोई ऐसे प्रोफेसर या कैंपस का अनुभव था जिसने आपके करियर को प्रभावित किया? क्या यह प्रभाव आपको अभियांत्रिकी से बिजनेस स्ट्डीज की ओर रुख करने के लिए प्रेरित किया?

डॉ. दीपक नरुलाः मुझे हमेशा से नंबरों में रुचि रही है, परंतु बचपन में वित्त के बारे में अधिक जानकारी नहीं थी। कक्षा 12 तक आते-आते वित्त में मेरी रुचि और गहरी हो गई और मैंने सेंट स्टीफेंस कॉलेज में प्रवेश ले लिया। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान में आने के कारण मैं वित्त में आगे की पढ़ाई नहीं कर पाया।

इसीलिए भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर से उपाधि प्राप्त करने के पश्चात मैंने बिजनेस स्टडीज की ओर रुख किया और कोलंबिया बिजनेस स्कूल में प्रवेश लिया।

अंतस परिवारः एक छात्र के रूप में, क्या आपने कभी सोचा था कि आपका व्यवसायिक जीवन आपको एक दिन वॉल स्ट्रीट तक ले जाएगा, जहां आप एमबीएस इंडस्ट्री की एक अग्रणी हस्ती बनेंगे और वॉल स्ट्रीट पर एक प्रतीक के रूप में पहचाने जाएंगे?

डॉ. दीपक नरुलाः मैंने कभी इस बारे में सोचा नहीं था। जब मैं पीएचडी कर रहा था, उस समय मेरे साथ कार्य करने वाले दो प्रोफेसर लेहमैन ब्रदर्स में एक प्रोजेक्ट पर काम कर रहे थे और उन्होंने मुझे वहां नौकरी का प्रस्ताव दिया। इसी कारण मुझे वॉल स्ट्रीट में नौकरी मिल गई।

कहने का आशय यह है कि यदि आप कोई कार्य पूरे मन से करते हैं, उसे पसंद करते हैं और उसमें आपका कौशल भी अच्छा है, तो दुनिया आपके लिए अपने दरवाजे खोल देती है। इसलिए वही कार्य कीजिए जिसमें आपका जुनून हो, पैसा आपके पास खुद आ जाएगा।

अंतस परिवारः आपने लेहमैन ब्रदर्स में आठ से अधिक वर्षों तक काम किया। उस अनुभव ने मेटा कैपिटल मैनेजमेंट को स्थापित करने में आपकी कैसे मदद की, और लेहमैन ब्रदर्स में आगे काम जारी रखने के बजाय मेटा कैपिटल मैनेजमेंट शुरू करने की प्रेरणा आपको कहां से मिली?

डॉ. दीपक नरुलाः मैंने 10 वर्ष तक लेहमैन ब्रदर्स में काम किया और वहां से काफी अनुभव प्राप्त किया। इतने वर्षों तक वहां कार्य करने के बाद मुझे लगा कि जो अनुसंधान मैं यहां करता हूं, उसे अपनी ही संस्था में क्यों न करूं। इसी बीच मेरी जिंदगी में एक मोड़ आया। वर्ष 1998 में बाजार में काफी उथल पुथल हुई और संस्था में भी कई बड़े बदलाव आए। इन परिस्थितियों के चलते मैंने वर्ष 2000 में लेहमैन ब्रदर्स को छोड़ दिया और वर्ष 2001 में अपनी संस्था की स्थापना की।

मेरी यह सोच थी कि इन वर्षों में जो कुछ मैंने सीखा है, उसे यहां

उपयोग करूंगा और एक ऐसी संस्था बनाऊंगा जहां लोग खुशी से काम करने आएं। इसके साथ ही यह भी सुनिश्चित करूंगा कि यहां पर कोई राजनीति न हो तथा अनुभवी लोगों को काम पर रखूंगा। उन्हें उत्कृष्ट प्रशिक्षण दूंगा तथा यह ऐसी संस्था होगी जहां लोगों का कार्य करने में मन लगेगा। यहां पर सबको एक दूसरे पर भरोसा होगा और मुझे लगता है कि काफी हद तक मैं इसमें सफल भी रहा। मेरी हमेशा ये कोशिश रही है कि कर्मचारियों को यह महसूस हो कि ये उनकी भी संस्था है न कि सिर्फ मेरी। इसलिए संस्था का नाम अपने या परिवार के नाम पर न रखकर मेटा कैपिटल्स रखा।

अंतस परिवारः वित्त काफी उतार-चढाव वाला क्षेत्र है, ऐसे में आप खुद को शांत और संतुलित कैसे बनाए रखते हैं?

डॉ. दीपक नरुलाः वित्त में कुछ भी स्थायी नहीं होता। स्वयं को शांत और संतुलित रखना एक ऐसी कला है, जिसे सीखना पड़ता है। जब सब कुछ अच्छा चल रहा होता है, तब आप वास्तव में बहुत कुछ नहीं सीखते। असली सीख तब मिलती है जब कुछ भी ठीक नहीं चल रहा होता, क्योंकि तभी यह समझ आता है कि चूक कहां हो रही है और क्या सुधार की आवश्यकता है।

ऐसा कोई व्यक्ति नहीं है जिसके जीवन में मुश्किलें न आई हों, लेकिन आप उन मुश्किलों का सामना कैसे करते हैं, यही आपकी काबिलियत को दर्शाता है। बाजार में कभी पैसे बनते हैं और कभी नुकसान होता है, और हमें दोनों ही परिस्थितियों में संतुलन बनाए रखना होता है।

अंतस परिवारः न्यूयॉर्क में वेदांत सोसाइटी से आपका जुड़ाव कैसे शुरू हुआ? क्या भारत में रहते हुए भी आप वेदांत सोसाइटी से जुड़े हुए थे, या अमेरिका आने के बाद आपकी इसमें रुचि बढ़ी? साथ ही, स्वामी विवेकानंद से आपको क्या प्रेरणा मिलती है, और उनके दृष्टिकोण ने आपके जीवन या कार्य को किस तरह प्रभावित किया है?

डॉ. दीपक नरुलाः इसका पूरा श्रेय मेरे माता पिता को जाता है,

क्योंकि वे नियमित रूप से वेदांत सोसाइटी जाया करते थे। मेरी पत्नी भी इससे जुड़ी रही हैं। यहां न्यूयॉर्क में वेदांत सोसाइटी के एक नहीं बल्कि दो केंद्र हैं, जिनमें से एक की स्थापना स्वयं स्वामी विवेकानंद ने की थी। मुझे इससे जुड़े हुए लगभग 35 वर्ष हो चुके हैं।

शुरुआत में मैं कभी कभी वहां जाता था, पर अब नियमित रूप से जाता हूं। मैंने रामकृष्ण सहित कई अन्य संन्यासियों की किताबें पढ़ी हैं। स्वामी विवेकानंद की अनेक शिक्षाएं मेरे जीवन में गहराई से समाहित हैं।

उनकी शिक्षा का सार यही है कि जब आप कोई कार्य करें, तो उसे अपनी पूरी क्षमता के साथ करें और ऐसे करें मानो वही आपका एकमात्र कार्य हो और उसके बाद आप दूसरे कार्य में लग जाएं। इसका प्रभाव मेरे व्यक्तित्व पर काफी गहरा रहा है।

अंतस परिवारः आपने भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर, कोलंबिया बिजनेस स्कूल और कई रामकृष्ण-विवेकानंद केंद्रों को सहयोग दिया है। परोपकारी कार्य में आपकी रुचि के पीछे क्या प्रेरणा है?

डॉ. दीपक नरुलाः मैं 62 वर्ष का हूं तथा मेरे दोनों बच्चे पढ़े-लिखे, आत्मनिर्भर एवं अच्छी नौकरी कर रहे हैं। मैं स्वयं भी वित्तीय रूप से सक्षम हूं। जब जीवन में आप इतना कुछ प्राप्त कर लेते हैं, तो यह आपका दायित्व बन जाता है कि आप समाज के लिए भी कुछ करें, विशेष रूप से उन संस्थानों के लिए जिन्होंने आपके जीवन की दिशा बदली और आपको इतनी ऊंचाइयों तक पहुंचाया।

अंतस परिवारः जो छात्र वित्त अथवा वैश्विक बाजार में करिअर बनाना चाहते हैं, उन्हें आप क्या सलाह देना चाहेंगे?

डॉ. दीपक नरुलाः अपने जुनून को पहचानिए, धैर्य रखिए, लेकिन जब आप सुविधा क्षेत्र में जाने लगें तो उससे बाहर निकलिए, क्योंकि वहीं रुक जाने से आगे बढ़ना संभव नहीं होता। अपने ऊपर निवेश कीजिए। सफलता एक ही दिन में प्राप्त नहीं होती। कई बार अपने जुनून को पहचानने में समय भी लग जाता है, इसलिए स्वयं को समझने का अवसर दीजिए।

यह जानने का प्रयास कीजिए कि आपकी रुचि किसमें है। ऐसी जगह कार्य कीजिए जहां बेहतरीन लोग काम करते हों, ताकि आप उनसे सीख सकें, भले ही शुरुआत में आपका वेतन अधिक न हो। आरंभिक दौर में सीखना सबसे आवश्यक होता है।

अपनी ऊर्जा उसी कार्य में लगाइए जहां आपको आपका जूनून दृष्टिगत होता हो। जब इंटरनेट आया था, तब लगभग सभी लोग इंटरनेट कंपनियों में काम करना चाहते थे, पर कुछ क्षेत्र ऐसे भी होते हैं जहां हमेशा कार्य बना रहता है। केवल अति प्रचार देखकर किसी क्षेत्र में जाने की न सोचें।

अंतस परिवारः आपके अनुसार भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर के भविष्य के विकास के लिए पूर्व छात्रों की सहभागिता कितनी महत्वपूर्ण है?

डॉ. दीपक नरुलाः भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर में हमें दुनिया की बेहतरीन शिक्षा मिली। इसलिए हम सभी पूर्व छात्रों का यह दायित्व है कि वे अपनी क्षमता के अनुसार संस्थान को यथासंभव योगदान दें।

अंतस परिवारः धन्यवाद...

अंतस के 28 वें अंक के सर्वश्रेष्ठ रचनाकार

जैसा कि आप सभी को विदित है कि अंतस पत्रिका में प्रकाशित तीन सर्वश्रेष्ठ रचनाओं के लेखकों को नकद पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है। इसी क्रम में अवगत कराया जाता है कि 28वें अंक की शीर्ष तीन रचनाएं एवं उनके रचनाकार इस प्रकार हैं:-

1. **ऊर्जा रूपांतरण एवं संरक्षण**
   प्रो. सुब्रत सरकार एवं डॉ. सी एस गोस्वामी
   यांत्रिकी अभियांत्रिकी
2. **समकालिक शिक्षा के उद्देश्य-ज्ञान आधारित कौशल अथवा कौशल आधारित ज्ञान**
   श्री मनोज कुमार वर्मा, आंतरिक अंकेक्षण अनुभाग
3. **मेरे देश का सिपाही**
   एकता बब्बर, परिसरवासी

आईआईटी कानपुर सागा

उत्कृष्टता की ओर एक कालजयी यात्रा

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर ने शैक्षिक, वैज्ञानिक और सामाजिक क्षेत्र में अपनी विशिष्ट पहचान स्थापित की है। इसी गौरवशाली विरासत को नई पीढ़ी तक रोचक और प्रेरक रूप में पहुंचाने के उद्देश्य से आईआईटी कानपुर ने अमर चित्र कथा प्रकाशक के साथ मिलकर एक विशेष कथा पुस्तक 'आईआईटी कानपुर सागाः ट्रिस्ट विद एक्सीलेंस' का प्रकाशन किया है। इस पुस्तक का विमोचन दिनांक 19 दिसंबर 2025 को किया गया।

यह पुस्तक आईआईटी कानपुर की स्थापना से लेकर वर्तमान तक की यात्रा को एक अनोखे और सृजनात्मक दृष्टिकोण से प्रस्तुत करती है। इसकी कथा दो प्रतीकात्मक पात्रों के माध्यम से आगे बढ़ती है। कैंपस का एक प्राचीन बरगद का वृक्ष, जो दशकों से संस्थान के विकास, बदलाव और उपलब्धियों का मूक साक्षी रहा है, और उसका चंचल मोर साथी, जो परिसर के जीवंत जीवन का प्रतीक है। इन दोनों के संवादों के माध्यम से कहानी में निरंतरता, सामंजस्य, जिज्ञासा और कैंपस जीवन की आत्मा सजीव हो उठती है।

'आईआईटी कानपुर सागा' केवल संस्थान के भौतिक विकास की कहानी नहीं है, बल्कि यह उन असंख्य मानव कथाओं को भी सामने लाती है, जिन्होंने इस संस्थान को आकार दिया। कठिन चुनौतियों का सामना, नई खोजों का उत्साह और वह अदम्य जिसने एक छोटे से विचार को विश्व-स्तरीय विरासत में बदल दिया। यह पुस्तक आईआईटी कानपुर की उस भावना को दर्शाती है, जहां उत्कृष्टता केवल लक्ष्य नहीं, बल्कि एक सतत यात्रा है।

'आईआईटी कानपुर सागाः ट्रिस्ट विद एक्सीलेंस' न केवल एक पुस्तक है, बल्कि यह संस्थान की आत्मा, उसकी स्मृतियों और उसके भविष्य की ओर बढ़ते कदमों का उत्सव है। एक ऐसी गाथा, जो आने वाली पीढ़ियों को भी उत्कृष्टता की ओर प्रेरित करती रहेगी।

इस पुस्तक की प्रति प्राप्त करने हेतु कृपया ई-मेल आईडी media_dora@iitk.ac.in पर संपर्क करें।

पहियों पर दोस्ती: कैंपस जीवन के रंगों से रंगी एक अविस्मरणीय दास्तान

कैंपस जीवन की खूबसूरती इसी में है कि वह हर दिन को एक नए रंग में रंग देता है। कभी रोमांच, कभी दोस्ती, कभी संघर्ष और कभी उपलब्धि। मेरे लिए इन रंगों में सबसे चमकीला रंग वह है जो मेरी स्नातक पढ़ाई के दौरान एक रोबोटिक्स प्रतियोगिता ने मेरे जीवन में भरा।

यह घटना हमारे कॉलेज के टेक फेस्ट की है। एक रोबोटिक्स प्रतियोगिता आयोजित की गई थी जिसमें रोबोट को एक चुनौतीपूर्ण ट्रैक पूरा करना था।

पहले नालीदार टिन की शीट पर संतुलन बनाते हुए चलना,

फिर पानी में उतरकर आगे बढ़ना,

उसके बाद रेत में रास्ता बनाना,

और अंत में एक छोटी-सी खाई पर छलांग लगाना।

मैं उस समय द्वितीय वर्ष का विद्यार्थी था और तकनीक के प्रति उतना ही उत्साहित था जितना ही अनुभवहीन। लेकिन उत्साह

ने ही मुझे प्रतियोगिता में भाग लेने की प्रेरणा दी।

विंग-मेट्सः असली सुपरहीरोज

मुझे पता था कि यह काम अकेले मुमकिन नहीं था। इसलिए मैंने अपने हॉस्टल विंग के सीनियरों से मदद मांगी। तभी कैंपस जीवन का असली रंग सामने आया। सहयोग, उत्साह और सीखते हुए आगे बढ़ने का जुनून।

सबसे पहले सामने आए अजय। पानी वाले हिस्से को देखते ही उन्होंने कहा, ''भाई, ये तो पानी में डूब जाएगा। कुछ तैरने लायक बनाना पड़ेगा।''

कुछ ही देर में वे थर्माकोल और मिक्सर ग्राइंडर के घूमने वाले पहिए लेकर आ गए। उनका विचार था कि थर्माकोल से कार को उछाल मिलेगी और ग्राइंडर के तेज घूमने वाले पहिए से पानी में आगे धकेलेंगे मानो कार के नीचे छोटे-छोटे प्रोपेलर लगा दिए हों।

हम दोनों ने देर रात तक मिलकर कई तरीकों से इन्हें फिट करने की कोशिश की-कभी कार डगमगाती, कभी चिपकाई हुई थर्माकोल उतर जाती। लेकिन हर कोशिश हमें समाधान के और करीब ले जाती गई।

फिर आए विवेक। वे हमेशा उन समस्याओं को पकड़ने में माहिर थे जिन्हें कोई और देख ही नहीं पाता था। उन्होंने सबसे साधारण सा लेकिन सबसे काम का सवाल पूछा।

''अगर कार बीच में फंस गई तो? क्या वापस जा पाएगी?''

यहीं से आया रिवर्सिंग मैकेनिज्म का विचार। विवेक ने इस तरह के सर्किट और गियर सिस्टम सुझाए जिससे कार उलटकर खुद को संभाल सके। यही फीचर बाद में ट्रैक पर हमारी असली ताकत साबित हुई। बाकी विंगमेट्स भी पीछे नहीं रहे। कोई वायरिंग संभालता, कोई मोटर टेस्ट करता, कोई रात के दो बजे चाय लेकर आता। हमारा छोटा सा हॉस्टल विंग एक मिनीलैब बन चुका था। जहां जुनून, रचनात्मकता और दोस्ती एक साथ काम कर रहे थे।

प्रतियोगिता का दिनः रंगों का संगम

जब प्रतियोगिता का दिन आया, तो हमारा 'जुगाडू' लेकिन दमदार रोबोट कार तैयार थी। पूरे सभागार में उत्सुकता थी।

कार ने शुरुआत की-

सबसे पहले नालीदार टिन पर संतुलन बनाते हुए आगे बढ़ी।

फिर पानी में उतरते ही ग्राइंडर वाले पहिये घूमने लगे और कार

लहरों को चीरते हुए निकल गई। यह अजय की प्रतिभा थी।

रेत वाले हिस्से में थोड़ी लड़खड़ाई, लेकिन तभी वह पीछे मुड़ी, फिर सीधी हुई यह विवेक के रिवर्स मैकेनिज्म का कमाल था।

और अंत में... उस छोटी सी खाई को पार करते हुए कार ने एक शानदार छलांग लगाई।

पूरा हॉल तालियों से गूंज उठा।

और जब घोषणा हुई कि हमने पहला पुरस्कार जीता है, तो हमारी खुशी का कोई ठिकाना ही नहीं था।

लेकिन उस पल में मैंने महसूस किया कि जीत की खुशी से बड़ा सुख वह था जो इस सफर में मिला था। टीमवर्क, रातों का संघर्ष, पागलपन भरे आइडिया, हंसी, सीख और दोस्ती के अनगिनत रंग।

कैंपस जीवन का असली रंग

आज भी जब मैं उस प्रतियोगिता को याद करता हूं, तो लगता है कि वह छोटी सी रोबोट कार सिर्फ ट्रैक पर नहीं दौड़ी थी।

वह हमारे सपनों, मेहनत और दोस्ती से बनी थी।

उस कार के हर पहिए में मेरे विंगमेट्स की सीख, हर मोड़ में उनकी सलाह और हर छलांग में उनकी हिम्मत झलकती थी।

कैंपस जीवन के रंग कितने भी विविध क्यों न हों, सफलता, असफलता, उत्साह, तनाव, लेकिन दोस्ती और सामूहिक प्रयास का रंग सबसे चमकीला होता है।

और मेरे लिए, वह रंग हमेशा उस रोबोट कार की छलांग में चमकता रहेगा।

—प्रोफेसर अमर कुमार बेहेरा
डिजाइन विभाग
भा.प्रौ.सं. कानपुर

कैंपस जीवन के बहुरंगी आयाम

कैंपस का जीवन हर विद्यार्थी की जिंदगी में महत्वपूर्ण होता है। कैंपस में विद्यार्थी केवल परीक्षा में सफल होने हेतु शिक्षा ग्रहण नहीं करता अपितु वह अपने आने वाले जीवन को जीने की दिशा भी प्रदान करता है। यहां का जीवन अनुभवों का महासागर, सपनों का आंगन और एक छात्र के व्यक्तित्व के निर्माण की प्रयोगशाला है। कैंपस हर दिन कुछ नया सिखाता है और यहां का हर कोना एक कहानी सुनाता है। कैंपस का वातावरण विविधता से भरा होता है। अलग-अलग राज्यों और संस्कृतियों से आए विद्यार्थी एक साथ छात्रावास में रहते हैं, जिससे विचारों का आदान-प्रदान होता है और यह विविधता न केवल भाषा या परंपराओं में बल्कि उनकी सोच और साथ ही साथ उनके दृष्टिकोण में भी झलकती है। कैंपस का वातावरण ही छात्र के जीवन में सहिष्णुता, सहयोग और खुले विचारों की भावना को विकसित करता है।

कैंपस का जीवन मात्र एक छात्र को ही आनंदित नहीं करता बल्कि वह यहां कार्य करने वाले सभी कर्मचारियों को भी एक बेहतर इंसान बनाता है। वे कर्मचारी चाहे किसी भी विभाग में, कार्यरत हों यहां आने पर अपने अंदर छिपे हुए हुनर को पहचानते हैं। जैसे यहां होने वाली वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता, हर वर्ष आयोजित होने वाली कई तरह के कार्यक्रम, प्रतियोगिताएं जैसे काव्य पाठ, हिंदी पखवाड़ा जिसमें केवल छात्र ही नहीं अपितु कर्मचारी भी बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेते हैं और अपनी प्रतिभा को अन्य व्यक्तियों के समक्ष प्रस्तुत करते हैं। जब किसी प्रतियोगिता के लिए किसी कर्मचारी को पुरस्कार या सम्मान मिलता है तो वह कुछ और नया करने के लिए प्रोत्साहित होता है।

कक्षाओं में जहां ज्ञान का पाठ पढ़ाया जाता है, वहीं कैंटीन, मेस पुस्तकालय, ओपेन एअर थियेटर, जिम आदि में आपसी संवाद स्थापित करने का अवसर मिलता है। समय-समय पर आयोजित किए जाने वाले सांस्कृतिक कार्यक्रम, जिसमें नृत्य, गायन, लेखन आदि एक छात्र के जीवन को यादगार बना देते हैं। खेलकूद प्रतियोगिताएं और पर्व-उत्सव कैंपस के रंगो को और जीवंत बना देते हैं। संगीत और नाटक महोत्सव छात्रों की रचनात्मकता को पंख देते हैं। इसका एक उदाहरण जितेंद्र हैं जिन्हें जीतू भैया कहते है वह आईआईटी खड़गपुर के छात्र है, जो अपने कैंपस में कई तरह के नाटक में भाग लिया करता थे और आगे चलकर वह पंचायत जैसी प्रसिद्ध बेब सीरीज में कार्य करने के लिए काफी प्रसिद्ध हुए।

समूह अध्ययन और परियोजना कार्य विद्यार्थियों में मिलकर कार्य करने की तरफ अग्रसर करता है और उनमें टीम लीडर की योग्यता को भी विकसित करता है। जिसमें विद्यार्थियों में अनुशासन व जिम्मेदारी की भावना भी विकसित होती है।

अब तो भारत सरकार भी विद्यार्थियों को शुरु से ही आवासीय विद्यालयों की योजना चला रही है। जिसमें समाज के अलग-अलग वर्गों के बच्चों को गुणवत्तापूर्ण और आवासीय शिक्षा की नींव डाली जाती है। कुछ उदाहरण नीचे दिए जा रहे हैं।

एकलव्य आदर्श आवासीय विद्यालय

ये स्कूल आदिवासी बच्चों के लिए बनाए गए हैं और देश के दूरदराज के क्षेत्रों में स्थित हैं।

वर्ष 2025 तक देश में 722 एकलव्य विद्यालय स्वीकृत किए जा चुके हैं जिनमें से 485 का संचालन हो रहा है।

ये स्कूल पूरी तरह निःशुल्क शिक्षा, हॉस्टल, भोजन, स्वास्थ्य देखभाल और प्रतियोगी परीक्षाओं की विशेष तैयारी प्रदान करते हैं। यहां के छात्र जेईई, नीट जैसी परीक्षाओं में लगातार अच्छा प्रदर्शन कर रहे हैं।

जवाहर नवोदय विद्यालयः ये विद्यालय ग्रामीण प्रतिभाओं को निखारने के लिए शुरु किए गए हैं।

ये सीबीएसई से मान्यता प्राप्त और पूरी तरह आवासीय हैं। देश के लगभग हर जिले में एक जेएनवी संचालित होता है। कक्षा 6 में प्रवेश परीक्षा द्वारा प्रवेश होता है। भोजन, छात्रावास, खेल तथा कंम्प्यूटर की शिक्षा पूरी तरह से मुफ्त है। यहां बच्चों को बचपन से आत्मनिर्भर बनाया जाता है और यहां के बच्चे भी आगे चलकर जेईई, नीट, यूपीएससी, राज्य पीसीएस आदि परीक्षाओं में बेहतर प्रदर्शन करते हुए नजर आते हैं।

कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालयः ये विशेष तौर पर ग्रामीण एवं पिछड़े क्षेत्र की लड़कियों के लिए होते हैं। प्रारम्भिक शिक्षा से कक्षा पांचवीं तक तो विद्यालय होते हैं लेकिन उसके बाद जैसे 6-12 तक ज्यादा विद्यालय नहीं होते हैं। उसके लिए उन्हें तहसील या ब्लाक में जाना पड़ता है। इसलिए सरकार द्वारा देश के कई ब्लाकों में ऐसे स्कूल स्थापित किए गए जो शिक्षा, हॉस्टल, भोजन, किताबें, यूनिफार्म आदि सुविधाएं निःशुल्क दी जाती हैं।

सैनिक स्कूलः सैनिक स्कूलों की स्थापना बच्चों को अनुशासन सैन्य प्रशिक्षण और शारीरिक फिटनेस के साथ गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देने के लिए हुई है। पूरे देश में अनेक सैनिक स्कूल संचालित किए जा रहे हैं जहां पर सरकारी सब्सिडी के साथ शिक्षा उपलब्ध है।

नेतरहाट आवासीय विद्यालय, झारखंडः झारखंड का प्रतिष्ठित सरकारी बोर्डिंग स्कूल, शिक्षा के साथ प्राकृतिक वातावरण, प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी और अनुशासनपूर्ण जीवनशैली प्रदान करता है।

राजकीय प्रतिभा विकास विद्यालय, दिल्लीः दिल्ली सरकार द्वारा संचालित ये स्कूल मेधावी विद्यार्थियों को मुफ्त शिक्षा और आवासीय सुविधा देते हैं, प्रवेश परीक्षा द्वारा प्रवेश होता है। सरकार छात्रों को शुरु से ही आवासीय शिक्षा प्रदान कराने पर बल दे रही है ताकि बच्चों का भविष्य और देश का भविष्य सुनहरा हो।

अंत मे मैं यह कहना चाहती हूं कि कैंपस का जीवन व्यक्ति के समग्र विकास का एक अनिवार्य अध्याय है। यही वह समय होता है जब एक छात्र अपने सपनों को पहचान कर उन्हें हकीकत में बदलने की दिशा में एक कदम रखता है। यहां पर प्राप्त शिक्षा व अनुभव जीवन में प्रेरणा व मार्गदर्शन प्रदान करते हैं।

–शाहाना सुल्ताना
पी.के. केलकर पुस्तकालय
भा.प्रौ.सं. कानपुर

सुबह का भूला

सुबह के भूले को भूला नहीं माना जाता
ऐसा कहते हैं लोग
हां, अगर उसे शाम को है याद आ जाता,
उनका करें क्या हम, जो ये भी नहीं माने
कि भूलना भी है उनको आता
ऐसे का क्या कर सकता जमाना भला
जिसे आती हो बढ़िया झूठ बोलने की कला
भूल चूक नहीं है बात हो सकती कभी भी
लेकिन हर दम हर बार झूठ बोले चाहे कहीं भी
ऐसे लोगों का क्यों करे कोई विश्वास
जिनका विश्वास अविश्वास न रहें रिश्ता खास
कितना भी युग गया बदल, युग पर नहीं ऐसा
कुछ लोगों की परछाई दिखाये हमे जैसा
अपने का समझना समझदार अधिकार सबका
बेसमझ किसी को समझे कोई नहीं हक किसी का
पर जो समझ-समझ के भी न चाहे समझना
उसका हो सकता है क्या, उसका क्या कहना
जिन्दगी रहे साफ सुथरी तो फिर क्या सोचना
पर इंसा सिर्फ सत्य ही बोले फिर क्या है बोलना
झूठ जो पड़े भी बोलना करने कुछ काम अच्छा
ऐसा झूठ भी झूठ नहीं कहा जाये सिर्फ सच्चा
सच भी न बोल सकते तो कर्म में रखो ईमान
इससे झूठ के पाप से बचा लोगे अपना सम्मान
वाणी अगर बोल सको जो हो कड़वे से रहित
चाह के भी तुम नहीं कर सकते किसी का अहित
तपन बात समझो हमारी, एक बुराई जीवन में छोड़ो
इस तरह दूसरों से ज्यादा, अपने को आनन्द में मोड़ो।।

–श्री तपन कुमार बोस
सुश्री रूपाली बोस के पिता जी
कनिष्ठ अधीक्षक, कुलसचिव कार्यालय
भा.प्रौ.सं. कानपुर

तुम ही नहीं हो केवल बंधु

विनोद कुमार शुक्ल की विदाई हिंदी और भारत ही नहीं, बल्कि विश्व के शीर्ष कवि-कथाकारों में से एक की विदाई है। रचनाशीलता को जो अभिनव उत्कर्ष और अद्वितीय भाषा-शिल्प विनोद जी ने दिया, उससे विगत आधी सदी से हमारा समाज चकित और अभिभूत रहा। उस विरल आलोक के लिए हिंदी हमेशा उनके प्रति कृतज्ञ और उनकी ऋणी रहेगी। उनके जीवन-व्यवहार में प्राचीन ऋषियों की साधना एवं उदात्तता और आधुनिक काल में किसी से तुलना करनी हो, तो महात्मा गांधी की सादगी और दृढ़ता थी।

हमारे समय में सभ्यता के विकास के साथ-साथ जिस कदर उपभोगवाद और हिंसा बढ़ती गई है, विनोद कुमार शुक्ल की कविता ने उसके समुज्ज्वल और गरिमामय प्रतिकार के लिए एक प्रति-संसार की रचना की और साबित किया कि चैलेंज जितना गम्भीर और विकट होगा, सृजन की दुनिया में उसका समक्षीकरण उतना ही उदात्त होगाः ''जो मेरे घर कभी नहीं आएंगे/मैं उनसे मिलने/उनके पास चला जाऊंगा। एक उफनती नदी कभी नहीं आएगी, मेरे घर/नदी जैसे लोगों से मिलने/नदी किनारे जाऊंगा।'' यहां कवि के लिए नदी और लोगों, यानी प्रकृति और मनुष्य में कोई भेद या अलगाव नहीं है। यह विशेषता कालिदास सरीखे महाकवि का स्मरण कराती है। नदी जैसे लोगों से मिलने नदी किनारे जाने की प्रतिश्रुति में कहीं-न-कहीं दोनों के ही पहले जैसा न रह जाने का अवसाद झलकता है और उन्हें उस प्राचीन, निष्कलुष और वैभवशाली रूप में पा लेने की चाहत भी।

विनोद कुमार शुक्ल ने हमें यह संस्कार दिया कि कविता के लिए व्याकरण से ज्यादा महत्त्व अन्तःकरण का है। समस्त कलाओं का प्रयोजन मनुष्य की आत्मा को निरन्तर विकसित करना है, उसके 'मैं' को 'हम' में विस्तार देना हैः ''एक बिहारी की तरह कहता हूं/कि हम लोग आता हूं/इस कथन के साथ के लिए। छत्तीसगढ़ी में हमन आवत हन। तुम हम लोग हो/वह भी हम लोग है।' उनका काव्य-संसार अन्यत्व, दूसरेपन या पराएपन की सोच को नामंजूर और ख़ारिज करता है। कोई उनके यहां गैर या अजनबी नहीं है। इस मायने में उनकी कविता सुखद और विस्मयजनक ढंग से एक ओर भारतीय दार्शनिक और बौद्धिक परम्परा से संवाद करते हुए वेदान्त दर्शन से एकात्म है, तो दूसरी ओर समकालीन आदिवासी जीवन-दृष्टि की निश्छलता और सौन्दर्य से भी है। तभी उन्होंने लिखा था कि आदिवासी स्वाभाविक हैं और सभ्य होना अस्वाभाविक होना है और यह किः 'मैं जान लेना नहीं/जान बचाना चाहता हूं/यह आदिवासी सच है।' उन्होंने बेलौस अंदाज में यह लिखने का साहस किया कि ''आदिवासी जंगल के सबसे निकट हैं/इसलिए जंगल उनका है'' और आज जब उन्हें जंगल से बेदखल किया जा रहा है, तो यह वैसे ही दुखद और भयावह है, जैसे पेड़ से पक्षियों और आकाश से चांदनी को बेदखल किया

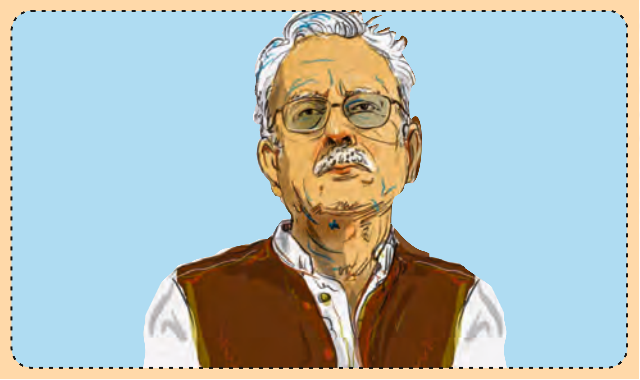

जाना।

विनोद कुमार शुक्ल ने हमें बताया कि सौन्दर्य की खोज अपने से बाहर या भिन्न किसी सचाई की तलाश भले मालूम होती हो, मगर उसके नतीजे में वह स्वयं सुन्दर हो सकने की जद्दोजहद है। यानी अपनी अलहदा हस्ती तभी तक है, जब तक कि वृहत् सत्ता से उसका तादात्म्य नहीं हो जाता। इस अनुभव तक न पहुंच पाना अकेलेपन और पराएपन का, वेदना का उत्स बना रहता है। लेकिन जब हम इस एहसास को अर्जित करते हैं, तो कोई हमारे लिए 'अतिरिक्त' नहीं रह जाता, हर अपनी लगती है, क्योंकि हर शै अपरिहार्य होती हैः ''कितना बहुत है/परन्तु अतिरिक्त एक भी नहीं/एक पेड़ में कितनी सारी पत्तियां/अतिरिक्त एक पत्ती नहीं/एक कोंपल नहीं अतिरिक्त/एक नक्षत्र अनगिन होने के बाद/अतिरिक्त नहीं है गंगा अकेली एक होने के बाद... न उसका एक कलश गंगाजल... कितनी कमी है/तुम ही नहीं हो केवल बन्धु/सब ही/परन्तु अतिरिक्त एक बन्धु नहीं।''

सार्वजनिकता की इस दुर्लभ अनुभूति के साथ विनोद कुमार शुक्ल ने सार्वकालिकता का यह उद्घोष भी कियाः ''जाते जाते कुछ भी नहीं बचेगा जब/तब सब कुछ पीछे बचा रहेगा/और कुछ भी नहीं में/सब कुछ होना बचा रहेगा।'' शोक की इस घड़ी में, जब वह हमसे असमाप्य ढंग से दूर चले गए हैं, उनका होना उनके रचनात्मक वैभव में हमारे लिए अक्षुण्ण है और निश्चय ही, अपने शब्दों को सच करते हुए वह अन्तरिक्ष से अपनी पृथ्वी देखते होंगेः ''तब घर में बच्चे क्या करते होंगे की याद/पृथ्वी में बच्चे क्या करते होंगे की होगी/घर में अन्न जल होगा कि नहीं की चिन्ता/पृथ्वी में अन्न जल की चिन्ता होगी।'' अन्त में, उनके इस आकस्मिक जाने पर युवा कवि व्योमेश शुक्ल के ये शब्द याद आते हैंः ''फिर मैंने सोचा कि विनोद कुमार शुक्ल जा रहे होते तो यह कहने की जगह कि जा रहा हूं, कहते कि आ रहा हूं फिर मैंने सोचा कि अगर संभव हुआ तो मैं विनोद कुमार शुक्ल से वाक्य-विन्यास से ज्यादा कुछ सीखूंगा फिर मैं आगे चला गया फिर मैंने पाया कि जीवन कितना कम विनोद कुमार शुक्ल है।''

—डॉ. पंकज चतुर्वेदी
प्रोफेसर, हिंदी विभाग
वी.एस.एस.डी. कॉलेज
कानपुर नगर

मानिनी मन रे

ना तु रच ले द्वेष का सागर
ना तु भर ले आशा की गागर
ना तु सृज ले माया की नगर
मानिनी मन रे, मानिनी मन रे।

ना तु चुरा ले बुद्धि का आंचल
ना तु छिन् ले आंखो का काजल
ना तु उड़ा ले आत्मा का उज्जवल
मानिनी मन रे, मानिनी मन रे।

ना मैं जानता हुं की रीति
ना मैं बुझता हुं मित के मति
ना मैं देखता हुं प्यासा की गति
मानिनी मन रे, मानिनी मन रे।

शिक्षा दे मुझे प्रेम का गीत
दिखा दे मुझे शांति की नीति
मिला दे मुझे माया के पति
मानिनी मन रे, मानिनी मन रे।

—प्रो. देबीप्रसाद मिश्र
वांतरिक्ष अभियांत्रिकी
भा.प्रौ.सं. कानपुर

आईआईटी कानपुर: सुविधाओं से सजा ज्ञान का आकाश

आईआईटी कानपुर का परिसर, हर सपने को आकार देता,
यहां पुस्तकालय ज्ञान का दीप जला हर मन को उजियार करता।
हरे-भरे मैदानों में खेल का मैदान उल्लास जगाता,
थकान मिटाने को भोजनालय, हर स्वाद का रस घोल जाता।
नीले जल सा शांत तरण ताल, उमंगों में डुबो देता,
सुदृढ़ बनाए तन व मन, ऐसी व्यायामशाला हर दिन प्रेरित करता।
हर सुविधा के संग खड़ा है बैंक, भरोसे का मजबूत दर्पण,
और सुगंध बिखेरता स्वल्पाहारगृह, मुस्कान लाता प्रत्येक क्षण।
सुरक्षित नींद का साया देता आरामदेह छात्रावास,
जरूरत का हर सामान मिलता है दुकान में, पास ही खास।
फूलों से महकते पथों पर पार्क मन को हर ले जाए,
और सपनों को आकार देती अनुसंधान प्रयोगशालाएं नई दिशा दिखाए।
तकनीक की धड़कन बनकर धड़कता संगणक केंद्र आधुनिक,
मन बहलाता मनोरंजक क्लब, जीवन को करता उत्साहित।
जोश जगाए साहसिक खेल, साहस को देती परवाज,
शांति का आंगन है देवगृह, जहां मन पाता विश्वास।
नवाचार की ध्वनि गूंजती केंद्रीय कार्यशाला के कोनों से,
सुरक्षा बनाए रखता सुरक्षा नियंत्रण कक्ष, सतर्क निगाहों से।
बाल मन संवारता कैंपस का विद्यालय, भविष्य का दीप जलाता,
यात्रा को सहज बनाता साइकिल स्टैंड, हर कदम संग चलता जाता।
खुशियों के उत्सव रचता सुंदर विवाह स्थल, मिलन का प्यारा स्थान,
आगंतुकों का स्वागत करता आगंतुक छात्रावास, विनम्र मेजबान।
और उड़ान भरते सपनों को पास लाता परिसर का हवाई अड्डा,
आईआईटी कानपुर सच में है- ज्ञान, सुविधा और नवोन्मेष का बढ़ता अड्डा।

—छवि श्रीवास्तवा
वरिष्ठ सहायक
गणित एवं सांख्यिकी विभाग
भा.प्रौ.सं. कानपुर

कैंपस जीवन के बहुरंगी आयामः मोडी- देवनागरी लिपि की कर्सिव सिस्टर?

इस बार अंतस की विषय वस्तु ने मुझे यह ध्यान में रखकर लिखना शुरू करने के लिए प्रेरित किया कि मैं अपने कैंपस जीवन के बहुरंगी आयाम को कैसे बेहतर बना सकता हूं। मुझे महसूस हुआ कि इस कैंपस में इन्फॉर्मेशन और नॉलेज शेयरिंग इसकी जीवंतता का सबसे प्रमुख एवं आवश्यक कारण है। जब मैं अपनी स्ट्रांग फिल्टर कॉफी का पान कर रहा था, तो मुझे कैंपस में इस लिपि के विषय में रुचि नजर आई। अतः इस लिपि की कार्यशाला भी संभव है। कुछ विचार आए और मैंने सोचा कि हमारी देवनागरी लिपि की जगह कुछ दशक पहले तक प्रयोग होने वाली एक भूली हुई कर्सिव लिपि के बारे में कुछ जानकारी शेयर करना अच्छा रहेगा। देवनागरी वह वर्तमान लिपि है जिसका इस्तेमाल संस्कृत, हिंदी, मराठी, कोंकणी, बोडो जैसी भारत और नेपाल की कई भाषाओं को लिखने के लिए किया जाता है। अधिक प्रचलन की वजह से देवनागरी लिपि का पाठक भाषा की रुकावटों को पार करते हुए आम समझ और जन संचार के लिए भारत व नेपाल के एक व्यापक भू भाग के बोर्डों को पढ़ सकता है। इस लेख का उद्देश्य मोडी लिपी की ऐतिहासिक जानकारी शेयर करना है। देवगिरी के यादव वंश दक्कन की सल्तनतें, छत्रपति शिवाजी महाराज, संभाजी महाराज, महारानी अहिल्याबाई होल्कर या बाजीराव पेशवा के अलावा उस दौर के अधिकांश मराठा राजा या सरदार पत्राचार के लिए मोडी लिपि का प्रयोग करते थे। इतिहास में दिलचस्पी रखने वाले लोग उस समय के हालात को तभी समझ पायेंगे जब वे मोडी लिपि में पत्राचार को समझते होंगें। इस लिपि को समझने से, हमें मध्यकालीन और आजादी से पहले के समय के लोगों के जीवन के बारे में पता चलता है।

मोडी का आजादी से पहले का युगः आजादी से पहले, मोडी लिपि का प्रयोग सबसे ज्यादा मध्य भारत की सभी मराठा रियासतों में होता था जैसे इंदौर- जहां से मैं आता हूं। 20वीं सदी के पहले हिस्से में मराठा रियासतों में ज्यादातर ऐतिहासिक प्रशासनिक कागजात और आधिकारिक पत्र मोडी लिपि में लिखे जाते थे। कुछ सदियों तक मराठी भाषा में दो लिपि प्रचलित थी। पब्लिक साइनेज, लिखावट और अनाउंसमेंट के लिए देवनागरी, जबकि किसी भी तरह के हाथ से लिखे कागजात और पत्र के लिए मोडी लिपि का प्रयोग होता था।

प्रिंटिंग की शुरूआत के बाद देवनागरी ज्यादा प्रिंट फ्रेंडली होने की वजह से ज्यादा इस्तेमाल होने लगी। मोडी लिपि (स्क्रिप्ट) 1950 से पहले मराठा रियासतों के स्कूलों में पढ़ाई जाती थी और तंजौर से लेकर इंदौर तक हमारे देश भर में मोडी लिपि में कई कागजात उपलब्ध है।

हमारे अपने कानपुर के बिठूर की मराठा पेशवा मौजूदगी का मोडी

लिपि से गहरा संबंध संभव है। 1818 से निर्वासित पेशवा का (तब मराठा रियासतों के संघ के प्रधानमंत्री) निवास-स्थल कानपुर स्थित बिठूर रहा जो कि भारत के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के महानायक जैसे नाना साहब पेशवा, रानी लक्ष्मीबाई, तात्या टोपे का क्रीडांगण भी रहा।

उत्पत्ति सिद्धांतः मोडी लिपि असल में देवनागरी लिपि के समानांतर ''स्पीडी राइटिंग स्टाइल'' या ''शार्टहैंड'' के तौर पर शुरू हुई थी। इस लिपि की शुरूवात के दो सिद्धांत हैं। एक के अनुसार यह पुरानी ब्राम्ही लिपि से विकसित हुई है, जबकि दूसरा सिद्धांत इसका सर्जक हेमाद्रि पंत को मानता है, जो देवगिरी के यादव राजाओं के प्रधानमंत्री थे। हेमाद्रि पंत बहुआयामी प्रतिभाशाली व्यक्तित्व और हेमाडपंती आर्किटेक्चर के जनक हैं।मोडी नाम शायद असल में मोड़ना से आया होगा जिसका मतलब है तोड़ना या मोड़ना।

इस लिपि से लेखक लगातार लिख सकता था, जिसमें उसे हाथ उठाने या लिखने के धारा प्रवाह को तोड़ने की बहुत कम आवश्यकता होती थी। मोडी लिपि की एक खास बात यह है कि इसमें लगातार शिरोरेखा (देवनागरी लिपि में शब्दों ऊपर खींची जाने वाली रेखा) होती है और लिखे हुए शब्दों के बीच कोई खास अन्तर नहीं होता। इस लिपि में गुजराती (महाजनी) और देवनागरी लिपि से काफी मिलती–जुलती बातें हैं। हालांकि मोडी लिपि मूल रूप से मराठी लिखने के काम आती थी। लेकिन कभी-कभी कोंकणी, हिंदी, गुजराती, कन्नड़, तेलगु और संस्कृत भी इसी लेखन शैली में लिखे जाते थे।

वाचकों की मोडी लिपि के विषय में जिज्ञासा को पुरस्कृत करने के लिए लेख के साथ छत्रपति शिवाजी महाराज का स्व लिखित पत्र एवं मोडी की अक्षरमाला का चित्र संलग्न है।

–सारंग एस. नांदेडकर
सहायक कुलसचिव, शैक्षणिक कार्य
भा.प्रौ.सं. कानपुर

मेरी दृष्टि में...

आईआईटी कानपुर में चलिए रखते हैं कदम
वर्णन को अति उत्साहित मेरी यह कलम

शिक्षा और शोध में परिष्कृत,
पद्मश्री जैसे सम्मानों से अलंकृत,

यहां मिलते हैं अनेकों प्रतिमान,
जिन्होंने गढ़े हैं नित नए कीर्तिमान।

प्रौद्योगिकी में शीर्ष है जिसका नाम,
वृहद विस्तार देते आविष्कारों के परिणाम।

उज्जवल भविष्य के सपने लिए छात्र यहां आते हैं,
कुछ उच्चतम पदों पर, कुछ यूनिकॉर्न बनाते हैं।

शीतलता और सुकून है हरे भरे मैदानों में,
नाचते मोर और गाते पंछी पेड़ों की डालों में,

विविध गतिविधियां, संभावनाओं से भरी,
जहां अनेकों प्रतिभाएं हो जाएं हरी।

उद्घोष से उद्भूत हो नई ऊर्जा,
जिसमें प्रयत्नशील हो तन का पुर्जा पुर्जा।

अंतराग्नि में प्रत्येक मुख पे रंगत होती है,
जो उल्लासपूर्ण अंतस की अग्नि होती है।

समग्र सर्वांगीण विकास के हैं अवसर,
परिसरवासी भी प्रतिभागी हो, हर्षाएं जिस पर

सर्वोच्चतम उपलब्धियां नित नई गढ़ता रहे,
यह संस्थान उत्तरोत्तर यूं ही बढ़ता रहे।

–रंगोली अवस्थी
पी.के. केलकर पुस्तकालय
भा.प्रौ.सं. कानपुर

मुझे अपने कॉलेज ले चलो यारों।

किसी चाय में उस एमटी वाली चाय जैसी बात कहां?
मेरे यारों से बातें रोज होती हैं, नसीब में मुलाकात कहां?
हां, टहलने निकल जाता हूं कभी कभार यहां पर भी,
लेकिन दोस्तों के साथ जागने वाली अब वो रात कहां?

एक विंग में साथ-साथ रहने वाले वो दिन, मुझे दे चलो यारों
आज फिर से याद आई है, मुझे अपनी कॉलेज ले चलो यारों

गैलेक्सी में दोस्तों के साथ बिताई वो मस्ती भरी रात कहां?
डोलियां सजती हैं पर वो हाल वन की बारात कहां?
इन्फर्नो में सब लग जाते है अपने हॉल को जिताने में
अब उन यारों के साथ नोक-झोंक भरी सौगात कहां?

ओएटी पर वो हाल एंथम, आज भी मेरे कानों में गुंजता है (2)
अगर हो सके तो मुझे उसी हाल के उसी कमरें में ले चलो यारों
आज फिर से याद आई है, मुझे अपने कॉलेज ले चलो यारों

पूरी क्लास मे सोने के बाद, लेक्चर हॉल की घंटी की आवाज कहां?
खुलवा कर हंसाने में अपने सीनियर्स जैसा अंदाज कहां?
मैंने बहुत ढूंढा इन लम्हों को जिंदगी की किताबों में
लेकिन आज-कल इन किताबों में वो सीखने वाली बात कहां?

चाहे जन्मदिन हो या कोई पीओआर, जीपीएल में दोस्तों से खाई वो लात कहां?
एक्जाम से पहले उस लाईब्रेरी में गुजारी वो अब वो रात कहां?
वो डी-जैक की छत, वो अन्तराग्नि के मजे, वो जेडस्क्वायर की फिल्में
जब सुकूं से बैठता हूं तब याद आता है उस कल में खोया मेरा आज कहां?

सुना है इस सफर में एक बार और गुजरना है वहां से?
अब वापसी में कुछ खुशियों की मिठाई साथ ले चलो यारों
आज फिर से याद आई है, मुझे अपनी कॉलेज ले चलो यारों!

–संजय खरा (कलमकार)
छात्र हिंदी साहित्य सभा
भा.प्रौ.सं. कानपुर

राजा और मछली

प्रातः सवेरे राजा सत्यव्रत गये नदी में करने स्नान,
नाम जपन् गायत्री करते लगा हरि चरणों में ध्यान।
सूर्योदय पर सूर्यदेव को हुए अर्घ्य देने को तत्पर,
हाथों में जल भरा तो देखा इक छोटी मछली थी उसपर।
एक किनारे उसे छटककर भरा जो निज हाथों में पानी,
फिर से उस पानी पर बैठी मछली बोली मीठी वाणी।

(मछली राजा से)
"हे राजा मैं प्रजा हूं अबला कृपया मुझको यहां न ठेलो,
बड़े जीव सब खा जाएंगे दया निधि निज शरण में लेलो।"
मछली कैसे बोल सके यह नृप ने न विश्वास करा,
फिर भी सुन वह अनुपम वाणी भीतर दिव्योल्लास भरा।

(राजा मछली से)
"आओ तुम मेरे पात्र में बैठो राजभवन को ले जाऊंगा,
करेंगे सेवा दास तुम्हारी महल में आश्रय दिलवाऊंगा।"
मछली गदगद होकर बोली, "राजा मैं तो हुई निहाल,
करुणामय तुम प्रजा में सबसे छोटे का भी रखते ध्यान।"
शरण को पाकर महल में आकर मछली की क्या हुई अवस्था,
आगे पीछे सेवक दौड़ें राजा ने सब करी व्यवस्था।

महल में मीन

अगली प्रातः राजा बोले मीना भय हुआ क्या कम,
रोआंसी सी मीना बोली, "यहां तो मेरा घुटता दम"।
मछली को हुआ बड़ा देखकर डाला बड़े कूप में तरने,
वहां पे जाकर आनन्द पाकर राजा से लगी बातें करने।
सौम्य हृदय का निर्मल राजा सदा कृष्ण का करता ध्यान,
पर मछली के रूप व वाणी उसको लगते अमृत पान।
हुआ शीघ्र तन का विस्तार मीन प्राण रुद्ध करे गुहार,
राजा करके सोच विचार पुष्कर में डाले इस बार।
पुष्कर से भी हुई विशाल लगा वहां भी घुटने दम,
बोली राजा वहां पे भेजो जहां का पानी पड़े न कम।
मधुर प्रार्थना उसकी सुनकर बोले राजा खूब सोचकर,
"एक ही स्थान मैं जानूं ऐसा प्रायः असीमित वह है सागर"।

(मछली राजा से)
"सागर में तो बड़ी मछलियां शातिर धीवर मकर तिमिंगल,
सब मेरे प्राणों के प्यासे वहां न भेजो वीर महाबल।"
नम्र भाव से बोले राजा "मैं क्या दूंगा तुमको वास,
बिन्दु से अनन्त्य हुई तुम कैसा विस्मय क्या परिहास?
कौन हो तुम हो मोहक मछली दर्शन से मिटता संताप,
मेरी भक्ति के प्रयोजन कहीं नारायण नहीं तो आप?"
सत्यव्रत का पावन हृदय सदा मीन के संग को चाहे,
लोहा चुम्बक को पहचाने चाहे कोई न भी बताए।

(मछली राजा से)
"होगी वर्षा चारों ओर आएगी घनघोर प्रलय,
किन्तु तुम व्याकुल न होना सदा तुम्हारे साथ हूं मैं।
नभचर हों या थलचर प्राणी ज्ञान के वाहक वेद संतगण,
वृक्ष बीज और सस्य वनस्पति सबका तुम्हें है करना रक्षण।
चाहता है बचाना जो इक छोटी मछली के भी प्राण,
राजा वही समग्र प्रजा का कर सकता सच्चा कल्याण।
दयावान हे सत्यपरायण चुना है तुमको तुम्हीं हो सक्षम,
करो प्रयास बिन हुए निराश बीत जाएंगे संकट के क्षण।
मेरा यह निर्देश मानकर सेवा भाव से करो यह काम,
मेरी महिमा मेरी सत्ता परम्ब्रह्म को जाओगे जान।"

यह कहानी है एक ऐसे राजा की है जिसने एक छोटी मछली की मदद की, और उस मछली की जिसने बदले में सारी दुनिया की मदद की। यह श्रीमद्भागवत् के आठवें स्कन्ध के चौबीसवें अध्याय से उद्धृत है।

–प्रोफेसर विपुल अरोड़ा
विद्युत अभियांत्रिकी विभाग
भा.प्रौ.सं. कानपुर

था बहुत कुछ सोचने को।

हां ये सच है कुछ नहीं हूं
अब ना कहता मैं सही हूं
कम से कम मैं जानता हूं
सच यही है मानता हूं

था पीठ अपनी थपथपाता
रास्तों में गुनगुनाता
मैं जहां में सबसे बढ़कर
मुझसे बेहतर कौन है

मैं सिंह के गर्जन से भी
ऊंचा गरजता इस जहां में
फिर क्या बिजली, क्या बवंडर
सामने सब मौन हैं

आंख में ले तेज इतना
जितनी सूरज में है अग्नि
जब मिलाऊं शत्रु से तो
खुद बा खुद आंखें झुका ले

आने वाली अड़चनें सब
देख कर संकल्प मेरा
आते आते ठहर जाएं
दो कदम पीछे हटा लें

मैं ही तो सबसे अनोखा
हर घड़ी था ये सुरूर
थी जो ऐसी सोच मेरी
विश्वास था या था गुरूर

ना सही था, कुछ नहीं था
जाल था बस, खुद बुना था
आत्मबल बढ़ता है ऐसे
ये कहीं मैंने सुना था

खुद की ही दुनिया बना ली
खुद में खुद को खोजने को
पर असल दुनिया में आकर
था बहुत कुछ सोचने को

सच यही था कुछ नहीं था
ना कि अब भी हो गया हूं
पर निरंतर सोचता हूं
जानता हूं, ठानता हूं

हां ये सच है कुछ नहीं हूं
अब ना कहता मैं सही हूं
कम से कम मैं जानता हूं
सच यही है मानता हूं

–सौभाग्य पाण्डेय
छात्र हिंदी साहित्य सभा
भा.प्रौ.सं. कानपुर

कैंपस जीवन के बहुरंगी आयाम में केंद्रीय विद्यालय की उपस्थिति

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, कानपुर का कैंपस केवल शैक्षणिक उत्कृष्टता का केंद्र ही नहीं, बल्कि जीवन के विविध रंगों से सुसज्जित एक सजीव परिसर है। 'कैंपस जीवन के बहुरंगी आयाम' थीम पर आधारित अंतस पत्रिका के इस अंक में केंद्रीय विद्यालय की उपस्थिति भी एक ऐसे ही उज्ज्वल रंग के रूप में उभरती है, जो इस प्रांगण को निरंतर ऊर्जा, आशा और संवेदनशीलता से भरता है।

26 जून 1965 को स्थापित केंद्रीय विद्यालय, आईआईटी कानपुर, संस्थान के शैक्षणिक परिवेश का एक अभिन्न अंग है। बीते छह दशकों से यह विद्यालय संस्थान की अकादमिक गतिविधियों, आधुनिक सुविधाओं एवं विद्वान शिक्षकों की विशेषज्ञता से सतत पोषित होता हुआ अपने गौरवपूर्ण स्थान पर स्वाभिमान के साथ खड़ा है। यह विद्यालय न केवल शिक्षा का केंद्र है, बल्कि मूल्यों, संस्कारों और अनुशासन की प्रयोगशाला भी है।

प्रातःकाल संस्थान की विभिन्न सड़कों से विद्यालय की ओर बढ़ते विद्यार्थियों की कतारें कैंपस को सजीवता प्रदान करती हैं। राष्ट्रीय पर्वों के अवसर पर संस्थान के समारोहों में उनकी प्रतिभा की झलक दिखाई देती है। खेल के मैदानों, सभागारों और खुले स्थानों में उनकी उपस्थिति संस्थान के वातावरण में ताजगी, उल्लास और आशा का संचार करती है। वे ऐसे प्रतीत होते हैं जैसे किसी सुसंस्कृत उद्यान में खिले रंग-बिरंगे पुष्प।

यह विद्यालय भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, कानपुर के विद्वान प्रोफेसरों एवं कर्मचारियों के लगभग 900 बच्चों के भविष्य निर्माण का सशक्त आधार है। विद्यालय बाल वाटिका से कक्षा 12 तक समय सापेक्ष, गुणवत्तापूर्ण एवं समग्र शिक्षा प्रदान कर रहा है। कक्षा 5 तक दो सेक्शन तथा कक्षा 6 से 12 तक पांच सेक्शन के साथ विद्यालय सुचारु रूप से संचालित है। आगामी सत्र से कक्षा 11 एवं 12 में विज्ञान, वाणिज्य एवं मानविकी विषयों की उपलब्धता के साथ यह विद्यालय विद्यार्थियों की विविध शैक्षणिक रुचियों को सशक्त दिशा देने के लिए तत्पर है।

निःसंदेह, केंद्रीय विद्यालय आईआईटी कानपुर के कैंपस जीवन के बहुरंगी आयाम में एक ऐसा रंग है, जो आने वाली पीढ़ियों के सपनों को आकार देता है और संस्थान के प्रांगण को सतत जीवंत बनाए रखता है।

–रवीश चंद्र पाण्डेय
प्राचार्य
केंद्रीय विद्यालय
भा.प्रौ.सं. कानपुर

एक हैं छोटे पंडित...!

एक हैं छोटे पंडित, बस नाम के ही छोटे,
करम इनके ऐसे, कि गश खाएं मोटे-मोटे..!

चाचा चौधरी का कंप्यूटर भी, इनके आगे फेल है,
मोटू-पतलू, चाचा-साबू, इनके लिए बस खेल हैं।
टिक न पाए कोई आगे, सबको पानी पिलाते हैं,
अपनी टेढ़ी बातों की जलेबी दुनिया को खिलाते हैं।

जब साल के बीच में 'हाफ इयरली' का रिज़ल्ट आया,
तब बड़े सरकार ने छोटे पंडित को पास बुलाया।
पुचकारा-दुलारा और सिर पर हाथ फिराया,
फिर हौले से पूछा -'बेटा, कितने नंबर लाया?

देख तुम्हारी मेहनत, लगता सबका मान बढ़ाया,
सच बता मेरे लाल, इस बार क्या कीर्तिमान बनाया?
छोटे ने खुशी से अपना इमेजिनरी बल्ला घुमाया,
70 प्रतिशत आए कहकर अपना परचम लहराया।

सुनकर छोटे का विजय-लक्ष्य, बापू को रोना आया,
सपनों का ऐसा रायता देख, बीपी मीटर गरमाया।

बेटा, क्या नहीं लगता अब भयंकर पढ़ना चाहिए?
नब्बे प्रतिशत लाकर और धुरंधर बनना चाहिए..!
तुम जैसे कुल-दीपों से जब ज्ञान का अर्चन होगा,
तुम अव्वल आओगे तभी तो देश सुदर्शन होगा।

छोटे पंडित ताड़ गए थे दाल में कुछ तो काला है,
लाड-प्यार का ये दरिया, क्यूं पिता ने आज उछाला है?

पर बाबा के हर 'बाउंसर' को, बाउंड्री पार निकाला है,
आखिर छोटे पंडित भी तो शैतान की ही खाला हैं !

छोटे पंडित ने शब्दों का, ऐसा दांव घुमाया,
देख दलीले बेटे की, बाबा का सर चकराया।

बोले - धीरज धरिए पिता जी!
जब देखो आप चलाते रहते, चिंताओं की रेल है...
शुक्र मनाओ मैं पास हूं, वरना बाकी छह तो फेल हैं !,

पिताजी भौचक्के, सुनके रह गए दो पल दंग..!
संधि-वार्ता के बीच में ही हुई ऐलान-ए-जंग..!
लेके डंडा दौड़े मालिक शक्ति-प्रदर्शन करने
छोटे पंडित भागे अपना नाम सुदर्शन करने..!

भागे ऐसे ज्यों पीछे अब, परमाणु परीक्षण होगा,
नब्बे प्रतिशत का सपना, बस केवल 'दर्शन' होगा।
धुरंधर बनने की राह में डंडे का भय भारी है,
अब तो बस अगले साल की 'धुआंधार' तैयारी है..!

नोटः कालान्तर में सुधरे पंडित वाया बड़े सरकार
एनआईटी से हुए इंजीनियर, अब मैनेजर इन भारत सरकार
कहां पलटी बाजी और कैसे हुआ ये चमत्कार?
सुनाएंगे आपको बाकी कथा, अंतस में अगली बार...।

–डॉ. ज्योति मिश्रा
बीएसबीई
भा.प्रौ.सं. कानपुर

आईआईटी कानपुर प्रांगण: जीवन आत्मनिर्भरता, अभिव्यक्ति, संघर्ष और सृजन की तपोभूमि

संघर्ष, असफलता और आत्ममंथन की तपोभूमि है
आईआईटी।

कैंपस-प्रांगण में जीवन-दर्शन, ज्ञान की खोज सिखाती
आईआईटी।

नित नए आविष्कारों की कसौटी पर, अल्गोरिदम की भाषा
है आईआईटी।

की गणित से, कभी जीवन से, जिज्ञासा का बोध कराती
आईआईटी।

लैब की रोशनी में जागती रातें, एकांत से संवाद कराती
आईआईटी

मौन प्रयोगों और पुस्तकों में छिपे सत्य को धैर्य से सुलझाती
आईआईटी।

स्टूडेंट जिमखाना की नीतियों में, नेतृत्व-भाव का अभ्यास
कराती आईआईटी।

संवाद, सहमति और दायित्व से लोकतंत्र सिखाती
आईआईटी।

संस्कृति और उत्सव के रंगों को, बहुरंगी रूप में समेटे
आईआईटी।

व्यक्तित्व, भावनाएं और अनुभवों के आयाम प्रतिबिंबित करती
आईआईटी।

नित नए प्रयोगों में निहित तथ्यों का स्मरण कराती
आईआईटी।

असफलताओं के अंतर्द्वन्द में संभावनाओं की अलख जगाती
आईआईटी।

बोलियों, अठखेलियों और उतार–चढ़ाव का सुंदर समागम है
आईआईटी।

भिन्नताओं में एकता की जीवंत तस्वीर उकेरती आईआईटी।

कैंपस की मित्रता रिश्तों की नींव बुनती, भावनाओं की डोर
है आईआईटी।

साझा संघर्षों में जन्मी दोस्ती, जीवन भर के लिए बेमिसाल
है आईआईटी।

डर, हिम्मत, थकान और उम्मीद में आत्मचिंतन का बोध
कराती आईआईटी

स्वयं से संघर्ष, स्वयं की खोज में स्थिर संकल्प जगाती
आईआईटी।

पेडों की शीतल छांव, शांत सडकें, मोरों के नृत्य में स्मृतियों
को संजोती आईआईटी।

कारगिल चौक के स्तभों से, विजय दिवस की राट्र चेतना
जगाती आईआईटी।

जिंदगी के अनुत्तरित प्रश्नों से निरंतर संवाद करना
सिखाती आईआईटी।

घड़ी की सुइयों से परे, तकनीकी और वैज्ञानिक खोजों का
अर्थ समझाती आईआईटी।

हफ्तों की उलझन, जीवन-पहेली और शोध की मौन कसौटी
में, एक साधना है आईआईटी।

सालों की मेहनत में एक छोटी सी सफलता का अर्थ
समझाती आईआईटी।

राष्ट्र निमार्ण, नवाचार, वैश्विक प्रतिष्ठा और आत्मनिर्भर
भारत की नींव है आईआईटी।

जीवन के संघर्षों में, जीत में नम्रता और हार में धैर्य
सिखाती आईआईटी।

–योगेश सिंह (पीएचडी छात्र)
पदार्थ विज्ञान विभाग
भा.प्रौ.सं. कानपुर

तुम्हें है बहुत चलना अभी

शादी के बाद हर स्त्री की जिंदगी बदल जाती है, उनमें से कईयों की तो निखर जाती है, हयात ही खान हो जाती है और की अपनी जिंदगी को परिवार के लिए वे समर्पित इस कदर समझ लेती है कि अपना अस्तित्व भुला बैठती है ऐसे में कुछ में होना चाहिए

तुम रुक नहीं सकती, तुम थक नहीं सकती
तुम्हें है बहुत चलना अभी...

हर रिश्ते को निभाना है
सबको साथ लेकर चलना है
जिम्मेदारियां है बहुत अभी
तुम रुक नहीं सकती, तुम थक नहीं सकती
तुम्हें है बहुत चलना अभी...

अपने अंदर के द्वंद से लड़ो तुम
हर हाल में हार के या जीत के पानी के निकलो तुम
बीच मझधार तुम बैठ नहीं सकती
तुम रुक नहीं सकती, तुम थक नहीं सकती
तुम्हें है बहुत चलना अभी...

कई जिंदगियां है जुड़ी तुमसे
कईयों के सपने हैं बनना तुम्हारे जैसा
तुम ऐसे हार नहीं सकती तुम रुक नहीं सकती
तुम थक नहीं सकती, तुम है बहुत चलना अभी...

बहुत चुनौतियां है सामने अभी
इनसे मुख मोड़ के जी नहीं सकती
तुम ऐसे थक हार कर बैठ नहीं सकती
तुम रुक नहीं सकती, तुम थक नहीं सकती
तुम्हें है बहुत चलना अभी...

अपनी जिंदगी भी जियो तुम
अपने सपनों को भी करो पूरा
क्यूं छोड़ रही हो उसको दूसरों के लिए अधूरा
अपने सपनों को मार कर तुम जी नहीं सकती
तुम रुक नहीं सकती, तुम थक नहीं सकती
तुम्हें है बहुत चलना अभी...

परंपराओं में रखा है खुद को बांधकर
कभी नहीं गई हो सीमा लांघकर अच्छा है
पर कुछ तुम्हारा भी अस्तित्व है इस दुनिया में पहचानो तो
ये तुम भूल नहीं सकती...
तुम रुक नहीं सकती, तुम थक नहीं सकती
तुम्हें है बहुत चलना अभी...

इस भागदौड़ में रुको जरा तुम
खुद क्या थी और क्या हो गयी हो
इसको भी विचारो तुम
हर प्रवाह के साथ मत बहो तुम
उल्टी धारा में भी गोता लगाना सीखो तुम
तुम रुक नहीं सकती, तुम थक नहीं सकती
तुम्हें है बहुत चलना अभी...

कितनी प्रतिभाएं है तुममें उनको भी तो जरा निखारो तुम
हर किसी के लिए उपलब्ध हो
खुद के लिए भी तो वक्त निकालो तुम
कितनी आत्मविश्वास से भरी थी तुम
इस पर भी मंथन करो जरा तुम
तुम रुक नहीं सकती, तुम थक नहीं सकती
तुम्हें है बहुत चलना अभी...

अब तक हर रिश्तों से पहचानी गयी
तुम्हारी भी है एक पहचान ये भी जानो तुम
तुम ऐसे थक हार के बैठ नहीं सकती
तुम रुक नहीं सकती, तुम थक नहीं सकती
तुम्हें है बहुत चलना अभी...

–एकता बब्बर
परिसरवासी
भा.प्रौ.सं. कानपुर

कुछ लोग हैं

दौड़ना न चाहें हम, जीवन के सफर में
यह तो कुछ लोग है जो हमें दौड़ाते हैं।

चांदी देख चांद की, चकोर बने लोगों को
चंद्रमा की खोज में राह भटकाते हैं।

अपनी ही बगिया को, जगमगाने वालों को
बड़ी-बड़ी मील में ये ईंधन बनाते हैं।

कछुए की ढ़ाल यूं, मगन रहो ना तुम
तेज चाल वाले यहां खूब मिल जाते हैं

हमारा ये जो दिल है, यही मुश्किल है
दिमाग वाले दुनिया में बाजी मार जाते हैं

सफर के दीवानों को, मस्त चाल वालो को
ज्ञानी बन नई-नई नीतियां सिखाते हैं।

ये शक बेफिजूल है, तेरी बड़ी भूल है
नाकाबिल है तू ऐसा तुझको जताते हैं

खुद से अंजान सब, खुद से दुःखी है सब
खुद को अनदेखा कर दुनिया चलाते है।

जागो मेरे दोस्तों, ना भागो मेरे दोस्तों
आंखें मूंद आपकी ये मूरख बनाते है

न तेरा कोई मोल है, तू बेहद अमोल है
बेकीमती बता ये तेरी कीमत लगाते हैं

खुद पे यकीं तू कर, फिर यूं न दर बदर
खुद को फिरा के यूं ना खुद को सताते हैं

जिन्दगी को जानो तुम, थोड़ा पहचानो तुम
दुनिया से चलो हम तमस मिटाते हैं

आज रुक जाओ सब, कारज विराम दो
ऊंची सी उड़ान हम भरके दिखाते हैं

–उत्कर्ष केसरवानी
छात्र हिंदी साहित्य सभा
भा.प्रौ.सं. कानपुर

समरसता

प्रत्यभिज्ञा-दर्शन में समरसता के सिद्धांत का एक विशिष्ट स्थान है। जैसे एक नदी समुद्र में मिलकर समरसता को प्राप्त होती है और समुद्र तथा उस नदी में किसी प्रकार की भी पृथकता या भिन्नता नहीं रहती, उसी प्रकार जब आत्मा परमात्मा-भाव को प्राप्त होकर पूर्णतः एक शिवरूप हो जाती है तो उसे सामरस्य कहते हैं। 'स्वच्छंदतंत्र' के टीकाकार श्री क्षेमरान ने लिखा है कि ''समो रसो यस्मिन् स समरसो लोलीभावः'' अर्थात् जिसमें समान रस हो, ऐसे लोलीभाव या ललक की भावना को सामरस्य कहते हैं। श्री उत्पलदेव ने समरसता की व्याख्या इस प्रकार की ''भावानामेकैकस्य निर्वाणेपि परमेश्वरस्पर्शरसो खंडित एवेति सामरस्यम'' अर्थात् निर्वाण हो जाने पर प्रत्येक पदार्थ का परमेश्वर के स्पर्शरस से अखंडित या अभिन्न हो जाना सामरस्य कहलाता है। 'नेत्र-तंत्र' में समरसता का उल्लेख इस प्रकार मिलता है–

''नाहमस्मि न चान्योस्ति ध्येयं चात्र न विद्यते

आनंदपदसंलीनं मनः समरसीगतम् ।।''

अर्थात जिस समय योगी यह जानने लगता है कि न तो मैं हूं न कोई अन्य है और न ध्येय ही यहां विद्यमान है, परंतु उसका मन आनंदपद में लीन होकर समरसता को प्राप्त हो जाता है, उसी अवस्था को सामरस्य कहते हैं। अभिनवगुप्त का मत है कि 'आनंदशक्ति विश्रांते योगी समरसो भवेत् आनंद-शक्ति में विश्रांति पाने पर ही योगी को समरसता की स्थिति प्राप्त होती है तथा 'चित्ते समरसी भूते द्वयोरौन्मनसी स्थिति' अर्थात् समरसता की स्थिति प्राप्त होते ही चित्त में द्वैत के प्रति उन्मनीभाव जाग्रत हो जाता है अथवा वह पूर्ण अद्वैत को प्राप्त हो जाता है। अभिनवगुप्ताचार्य के मत से समरसता ही 'अनुत्तरावस्था' है, क्योंकि इस स्थिति में पहुंचकर योगी के लिए फिर और कुछ शेष नहीं रहता और वह अखंड आनंदघन शिव रूप हो जाता है। 'बोधसार' में श्री नरहरि स्वामी ने इस सामरस्य का उल्लेख करते हुए लिखा है–

''जाते समरसानंदे द्वैतमप्यमृतोपमम्

मित्रयोरिव दाम्पत्योर्जीवात्मपरमात्मनोः।।''

अर्थात जिस प्रकार परस्पर अत्यंत प्रेम वाले दम्पतियों का द्वैत दोनों के समरस हो जाने पर आनंददायक होता है। उसी प्रकार जीवात्मा एवं परमात्मा के समरस हो जाने पर जो आनंद निर्बाध रूप से उत्पन्न होता है, उसमें यह कल्पित द्वैत या पार्थक्य भी ब्रह्मानंद के तुल्य हो जाता है।

लिंगायत दर्शन में इस समरसता की व्याख्या भिन्न प्रकार से की गई है। वहां लिखा गया है समरसता या सामरस्य शब्द 'समरस' से बना है अर्थात् दो समान रसों के मिलने को समरसता कहते हैं। जैसे यदि दूध को दूध में मिला दिया जाए, तो यह सामरस्य कहलायेगा। किंतु वह सामरस्य, तादात्म्य से पूर्णतया भिन्न है। दूध का दूध से मिलना अथवा नीर का नीर से मिलना सामरस्य है किंतु दूध का जल से मिलना तादात्म्य कहलाता है, क्योंकि यहां जल दूध का रूप धारण कर लेता है और अपना रूप खो देता है जबकि दूध में दूध के मिलने पर दोनों में जो एकरूपता होती है, उसमें कोई भी अपने रूप को किसी में नहीं खोता। इस लिंगायत दर्शन में समरसता को मोक्ष की अवस्था माना गया है और लिखा गया है कि मोक्ष के अवसर पर जीवात्मा अपने ही रूप में स्थित होकर समरसता को प्राप्त करता है।

सभी शैवदर्शनों एवं वेदांत आदि में समरसता के सिद्धांत को अपनाया गया है, किंतु प्रत्यभिज्ञा-दर्शन ने जिस प्रकार समरसता के प्राप्त होते ही जीवात्मा के अखंड आनंद-प्राप्ति को बात कही है, वैसी अन्यत्र नहीं मिलती। प्रसाद भी इसी कारण प्रत्यभिज्ञा-दर्शन के आधार पर समरसता के सिद्धांत का उल्लेख करते हुए प्रत्येक प्राणी को समरसता का अधिकारी घोषित करते हैं, किंतु यह समरसता की स्थिति तो अभेदत्व अथवा शिवत्व की स्थिति है। जैसा कि 'स्पंदकारिता' में लिखा भी है कि यहां पहुंचने पर न तो सुख रहता है न दुःख, न ग्राह्य रहता है न ग्राहक और न गूढ़-भाव ही रहता है, अपितु यहां तो परमार्थतत्व ही शेष रहता है।

दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि विषमता लघुत्व या संकुचित अवस्था की सूचक है और इसके विपरीत समरसता बहुत्व या स्वतंत्रावस्था का सूचक है। यह लघुत्व या संकुचित अवस्था जीवात्मा की स्थिति को ओर संकेत करती है और बहुत्व या भूमा तथा स्वतंत्रावस्था परमात्मभाव या शिवत्व का सूचक है। विषमता की संकुचित अवस्था में सुख और दुःख दोनों रहते हैं, जबकि समरसता को स्वतंत्रावस्था में केवल सुख ही सुख अथवा आनंद ही आनंद रहता है। 'छांदोग्य उपनिषद्' में भी 'नाल्पे सुखमस्ति, भूमा वै सुखम्' कहकर उक्त दोनों स्थितियों का स्पष्टीकरण करते हुए बताया गया है कि अल्प में या लघुत्व में सुख नहीं है, निश्चय ही जो भूमा है वही सुख है।

'कामायनी' में भी इसी कारण इस सुख-दुःखात्मक जगत को 'भूमा का मधुमय दान' कहकर इस बात को ओर संकेत किया गया है कि विषमता से ही समरसता की ओर जाने का मार्ग गया है, भूमा की प्राप्ति भी इसी विषमता से आगे बढ़ने पर हो सकती है और तभी अखंड आनंद भी प्राप्त हो सकता है। किंतु इस विषमता की स्थिति से हटकर जीव समरसता कैसे प्राप्त करें?

इस प्रश्न का समाधान प्रसाद ने 'कामायनी' में बड़े सुंदर ढंग से किया है। इसके लिए उन्होंने सभी क्षेत्रों में समरसता को स्थापना पर बल दिया है और इस दार्शनिक विचारधारा को व्यावहारिक जीवन के अनुकूल बनाकर लिखा है कि गृहस्थ जीवन में नारी और पुरुष के अंतर्गत रहने वाली विषमता को दूर करके समरसता की स्थापना होना आवश्यक है तथा सामाजिक जीवन में अधिकारी या अधिकृत अथवा शासक या शासित के अंतर्गत व्याप्त विषमता का उच्छेद करके समरसता की स्थापना होना अत्यंत आवश्यक है। इतना ही नहीं, ये जानते थे कि बुद्धिवाद के द्वारा मानव कल्याण नहीं हो सकता, क्योंकि बुद्धिवाद विषमता को जन्म देता है और इसी को अपनाने के कारण विश्व में सर्वत्र संघर्ष, विप्लव, युद्ध आदि दिखायी देते हैं। इसी कारण उन्होंने इस बुद्धिवाद के साथ श्रद्धा का समन्वय करके अथवा तर्कपूर्ण बुद्धि और भाव-संवलित हृदय का समन्वय करके मानव मात्र के लिए समरसता की योजना प्रस्तुत की है।

आधार ग्रंथ:

1. कामायनी में काव्य, संस्कृति और दर्शन, डॉ. द्वारिका प्रसाद सक्सेना।

2. कामायनी, जयशंकर प्रसाद।

3. दर्शन दिग्दर्शन, राहुल सांकृत्यायन।

4. हिंदी साहित्य कोश, भाग–1।

5. कामायनी : एक पुनर्विचार, गजानन माधव मुक्तिबोध।

–साभार
डॉ. अमरनाथ

सुधी आलोचक और प्रतिष्ठित भाषाविद् के रूप में ख्याति प्राप्त डॉ. अमरनाथ का जन्म गोरखपुर जनपद (संप्रति महाराजगंज) के रामपुर बुजुर्ग नामक गांव में सन् 1954 में हुआ था। इनकी प्रमुख रचनाएं– नारी का मुक्ति संघर्ष, आचार्य रामचंद्र शुक्ल और परवर्ती आलोचना, आचार्य रामचंद्र शुक्ल का काव्य चिंतन, समकालीन शोध के आयाम, हिंदी भाषा का समाजशास्त्र, हिंदी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली, हिंदी के अंत में हिंदी आदि हैं।

भारत में मानव रहित विमान (ड्रोन) प्रशिक्षण एवं लाइसेंसिंग: आवश्यकता, संभावनाएं और आईआईटी कानपुर आरपीटीओ की अग्रणी भूमिका

हमारे देश भारत की विकास संबंधी आवश्यकताओं की व्यापक श्रृंखला में अब ड्रोन की भूमिका केंद्रीय होती जा रही है, यह बात आस्था से लेकर कृषि जैसे क्षेत्रों पर समान रूप से लागू होती है। 2025 का महाकुंभ मेला आस्था के साथ-साथ भारत की डिजिटल प्रगति का भी एक महत्वपूर्ण प्रतीक बनकर उभरा। इसे पहला "डिजिटल महाकुंभ" कहा गया, जिसमें सुरक्षा एवं निगरानी के लिए आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस आधारित कैमरे, ड्रोन, टि-थर्ड ड्रोन, एंटी-ड्रोन प्रणाली तथा पहली बार अंडरवाटर ड्रोन का प्रयोग किया गया। वर्तमान में देश कृषि, परिवहन, आपातकालीन प्रतिक्रिया, बुनियादी ढांचा तथा अन्य नागरिक क्षेत्रों में नवीन डिजिटल समाधानों के एकीकरण के माध्यम से कार्यकुशलता बढ़ाने और अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने की दिशा में निरंतर प्रयासरत है।

ड्रोन क्रांति-भारत की नई दिशा: 4.0 औद्योगिक क्रांति की अगुवाई करने की आकांक्षा रखने वाले भारत ने 2030 तक ड्रोन का वैश्विक हब बनने का महत्वाकांक्षी लक्ष्य रखा है। इस प्रयास के तहत, देश आने वाले वर्षों में अपने सकल घरेलू उत्पाद (जीसीडी) में 1 से 1.5 प्रतिशत की वृद्धि हासिल करने और कम से कम 5 लाख नौकरियां सृजित करने का लक्ष्य रखता है। ड्रोन इंडस्ट्री इनसाइट्स (डीआईआई) की ग्लोबल स्टेट ऑफ ड्रोन्स 2024 की 2024 रिपोर्ट के अनुसार, वाणिज्यिक ड्रोन उद्योग को आकार देने वाले शीर्ष 10 देशों में भारत का दूसरा स्थान है। पहले स्थान पर संयुक्त राज्य अमेरिका है।

सुव्यवस्थित नीति और 2021 ड्रोन विनियमन: 2021 के ड्रोन विनियमन में ईज ऑफ डूइंग बिजनेस को बढ़ावा देने का उद्देश्य रखा गया है, ताकि भारत में ड्रोन उद्योग को भरोसे, सेल्फ-सर्टिफिकेशन और हस्तक्षेप रहित निगरानी के माध्यम से प्रोत्साहित किया जा सके। इसके तहत अनेक अनुमतियों की प्रक्रिया को सरलीकृत किया गया है। साथ ही भारत के आत्मनिर्भर बनने की दृष्टि के अनुरूप, सरकार ने 14 अहम क्षेत्रों के लिए, प्रोडक्शन लिंक्ड इनसेंटिव (पीएलआई) योजना की घोषणा की है जिसमें ड्रोन और ड्रोन पुर्जे शामिल हैं।

पीएलआई योजना के माध्यम से ड्रोन और एसएसएमई का विकास:

भारत के आत्मनिर्भर बनने की दृष्टि के अनुरूप, सरकार ने 14 अहम क्षेत्रों के लिए प्रोडक्शन लिंक्ड इनसेंटिव (पीएलआई) योजना की घोषणा की है, जिसमें ड्रोन और उनके कंपोनेंट्स यानी ड्रोन पुर्जे शामिल हैं। इस 1.97 ट्रिलियन आईएनआर की संयुक्त योजना का उद्देश्य उत्पादन और निर्यात को बढ़ावा देना है। इस पहल का सबसे बड़ा असर एमएसएमई (सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों) के पारिस्थितिकी तंत्र पर पड़ेगा। इसका कारण यह है कि प्रत्येक क्षेत्र में स्थापित एंकर यूनिट्स को एक मजबूत आपूर्तिकर्ता आधार की आवश्यकता होती है, जो प्रमुख रूप से एमएसएमई द्वारा समर्थित होता है। इसके अलावा, 2021 में ड्रोन के लिए घोषित प्रारंभिक पीएलआई योजना की घोषणा करते समय सरकार ने स्टार्टअप्स और एमएसएमई के सामने आने वाली चुनौतियों का ध्यान रखा था। वर्तमान में सरकार इस क्षेत्र के लिए एक नई और अधिक कुशल पीएलआई योजना तैयार कर रही है। नई योजना में प्रक्रियाओं को सुचारु किया जाएगा ताकि उनका कार्यान्वयन आसान हो और ड्रोन उद्योग के विकास के लिए अधिक वित्तीय संसाधन उपलब्ध कराए जा सकें। इसके साथ ही दस्तावेजीकरण को सरल बनाया जाएगा, जिससे उद्योग को तेजी से समर्थन और प्रोत्साहन मिल सके।

ड्रोन प्रशिक्षण संस्थान - तकनीकी दक्षता और सामाजिक प्रभाव: डायरेक्टोरेट जनरल ऑफ सिविल एविएशन डीजीसीए ने अब तक कुल 234 रिमोट पायलट ट्रेनिंग ऑर्गेनाइजेशन (आरपीटीओ) को मंजूरी दी है, ताकि ड्रोन प्रशिक्षण और कौशल विकास कार्यक्रम उपलब्ध कराए जा सकें। इन प्रशिक्षण संस्थानों ने अब तक संयुक्त रूप से 37418 रिमोट पायलट सर्टिफिकेट जारी किए हैं। ये पहलें भारत की घरेलू ड्रोन उत्पादन क्षमता

बढ़ाने और 'आत्मनिर्भर भारत' को सशक्त बनाने के प्रयासों को उजागर करती हैं। साथ ही, यह 2030 तक भारत को वैश्विक ड्रोन हब बनाने की महत्वाकांक्षा को भी मजबूत बनाती हैं। इन पहलों के चलते भारत में सिविलियन ड्रोन एप्लीकेशन के क्षेत्र में सकारात्मक परिणाम दिखाई देने लगे हैं। ड्रोन तकनीक से बुनियादी सुविधाएं, आपात प्रतिक्रिया और कृषि जैसे क्षेत्रों में क्रांतिकारी बदलाव आए हैं।

कृषि में ड्रोन का महत्व और प्रशिक्षण का योगदानः कृषि क्षेत्र में ड्रोन की भूमिका अब अत्यंत महत्वपूर्ण हो गई है। इनकी मदद से कृषि में निगरानी सटीकता बढ़ाई जा सकती है। ड्रोन के माध्यम से फसल की स्थिति पर निरंतर निगरानी रखकर कीड़ों और रोगों से समय रहते निपटा जा सकता है। इसी प्रकार, सिंचाई, कीटनाशक औषधियों और खाद का अनुकूलन भी किया जा सकता है। इससे न केवल प्रति हेक्टेयर अधिक फसल प्राप्त की जा सकेगी, बल्कि पर्यावरण पर पड़ने वाले नकारात्मक प्रभाव को भी सीमित किया जा सकेगा। ड्रोन की व्यापक निगरानी क्षमता न केवल किसानों, बल्कि परियोजना प्रबंधकों के लिए भी लाभकारी है। इसका परिणाम यह होता है कि प्रिसिशन फार्मिंग (सटीक खेती) को अपनाते हुए टिकाऊ कृषि प्रक्रियाओं को लागू किया जा सकता है। इसी दिशा में सरकार और विभिन्न संस्थान लक्षित पहलों जैसे 'नमो-ड्रोन दीदी' के माध्यम से सहायता प्रदान कर रहे हैं। इस पहल के तहत महिला स्वयं सहायता समूहों (एसएचसी) के सदस्यों को ड्रोन तकनीक का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। इसके साथ ही ड्रोन की कीमत को कम करने के लिए सब्सिडी और कर्ज जैसी सुविधाएं भी उपलब्ध करवाई जा रही हैं। इन प्रयासों के परिणामस्वरूप प्रत्येक एसएचसी संभावित रूप से सालाना 1,00,000 रुपए तक की अतिरिक्त आय अर्जित कर सकती है, जिससे आर्थिक मजबूती और स्थायी आजीविका सुनिश्चित होती है। इसी तरह, 'किसान ड्रोन/ड्रोन' योजना के माध्यम से घरेलू ड्रोन आधारित सिस्टम को सैटेलाइट तकनीक के साथ एकीकृत करके फसल और मिट्टी के स्वास्थ्य की रियल-टाइम निगरानी की जा रही है। इसके फलस्वरूप भूमि आकलन, नुकसान की पहचान और आपदा पश्चात प्रबंधन अधिक कुशलतापूर्वक किया जा रहा है। इसके अलावा, फसल मूल्यांकन, भूमि दस्तावेजीकरण और कीटनाशक एवं पोषक तत्वों के छिड़काव में सुधार हो रहा है।

ड्रोन उद्योग के तेजी से विस्तार के साथ कुशल, उत्तरदायी और प्रमाणित रिमोट पायलटों की मांग भी अभूतपूर्व दर से बढ़ रही है। यही वह बिंदु है जहां रिमोट पायलट ट्रेनिंग ऑर्गेनाइजेशन (आरपीटीओ) देश के ड्रोन भविष्य को आकार देने में निर्णायक भूमिका निभाते हैं। भारत सरकार के ड्रोन नियम-2021 और डीजीसीए की मान्यताओं के अनुसार किसी भी ड्रोन पायलट का प्रशिक्षण केवल अधिकृत आरपीटीओ में ही मान्य है। इसका अर्थ है कि आरपीटीओ न केवल प्रशिक्षण केंद्र हैं, बल्कि यह सुनिश्चित करते हैं कि देश के ड्रोन उद्योग में गुणवत्ता, सुरक्षा और विश्वसनीयता की कसौटी मजबूत बनी रहे। इन्हीं आरपीटीओ में से आईआईटी कानपुर का आरपीटीओ विशेष रूप से उल्लेखनीय है। यह संस्थान केवल पायलट तैयार नहीं करता, बल्कि उन्हें अनुशासित, उत्तरदायी और तकनीकी रूप से सक्षम पेशेवर बनाता है। आईआईटी कानपुर आरपीटीओ अपनी कठोर प्रशिक्षण प्रक्रिया, ईमानदारी और उच्चतम तकनीकी मानकों के लिए पूरे देश में जाना जाता है। इस लेख में ड्रोन प्रशिक्षण की आवश्यकता, महत्व, अवसर और आईआईटी कानपुर आरपीटीओ की विशेषताओं पर विस्तृत चर्चा की गई है।

सुरक्षित ड्रोन उड़ान के लिए पायलट सर्टिफिकेशन

डीजीसीए के नियमानुसार, वाणिज्यिक या सरकारी उद्देश्य से ड्रोन उड़ाने के लिए रिमोट पायलट ट्रेनिंग ऑर्गेनाइजेशन प्राप्त करना अनिवार्य है। लाइसेंस हासिल करने की प्रक्रिया सरल और व्यवस्थित है, परंतु यह तभी सार्थक होती है जब प्रशिक्षण गुणवत्तापूर्ण और प्रमाणित आरपीटीओ के माध्यम से लिया गया हो। योग्य प्रशिक्षण के बिना लाइसेंस केवल कागज पर मान्यता देता है, वास्तविक उड़ान संचालन में निपुणता सुनिश्चित नहीं करता।

आईआईटी कानपुर (आरपीटीओ)- देश का मानक और आदर्श

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) कानपुर को ड्रोन नियम, 2021 के अंतर्गत महानिदेशालय नागर विमानन (डीजीसीए) द्वारा 26 मई 2025 को रिमोट पायलट प्रशिक्षण संगठन (आरपीटीओ) के रूप में प्राधिकरण प्रमाणपत्र प्रदान किया गया। आईआईटी कानपुर आरपीटीओ देश का अग्रणी तकनीकी संस्थान है। आरपीटीओ में नवीनतम ड्रोन, उन्नत सिमुलेटर, अत्याधुनिक प्रशिक्षण मॉडल, अनुसंधान आधारित शिक्षण, वास्तविक परिदृश्य पर आधारित मिशन का उपयोग किया जाता है। यह प्रशिक्षण को केवल सैद्धांतिक नहीं, बल्कि अत्यंत व्यावहारिक और आधुनिक बनाता है। आईआईटी कानपुर का मॉडल देश के अन्य आरपीटीओ को भी उच्च मानक अपनाने के लिए प्रेरित करता है। यह आरपीटीओ आने वाले वर्षों में राष्ट्रीय स्तर पर नीति-निर्माण का आधार बन सकता है। इसलिए आईआईटी कानपुर आरपीटीओ केवल एक प्रशिक्षण केंद्र

नहीं-बल्कि एक राष्ट्रीय आदर्श है।

पारदर्शिता, सत्यनिष्ठा और अनुशासन

आईआईटी कानपुर की शैक्षणिक संस्कृति स्वयं में ईमानदारी और कड़े मानकों का प्रतीक है। यही मूल्य आरपीटीओ के प्रशिक्षण में भी दिखाई देते हैं। प्रशिक्षक हर उड़ान की कड़ाई से निगरानी करते हैं। प्रशिक्षु की प्रगति वास्तविक आकलन से दर्ज होती है। कोई शॉर्टकट नहीं, कोई आंशिक प्रशिक्षण नहीं हर प्रमाणपत्र पूरी तरह योग्यता पर आधारित। इसी उच्च आदर्श ने आईआईटी कानपुर को राष्ट्र का बेंचमार्क आरपीटीओ बना दिया है।

आरपीटीओ प्रशिक्षण में नैतिकता का महत्व

वर्तमान समय में मानवरहित विमान प्रणालियों (ड्रोन) के बढ़ते उपयोग के साथ-साथ ड्रोन प्रशिक्षण केंद्रों, अर्थात रिमोट पायलट ट्रेनिंग ऑर्गनाइजेशन (आरपीटीओ) की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो गई है। ड्रोन नियम, 2021 के लागू होने के पश्चात देश में बड़ी संख्या में आरपीटीओ की स्थापना हुई, जिससे ड्रोन संचालन हेतु प्रशिक्षित मानव संसाधन तैयार करने की दिशा में एक सकारात्मक पहल प्रारंभ हुई। आईआईटी में विमानन नैतिकता, पारदर्शिता और प्रक्रियागत अनुशासन को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाती है। प्रत्येक उड़ान प्रशिक्षण गतिविधि अनुभवी अनुदेशकों की प्रत्यक्ष निगरानी में संपन्न कराई जाती है तथा सभी उड़ान संबंधी विवरण वास्तविक समय के आधार पर पूर्ण ईमानदारी के साथ लॉगबुक में दर्ज किए जाते हैं। यह सुनिश्चित किया जाता है कि जिस अनुदेशक द्वारा उड़ान प्रशिक्षण कराया गया हो, वही संबंधित प्रविष्टियों का सत्यापन एवं हस्ताक्षर करे। उच्च नैतिक मानकों, गुणवत्तापूर्ण प्रशिक्षण प्रणाली तथा पारदर्शी कार्यप्रणाली के कारण आईआईटी कानपुर आरपीटीओ न केवल तकनीकी उत्कृष्टता के लिए, बल्कि विमानन क्षेत्र में नैतिक मूल्यों के पालन हेतु भी विशिष्ट पहचान रखता है। ऐसे संस्थान देश में सुरक्षित, सक्षम और उत्तरदायी ड्रोन संचालन की नींव को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

भारत के ड्रोन उद्योग के समक्ष चुनौतियां

सरकार द्वारा ड्रोन उद्योग के विकास के लिए उठाए जा रहे कदमों का स्वागत किया जाना चाहिए। इन पहलों के माध्यम से देश में एक मजबूत और टिकाऊ उत्पादन क्षेत्र विकसित करने को बढ़ावा मिल रहा है। फिर भी, इस वृद्धि को दीर्घकाल तक बनाए रखने के लिए घरेलू स्तर पर एक उच्च मांग वाला सशक्त बाजार होना अत्यंत आवश्यक है। यदि भारत 2030 तक वैश्विक

स्तर पर ड्रोन का हब बनने का लक्ष्य प्राप्त करना चाहता है, तो इस प्रकार का बाजार निर्णायक साबित होगा। इसके अतिरिक्त, ड्रोन स्टार्टअप्स को अपनी क्षमता का विस्तार करने और नवाचार को आगे बढ़ाने के लिए पर्याप्त सहयोग और सहायता प्रदान करना भी आवश्यक है। तभी ये कंपनियां भविष्य में भारतीय ड्रोन उद्योग का नेतृत्व करने में सक्षम हो पाएंगी। सिर्फ उत्पादन और स्टार्टअप्स तक ही सीमित नहीं-उद्योग की सतत प्रगति सुनिश्चित करने के लिए कुछ अन्य चुनिंदा चुनौतियों पर भी ध्यान देना जरूरी है। इनमें नीतिगत सुधार, तकनीकी प्रशिक्षण, अनुसंधान एवं विकास, और वैश्विक प्रतिस्पर्धा में बने रहने की रणनीतियां शामिल हैं।

प्रतिभा को प्रोत्साहन: एक समर्पित परीक्षण सुविधा की स्थापना और संचालन के लिए कुशल कार्यबल का विकास अत्यंत महत्वपूर्ण है। वर्तमान में, भारत में निजी नवप्रवर्तकों इनोवेटर्स के लिए ड्रोन अन्वेषण, निर्माण और परीक्षण के लिए समर्पित टेस्टिंग एवं इनक्यूबेशन सुविधाओं की कमी है। हालांकि, प्रशिक्षण के लिए आरपीटीओ उपलब्ध हैं, लेकिन ये आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के लिए काफी महंगे साबित हो रहे हैं। इसके परिणामस्वरूप नवप्रवर्तन और कौशल विकास की गति अपेक्षित स्तर तक नहीं पहुंच पा रही है, और इसका असर ड्रोन उद्योग की समग्र प्रगति पर भी पड़ रहा है।

ड्रोन उद्योग के लिए सरकारी पहल और बाजार सृजन

सरकार को चाहिए कि वह सरकारी दबदबे वाले क्षेत्रों के माध्यम से वाणिज्यिक मांग को बढ़ावा दे, ताकि प्रारंभ में एक व्यवहार्य ड्रोन बाजार स्थापित किया जा सके। इस बाजार के माध्यम से ही देश में ड्रोन उत्पादन क्षमता का पूर्ण रूप से दोहन संभव होगा। विभिन्न केंद्रीय एवं राज्य मंत्रालयों के लिए अलग से वित्तीय प्रावधान किए जाने चाहिए, ताकि वे ड्रोन खरीद सकें। इन ड्रोन को बाद में मंत्रालय विभिन्न उपयोगों के लिए किराए या लीज पर उपलब्ध करा सकते हैं। ऐसा होने पर देश में एक सशक्त ड्रोन अर्थव्यवस्था विकसित करने में सहायता मिलेगी। हालांकि, प्राकृतिक रूप से इस उद्योग को विकसित करने के लिए निजी क्षेत्र संचालित ड्रोन उत्पादन और खपत बाजार में बढ़ना बेहतर होगा, क्योंकि निजी क्षेत्र लगातार नवाचार करते हुए आत्मनिर्भर बनाता है। इसके अतिरिक्त, सरकार को एक लक्षित इन्क्यूबेशन एवं स्केलिंग पहल लागू करने पर विचार करना चाहिए। इससे नवप्रवर्तक अपने विचारों का विस्तार कर भारत और वैश्विक ड्रोन बाजार में स्वतंत्र रूप से अपनी पहचान बनाने में सक्षम होंगे। साथ ही, सरकार को मौजूदा तकनीकी संस्थानों में प्रशिक्षणशाला और नवाचार केंद्र स्थापित करने चाहिए। इन केंद्रों पर ड्रोन पायलटों को सब्सिडाइज्ड दरों पर प्रशिक्षण प्रदान किया जा सकेगा। इससे भविष्य के पायलटों के समक्ष प्रशिक्षण सुविधाओं की कमी को कम करने में सहायता मिलेगी, और ये केंद्र ड्रोन नवाचार के लिए व्यवहार्य इन्क्यूबेशन हब का काम भी करेंगे। इसके अलावा, भारत सरकार को ड्रोन उत्पादन पारिस्थितिकी तंत्र स्थापित करने के लिए न्यूनतम मापदंड और आवश्यकताओं की जानकारी देने वाला श्वेत पत्र जारी करना चाहिए। इसका उपयोग करते हुए राज्य सरकारें अपनी आवश्यकताओं और महत्वाकांक्षाओं के अनुसार स्थानीय बाजार की जरूरतों के अनुसार ड्रोन उत्पादन पारिस्थितिकी तंत्र विकसित कर सकती हैं। इन पहलुओं के आधार पर, राज्यों को प्रोत्साहित किया जा सकता है कि वे ड्रोन हब और बाजार विकसित करने के लिए अपने पॉलिसी पेपर जारी करें। साथ ही, राज्यों से यह अपेक्षा की जा सकती है कि वे वार्षिक "स्टेट ऑफ द सेक्टर" रिपोर्ट जारी करें, जिसमें स्थापित हब और उनके लिए की गई गतिविधियों की जानकारी शामिल हो।

—शुभम बैरागी
परियोजना कार्यपालक अधिकारी
वांतरिक्ष अभियांत्रिकी
भा.प्रौ.सं. कानपुर

हार की जीत

मां को अपने बेटे और किसान को अपने लहलहाते खेत देखकर जो आनंद आता है, वही आनंद बाबा भारती को अपना घोड़ा देखकर आता था। भगवत भजन से जो समय बचता, वह घोड़े को अर्पण हो जाता। वह घोड़ा बड़ा संदुर था, बड़ा बलवान।

उसके जोड़ का घोड़ा सारे इलाके में न था। बाबा भारती उसे सुल्तान कहकर पुकारते, अपने हाथ से खरहरा करते, खुद दाना खिलाते और देख-देखकर प्रसन्न होते थे।

उन्होंने रुपया, माल, असबाब, जमीन आदि अपना सब-कुछ छोड़ दिया था, यहां तक कि उन्हें नगर के जीवन से भी घृणा थी। अब गांव से बाहर एक छोटे-से मंदिर में रहते और भगवान का भजन करते थे। "मैं सुल्तान के बिना नहीं रह सकूंगा", उन्हें ऐसी भ्रांति-सी हो गई थी। वे उसकी चाल पर लट्टू थे। कहते, "ऐसे चलता है जैसे मोर घटा को देखकर नाच रहा हो।" जब तक संध्या समय सुल्तान पर चढ़कर आठ-दस मील का चक्कर न लगा लेते, उन्हें चैन न आता।

खड्गसिंह उस इलाके का प्रसिद्ध डाकू था। लोग उसका नाम सुनकर कांपते थे।

होते-होते सुल्तान की कीर्ति उसके कानों तक भी पहुंची। उसका हृदय उसे देखने के लिए अधीर हो उठा। एक दिन वह दोपहर के समय बाबा भारती के पास पहुंचा और नमस्कार करके बैठ गया। बाबा भारती ने पूछा, "खड्गसिंह, क्या हाल है?"

खड्गसिंह ने सिर झुकाकर उत्तर दिया, "आपकी दया है।"

"कहो, इधर कैसे आ गए?"

"सुल्तान की चाह खींच लाई।"

"विचित्र जानवर है। देखोगे तो प्रसन्न हो जाओगे।"

"मैंने भी बड़ी प्रशंसा सुनी है।"

"उसकी चाल तुम्हारा मन मोह लेगी!"

"कहते हैं देखने में भी बहुत सुंदर है। "

"क्या कहना! जो उसे एक बार देख लेता है, उसके हृदय पर उसकी छवि अंकित हो जाती है।"

"बहुत दिनों से अभिलाषा थी, आज उपस्थित हो सका हूं।"

बाबा भारती और खड्गसिंह दोनों अस्तबल में पहुंचे। बाबा ने घोड़ा दिखाया घमंड से, खड्गसिंह ने घोड़ा देखा आश्चर्य से। उसने सैकड़ों घोड़े देखे थे, परंतु ऐसा बांका घोड़ा उसकी आंखों से कभी न गुजरा था। सोचने लगा, 'भाग्य की बात है। ऐसा घोड़ा खड्गसिंह के पास होना चाहिए था। इस साधु को ऐसी चीजों से क्या लाभ?' कुछ देर तक आश्चर्य से चुपचाप खड़ा रहा। इसके पश्चात उसके हृदय में हलचल होने लगी। बालकों की-सी अधीरता से बोला, "परंतु बाबाजी, इसकी चाल न देखी तो क्या ?"

बाबा भारती भी मनुष्य ही थे। अपनी चीज की प्रशंसा दूसरे के मुख से सुनने के लिए उनका हृदय भी अधीर हो गया। घोड़े को खोलकर बाहर लाए और उसकी पीठ पर हाथ फेरने लगे। एकाएक उचककर सवार हो गए, घोड़ा हवा से बातें करने लगा। उसकी चाल को देखकर खड्गसिंह के हृदय पर सांप लोट गया। वह डाकू था और जो वस्तु उसे पसंद आ जाए उस पर वह अपना अधिकार समझता था। उसके पास बाहुबल था, आदमी थे और बेरहमी थी। जाते-जाते उसने कहा, "बाबाजी, मैं यह घोड़ा आपके पास न रहने दूंगा।"

बाबा भारती डर गए। अब उन्हें रात को नींद न आती। सारी रात अस्तबल की रखवाली में कटने लगी। प्रतिक्षण खड्गसिंह का भय लगा रहता, परंतु कई मास बीत गए और वह न आया। यहां तक कि बाबा भारती कुछ असावधान हो गए और इस भय को स्वप्न के भय की नाई मिथ्या समझने लगे।

संध्या का समय था। बाबा भारती सुल्तान की पीठ पर सवार होकर घूमने जा रहे थे।

इस समय उनकी आंखों में चमक थी, मुख पर प्रसन्नता। कभी घोड़े के शरीर को देखते, कभी उसके रंग को और मन में फूले न समाते थे।

सहसा एक ओर से आवाज़ आई, "ओ बाबा, इस कंगले की सुनते जाना।"

आवाज में करुणा थी। बाबा ने घोड़े को रोक लिया। देखा, एक अपाहिज वृक्ष की छाया में पड़ा कराह रहा है। बोले, "क्यों तुम्हें क्या कष्ट है?"

अपाहिज ने हाथ जोड़कर कहा, "बाबा, मैं दुखियारा हूं। मुझ पर दया करो। रामावाला यहां से तीन मील है, मुझे वहां जाना है। घोड़े पर चढ़ा लो, परमात्मा भला करेगा।"

"वहां तुम्हारा कौन है?"

"दुर्गादत्त वैद्य का नाम आपने सुना होगा। मैं उनका सौतेला भाई हूँ।"

बाबा भारती ने घोड़े से उतरकर अपाहिज को घोड़े पर सवार किया और स्वयं उसकी लगाम पकड़कर धीरे-धीरे चलने लगे। सहसा उन्हें एक झटका-सा लगा और लगाम हाथ से छूट गई। उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा, जब उन्होंने देखा कि अपाहिज घोड़े की पीठ पर तनकर बैठा है और घोड़े को दौड़ाए लिए जा रहा है। उनके मुख से भय, विस्मय और निराशा से मिली हुई चीख निकल गई। वह अपाहिज डाकू खड्गसिंह था। बाबा भारती कुछ देर तक चुप रहे और कुछ समय पश्चात कुछ निश्चय करके पूरे बल से चिल्ला कर बोले, "जरा ठहर जाओ।"

खड्गसिंह ने यह आवाज़ सुनकर घोड़ा रोक लिया और उसकी गर्दन पर प्यार से हाथ फेरते हुए कहा, "बाबाजी, यह घोड़ा अब न दूंगा।"

"परंतु एक बात सुनते जाओ।"

खड्गसिंह ठहर गया।

बाबा भारती ने निकट जाकर उसकी ओर ऐसी आंखों से देखा जैसे बकरा कसाई की ओर देखता है और कहा, "यह घोड़ा तुम्हारा हो चुका है। मैं तुमसे इसे वापस करने के लिए न कहूंगा। परंतु खड्गसिंह, केवल एक प्रार्थना करता हूं, इसे अस्वीकार न करना; नहीं तो मेरा दिल टूट जाएगा।"

"बाबाजी, आज्ञा कीजिए। मैं आपका दास हूं, केवल यह घोड़ा न

दूगां।"

"अब घोड़े का नाम न लो। मैं तुमसे इस विषय में कुछ न कहूंगा। मेरी प्रार्थना केवल यह है कि इस घटना को किसी के सामने प्रकट न करना।"

खड्गसिंह का मुंह आश्चर्य से खुला रह गया। उसे लगा था कि उसे घोड़े को लेकर यहां से भागना पड़ेगा, परंतु बाबा भारती ने स्वयं उसे कहा कि इस घटना को किसी के सामने प्रकट न करना। इससे क्या प्रयोजन सिद्ध हो सकता है? खड्गसिंह ने बहुत सोचा, बहुत सिर मारा, परंतु कुछ समझ न सका। हारकर उसने अपनी आंखें बाबा भारती के मुख पर गड़ा दीं और पूछा, "बाबाजी, इसमें आपको क्या डर है?"

सुनकर बाबा भारती ने उत्तर दिया, "लोगों को यदि इस घटना का पता चला तो वे किसी गरीब पर विश्वास न करेंगे। दुनिया से विश्वास उठ जाएगा।" यह कहते-कहते उन्होंने सुल्तान की ओर से इस तरह मुंह मोड़ लिया जैसे उनका उससे कभी कोई संबंध ही न रहा हो।

बाबा भारती चले गए। परंतु उनके शब्द खड्गसिंह के कानों में उसी प्रकार गूंज रहें थे। सोचता था, 'कैसे ऊंचे विचार हैं, कैसा पवित्र भाव है! उन्हें इस घोड़े से प्रेम था, इसे देखकर उनका मुख फूल की भांति खिल जाता था। कहते थे, "इसके बिना मैं रह न सकूंगा।" इसकी रखवाली में वे कई रात सोए नहीं। भजन-भक्ति न कर रखवाली करते रहे परंतु आज उनके मुख पर दुख की रेखा तक दिखाई न पड़ती थी। उन्हें केवल यह ख्याल था कि कहीं लोग गरीबों पर विश्वास करना न छोड़ दें।'

रात के अंधेरे में खड्गसिंह बाबा भारती के मंदिर में पहुंचा। चारों ओर सन्नाटा था। आकाश में तारे टिमटिमा रहे थे। थोड़ी दूर पर गांवों के कुत्ते भौंक रहे थे। मंदिर के अंदर कोई शब्द सुनाई न देता था। खड्गसिंह सुल्तान की बाग पकड़े हुए था। वह धीरे-धीरे अस्तबल के फाटक पर पहुंचा। फाटक खुला पड़ा था। किसी समय वहां बाबा भारती स्वयं लाठी लेकर पहरा देते थे,

परंतु आज उन्हें किसी चोरी, किसी डाके का भय न था।

खड्गसिंह ने आगे बढ़कर सुल्तान को उसके स्थान पर बांध दिया और बाहर निकलकर सावधानी से फाटक बंद कर दिया। इस समय उसकी आंखों में पश्चाताप के आंसू थे।

रात्रि का तीसरा पहर बीत चुका था। चौथा पहर आरंभ होते ही बाबा भारती ने अपनी कुटिया से बाहर निकल ठंडे जल से स्नान किया। उसके पश्चात, इस प्रकार जैसे कोई स्वप्न में चल रहा हो, उनके पांव अस्तबल की ओर बढ़े। परंतु फाटक पर पहुंचकर उनको अपनी भूल प्रतीत हुई। साथ ही घोर निराशा ने पांव को मन-भर का भारी बना दिया। वे वहीं रुक गए। घोड़े ने अपने स्वामी के पांवों की चाप को पहचान लिया और जोर से हिनहिनाया। अब बाबा भारती आश्चर्य और प्रसन्नता से दौड़ते हुए अंदर घुसे और अपने घोड़े के गले से लिपटकर इस प्रकार रोने लगे मानो कोई पिता बहुत दिन से बिछड़े पुत्र से मिल रहा हो। बार-बार उसकी पीठ पर हाथ फेरते, बार-बार उसके मुंह पर थपकियां देते। और कहते थे, "अब कोई गरीबों की सहायता से मुंह न मोड़ेगा।"

थोड़ी देर के बाद जब वह अस्तबल से बाहर निकले तो उनकी आंखों से आंसू बह रहे थे। ये आंसू उसी भूमि पर ठीक उसी जगह गिर रहे थे, जहां बाहर निकलने के बाद खड्गसिंह खड़ा होकर रोया था। दोनों के आसुंओं का उस भूमि की मिट्‌टी पर परस्पर मेल हो गया।

—साभार
सुदर्शन

यह कहानी हिंदी की प्रसिद्ध कहानियों में से एक है और इसे हिंदी के प्रसिद्ध लेखक सुदर्शन ने लिखा है। सुदर्शन का वास्तविक नाम बदरीनाथ भट्‌ट था। उन्होंने पहली कहानी तब लिखी थी जब ये आप ही की तरह छठीं कक्षा में पढ़ते थे। सुदर्शन ने कहानियों के अतिरिक्त कविताएं, लेख, नाटक और उपन्यास भी लिखे। इसके अलावा, उन्होंने अनेकों फिल्मों की पटकथा और गीत भी लिखे।

कैंपस बहुरंगी

कैंपस जीवन किसी भी व्यक्ति के जीवन का एक अत्यंत महत्वपूर्ण और यादगार अध्याय होता है। यह वह समय होता है जब एक युवा अपने किशोरावस्था से निकलकर वयस्कता की ओर कदम बढ़ाता है। कॉलेज या विश्वविद्यालय का परिसर केवल शिक्षा प्राप्त करने का स्थान नहीं होता, बल्कि यह एक ऐसा मंच है जहां व्यक्तित्व का संपूर्ण विकास होता है, जीवन कौशल सीखे जाते हैं, और भविष्य की नींव रखी जाती है। कैंपस जीवन अनेक रंगों से भरा होता है जैसे शैक्षणिक चुनौतियां, सामाजिक संबंध, सांस्कृतिक गतिविधियां, खेल-कूद, प्रतियोगिताएं, और आत्म-खोज की यात्रा। इन सभी पहलुओं को मिलाकर कैंपस जीवन एक बहुरंगी अनुभव बन जाता है जो व्यक्ति के जीवन पर स्थायी प्रभाव छोड़ता है।

शैक्षणिक जीवनः ज्ञान की नींव

कैंपस जीवन का सबसे प्रमुख और मूलभूत पहलू शैक्षणिक गतिविधियां हैं। विद्यार्थी अपनी रुचि और करियर लक्ष्यों के अनुसार विभिन्न विषयों में उच्च शिक्षा प्राप्त करते हैं। कक्षाओं में व्याख्यान, सेमिनार, प्रायोगिक कार्य, परियोजनाएं और परीक्षाएं शैक्षणिक जीवन के अभिन्न अंग होते हैं। यहां विद्यार्थी न केवल पुस्तकीय ज्ञान प्राप्त करते हैं, बल्कि आलोचनात्मक सोच, विश्लेषणात्मक क्षमता और समस्या समाधान के कौशल भी विकसित करते हैं।

प्रोफेसरों और शिक्षकों के साथ संवाद विद्यार्थियों के बौद्धिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। कई बार कक्षा के बाहर होने वाली चर्चाएं और बहसें अधिक प्रभावशाली होती हैं। पुस्तकालय कैंपस का हृदय स्थल होता है जहां विद्यार्थी घंटों समय व्यतीत करते हैं, शोध करते हैं, और अपने ज्ञान का विस्तार करते हैं। डिजिटल युग में ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म, ऑनलाइन संसाधन और वेबिनार ने शैक्षणिक अनुभव को और भी समृद्ध बना दिया है।

समूह अध्ययन और सहयोगात्मक शिक्षण भी कैंपस जीवन की विशेषता है। विद्यार्थी एक-दूसरे से सीखते हैं, अपने विचारों को साझा करते हैं और सामूहिक रूप से कठिन विषयों को समझने का प्रयास करते हैं। असाइनमेंट और प्रोजेक्ट कार्य के दौरान टीमवर्क और समय प्रबंधन जैसे महत्वपूर्ण कौशल विकसित होते हैं। परीक्षा का समय विशेष रूप से चुनौतीपूर्ण होता है जब

विद्यार्थी तनाव प्रबंधन और दबाव में काम करने की क्षमता सीखते हैं।

प्रयोगशालाओं और कार्यशालाओं में व्यावहारिक अनुभव सिद्धांत को जीवंत बनाता है। विज्ञान के विद्यार्थी प्रयोग करते हैं, इंजीनियरिंग के विद्यार्थी मॉडल बनाते हैं, और कला के विद्यार्थी अपनी रचनात्मकता को मूर्त रूप देते हैं। शोध परियोजनाएं विद्यार्थियों को मौलिक ज्ञान सृजन की प्रक्रिया से परिचित कराती हैं। कई विद्यार्थी अपने शोध पत्र प्रकाशित करते हैं और सम्मेलनों में प्रस्तुति देते हैं, जो उनके शैक्षणिक करियर की शुरुआत होती है।

सामाजिक संबंधों का जाल

कैंपस जीवन में सामाजिक पहलू उतना ही महत्वपूर्ण है जितना शैक्षणिक। यहां विद्यार्थी विविध पृष्ठभूमियों, संस्कृतियों, धर्मों और भाषाओं से आने वाले लोगों से मिलते हैं। यह विविधता उन्हें सामाजिक समझ, सहिष्णुता और समावेशिता के मूल्यों से परिचय कराती है। कैंपस में बनने वाली दोस्ती अक्सर जीवन भर चलती है और ये रिश्ते व्यक्ति के सामाजिक और भावनात्मक विकास में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं।

हॉस्टल जीवन कैंपस अनुभव का एक अनूठा पहलू है। घर से दूर रहकर विद्यार्थी स्वतंत्रता और जिम्मेदारी का संतुलन सीखते हैं। रूममेट्स के साथ रहना, सीमित संसाधनों का प्रबंधन करना, और सामूहिक जीवन के नियमों का पालन करना महत्वपूर्ण जीवन कौशल होते हैं। देर रात की चाय पर होने वाली गहरी बात-चीत, मध्यरात्रि के स्नैक्स, और सामूहिक उत्सव हॉस्टल जीवन की यादगार घटनाएं होती हैं।

कैंपस में विभिन्न छात्र संगठन और क्लब सामाजिक संपर्क के लिए मंच प्रदान करते हैं। डिबेटिंग सोसाइटी, ड्रामा क्लब, म्यूजिक बैंड, डांस ग्रुप, और फोटोग्राफी क्लब जैसे समूह समान रुचियों वाले विद्यार्थियों को एक साथ लाते हैं। इन समूहों में सक्रिय भागीदारी से नेतृत्व कौशल, संगठनात्मक क्षमता और

सामूहिक कार्य की समझ विकसित होती है।

कैंटीन या कैफेटेरिया कैंपस का सामाजिक केंद्र होता है। यहां विद्यार्थी अनौपचारिक माहौल में मिलते हैं, विचारों का आदान-प्रदान करते हैं, और सामाजिक संबंध मजबूत करते हैं। खाने की मेज पर होने वाली चर्चाएं अक्सर सबसे रोचक और विविध होती हैं, जिनमें राजनीति से लेकर फिल्मों तक, दर्शन से लेकर खेल तक सभी विषय शामिल होते हैं।

सांस्कृतिक गतिविधियांः कला और अभिव्यक्ति का मंच

कैंपस जीवन में सांस्कृतिक गतिविधियां एक जीवंत और रंगीन आयाम जोड़ती हैं। वार्षिक सांस्कृतिक उत्सव, जिन्हें अक्सर 'फेस्ट' कहा जाता है, कैंपस कैलेंडर की सबसे प्रतीक्षित घटनाएं होती हैं। ये आयोजन विद्यार्थियों को अपनी कलात्मक प्रतिभा प्रदर्शित करने का अवसर देते हैं। संगीत प्रतियोगिताएं, नृत्य प्रदर्शन, नाटक, फैशन शो और कविता पाठ जैसी गतिविधियां विद्यार्थियों की रचनात्मकता को उजागर करती हैं।

पारंपरिक दिवसों और त्योहारों का आयोजन सांस्कृतिक विविधता को मनाने का माध्यम बनता है। दीवाली, होली, ईद, क्रिसमस, बैशाखी और ओणम जैसे त्योहार सभी विद्यार्थी मिलकर मनाते हैं, जो सांस्कृतिक एकता और समझ को बढ़ावा देते हैं।

थिएटर और नाटक कैंपस में कला की गहरी समझ विकसित करते हैं। विद्यार्थी न केवल अभिनय करते हैं बल्कि निर्देशन, मंच सज्जा, प्रकाश व्यवस्था और पटकथा लेखन में भी योगदान देते हैं। यह सामूहिक प्रयास उन्हें उत्पादन प्रक्रिया की जटिलताओं से परिचित कराता है। साहित्यिक गतिविधियां जैसे कि कविता पाठ, कहानी लेखन प्रतियोगिताएं और साहित्यिक चर्चाएं भाषा और साहित्य के प्रति प्रेम को बढ़ावा देती हैं।

सिनेमा क्लब और फिल्म स्क्रीनिंग भी कैंपस संस्कृति का हिस्सा हैं। संगीत समारोह और बैंड प्रदर्शन कैंपस में ऊर्जा का संचार करते हैं। चाहे वह शास्त्रीय संगीत हो या रॉक कॉन्सर्ट, ये आयोजन विद्यार्थियों को मनोरंजन और कलात्मक अनुभव प्रदान करते हैं।

खेल-कूद और शारीरिक स्वास्थ्य

कैंपस जीवन में खेल-कूद का महत्वपूर्ण स्थान है। शारीरिक स्वास्थ्य, मानसिक स्वास्थ्य से सीधे जुड़ा होता है, और खेल गतिविधियां दोनों को और बेहतर बनाती हैं। कैंपस में क्रिकेट, फुटबॉल, बास्केटबॉल, वॉलीबॉल, बैडमिंटन, टेबल टेनिस और एथलेटिक्स जैसे विभिन्न खेलों के लिए सुविधाएं उपलब्ध होती हैं। अंतर-कॉलेज प्रतियोगिताएं और खेल उत्सव विद्यार्थियों को प्रतिस्पर्धा करने और अपनी खेल क्षमताओं को सुधारने का अवसर देते हैं।

खेल विद्यार्थियों को अनुशासन, टीम भावना, दृढ़ संकल्प और हार को स्वीकार करने की क्षमता सिखाते हैं। खेल के मैदान पर सीखे गए ये सबक जीवन के अन्य क्षेत्रों में भी उपयोगी होते हैं। कैंपस में जिम और फिटनेस सेंटर आधुनिक युवाओं की स्वास्थ्य जागरूकता को दर्शाते हैं। योग और ध्यान सत्र मानसिक शांति और एकाग्रता में सहायक होते हैं।

खेल प्रतिनिधि और कैप्टन के रूप में चुने जाने से विद्यार्थियों में नेतृत्व गुण विकसित होते हैं। टीम का प्रबंधन करना, रणनीति बनाना और साथियों को प्रेरित करना महत्वपूर्ण कौशल हैं।

सामाजिक सेवा और सामुदायिक जुड़ाव

आधुनिक कैंपस जीवन में सामाजिक जिम्मेदारी एक महत्वपूर्ण आयाम बन गया है। राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस), राष्ट्रीय कैडेट कोर (एनसीसी) और अन्य सामाजिक सेवा संगठन विद्यार्थियों को समाज के प्रति उनकी जिम्मेदारी से परिचित कराते हैं। इन कार्यक्रमों के माध्यम से विद्यार्थी ग्रामीण विकास, साक्षरता अभियान, स्वास्थ्य शिविर और पर्यावरण संरक्षण जैसी गतिविधियों में भाग लेते हैं।

सामुदायिक सेवा विद्यार्थियों को वास्तविक दुनिया की समस्याओं से परिचित कराती है और उनमें सहानुभूति और संवेदनशीलता विकसित करती है। अनाथालयों, वृद्धाश्रमों और विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के केंद्रों में स्वयंसेवी कार्य करना विद्यार्थियों के लिए परिवर्तनकारी अनुभव होता है। रक्तदान शिविर, स्वच्छता अभियान और वृक्षारोपण कार्यक्रम सामाजिक चेतना को बढ़ावा देते हैं।

कई कैंपस में सामाजिक उद्यमिता और स्टार्टअप इनक्यूबेटर हैं जो विद्यार्थियों को सामाजिक समस्याओं के नवीन समाधान विकसित करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। आपदा राहत कार्य और धन संग्रह अभियान विद्यार्थियों को संकट के समय एकजुट होना सिखाते हैं।

तकनीकी कौशल और नवाचार

डिजिटल युग में कैंपस जीवन तकनीकी कौशल विकास का केंद्र बन गया है। कोडिंग क्लब, हैकाथॉन, तकनीकी संगोष्ठियां और कार्यशालाएं विद्यार्थियों को नवीनतम प्रौद्योगिकियों से परिचित कराती हैं। रोबोटिक्स, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, मशीन लर्निंग और ब्लॉकचेन जैसे क्षेत्रों में रुचि रखने वाले विद्यार्थियों के लिए

विशेष समूह और परियोजनाएं होती हैं।

तकनीकी उत्सव और प्रतियोगिताएं जैसे कि ऐप डेवलपमेंट चैलेंज, डेटा साइंस प्रतियोगिताएं और गेम डेवलपमेंट जैम विद्यार्थियों को अपने कौशल का परीक्षण करने और उद्योग के पेशेवरों से सीखने का अवसर देती हैं।

तकनीकी ब्लॉग लिखना और ऑनलाइन पोर्टफोलियो बनाना भी आधुनिक कैंपस जीवन का हिस्सा है। स्टार्टअप संस्कृति ने कैंपस में उद्यमशीलता की भावना को बढ़ावा दिया है, जहां विद्यार्थी अपने व्यावसायिक विचारों को विकसित करते हैं और पिच प्रतियोगिताओं में भाग लेते हैं।

करियर विकास और व्यावसायिक तैयारी

कैंपस जीवन केवल वर्तमान का आनंद नहीं है, बल्कि भविष्य की तैयारी भी है। प्लेसमेंट सेल और करियर मार्गदर्शन केंद्र विद्यार्थियों को उद्योग के लिए तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। रिज्यूमे लेखन कार्यशालाएं, साक्षात्कार तैयारी सत्र, समूह चर्चा अभ्यास और व्यक्तित्व विकास कार्यक्रम विद्यार्थियों को रोजगार बाजार के लिए तैयार करते हैं।

इंटर्नशिप और इंडस्ट्री इंटरैक्शन कैंपस शिक्षा और वास्तविक दुनिया के बीच पुल का काम करते हैं। कंपनी दौरे, अतिथि व्याख्यान और इंडस्ट्री मेंटरशिप प्रोग्राम विद्यार्थियों को पेशेवर वातावरण की समझ देते हैं। कैंपस भर्ती अभियान, जॉब फेयर और प्लेसमेंट ड्राइव करियर के अवसर प्रदान करते हैं।

उच्च शिक्षा के लिए तैयारी भी कैंपस जीवन का हिस्सा है। जीआरई, जीएमएटी, टीओईएफएल, आईईएलटीएस जैसी परीक्षाओं की तैयारी, छात्रवृत्ति के लिए आवेदन और विदेश में अध्ययन के लिए मार्गदर्शन कार्यक्रम उपलब्ध होते हैं। कई विद्यार्थी कैंपस में ही अपनी उद्यमशीलता यात्रा शुरू करते हैं, अपनी स्टार्टअप कंपनियां स्थापित करते हैं और नवाचार के माध्यम से अपना करियर पथ बनाते हैं।

मानसिक स्वास्थ्य और व्यक्तिगत विकास

कैंपस जीवन चुनौतियों से भरा होता है और मानसिक स्वास्थ्य का ध्यान रखना अत्यंत आवश्यक है। शैक्षणिक दबाव, प्रतिस्पर्धा, सामाजिक अपेक्षाएं और भविष्य की अनिश्चितता तनाव के स्रोत हो सकते हैं। आधुनिक कैंपस में काउंसलिंग सेवाएं, मानसिक स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रम और सहायता समूह उपलब्ध हैं। विद्यार्थियों को तनाव प्रबंधन, समय प्रबंधन और सकारात्मक मानसिकता विकसित करने के तरीके सिखाए जाते हैं।

आत्म-खोज और व्यक्तिगत विकास कैंपस जीवन का एक गहरा

पहलू है। यह समय विद्यार्थियों के लिए अपनी पहचान, मूल्यों और जीवन लक्ष्यों को समझने का होता है। दार्शनिक चर्चाएं, आध्यात्मिक समूह और व्यक्तिगत विकास कार्यशालाएं आत्म-चिंतन के अवसर प्रदान करती हैं। विविध विचारधाराओं, दर्शनों और जीवन शैलियों के संपर्क में आना विद्यार्थियों के विश्व दृष्टिकोण को व्यापक बनाता है।

असफलता से सीखना और लचीलापन विकसित करना कैंपस जीवन के महत्वपूर्ण सबक हैं। परीक्षाओं में खराब प्रदर्शन, प्रतियोगिताओं में हार या व्यक्तिगत संबंधों में टकराव ऐसे अनुभव हैं जो चरित्र निर्माण में योगदान देते हैं।

राजनीतिक और सामाजिक जागरुकता

कैंपस लोकतंत्र और सामाजिक जागरुकता का प्रशिक्षण स्थल भी है। छात्र संघ चुनाव, बहसें और विरोध प्रदर्शन विद्यार्थियों को राजनीतिक प्रक्रिया से परिचित कराते हैं। चुनाव प्रचार, मतदान और लोकतांत्रिक निर्णय लेने की प्रक्रिया में भाग लेना नागरिक जिम्मेदारी की समझ विकसित करता है। विभिन्न राजनीतिक विचारधाराओं के साथ जुड़ना और उन पर बहस करना आलोचनात्मक सोच को प्रोत्साहित करता है।

सामाजिक मुद्दों पर जागरुकता अभियान जैसे कि लैंगिक समानता, पर्यावरण संरक्षण, मानवाधिकार और सामाजिक न्याय कैंपस को सामाजिक परिवर्तन का केंद्र बनाते हैं। जागरुकता रैली, सेमिनार, कार्यशालाएं और हस्ताक्षर अभियान विद्यार्थियों को सक्रिय नागरिक बनने के लिए प्रेरित करते हैं। वर्तमान घटनाओं पर चर्चा, समाचार पत्रों का अध्ययन और वैश्विक मुद्दों पर बहस राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय परिदृश्य की समझ विकसित करती है।

कैंपस समाचार पत्र, रेडियो स्टेशन और टेलीविजन चैनल विद्यार्थियों को पत्रकारिता और मीडिया उत्पादन का अनुभव देते हैं।

डिजिटल युग में कैंपस जीवन

इक्कीसवीं सदी में कैंपस जीवन डिजिटल क्रांति से गहराई से प्रभावित हुआ है। स्मार्टफोन, लैपटॉप और इंटरनेट कनेक्टिविटी ने शिक्षा और सामाजिक संपर्क के तरीकों को बदल दिया है। ऑनलाइन शिक्षा प्लेटफॉर्म जैसे कि एमओओसी, वेबिनार और वर्चुअल क्लासरूम ने शिक्षा को कक्षा की चार दीवारों से बाहर ले जाने का कार्य किया है। विद्यार्थी विश्व के किसी भी कोने से प्रतिष्ठित प्रोफेसरों के व्याख्यान सुन सकते हैं और पाठ्यक्रम पूर्ण कर सकते हैं।

सोशल मीडिया ने कैंपस संस्कृति को एक नया आयाम दिया है। फेसबुक ग्रुप, व्हाट्सएप चैट और इंस्टाग्राम पर कैंपस के आयोजनों की तस्वीरें साझा करना आम बात है। लिंक्डइन प्रोफाइल बनाना और नेटवर्किंग करना पेशेवर विकास का हिस्सा बन गया है। व्लॉगिंग और पॉडकास्टिंग के माध्यम से विद्यार्थी अपने विचार और अनुभव व्यापक दर्शकों के साथ साझा करते हैं।

ऑनलाइन संसाधन जैसे कि यूट्यूब ट्यूटोरियल, शैक्षणिक वेबसाइट और डिजिटल लाइब्रेरी ने सीखने को अधिक सुलभ बना दिया है। ई-बुक्स, ऑनलाइन जर्नल और शोध डेटाबेस पुस्तकालयों के भौतिक संग्रह को पूरक बनाते हैं।

पर्यावरण जागरुकता और सततता

आधुनिक कैंपस में पर्यावरण संरक्षण और सततता महत्वपूर्ण मुद्दें बन गए हैं। हरित कैंपस पहल, अपशिष्ट प्रबंधन कार्यक्रम और ऊर्जा संरक्षण प्रयास विद्यार्थियों को पर्यावरणीय जिम्मेदारी सिखाते हैं। वृक्षारोपण अभियान, जैविक उद्यान और कम्पोस्टिंग परियोजनाएं व्यावहारिक पर्यावरण शिक्षा प्रदान करती हैं। प्लास्टिक मुक्त कैंपस, पुनर्चक्रण कार्यक्रम और जल संरक्षण तकनीकें सततता को बढ़ावा देती हैं।

पर्यावरण क्लब और हरित समितियां जागरुकता फैलाने और कार्रवाई करने के लिए गतिविधियों का आयोजन करती हैं। विश्व पर्यावरण दिवस और वन महोत्सव जैसे आयोजन पर्यावरणीय चेतना को मजबूत करते हैं। सोलर पैनल स्थापना, वर्षा जल संचयन और ऊर्जा-कुशल प्रकाश व्यवस्था जैसी पहल कैंपस को अधिक सततशील बनाती हैं।

जलवायु परिवर्तन, जैव विविधता संरक्षण और सततता पर सेमिनार और कार्यशालाएं वैश्विक पर्यावरणीय चुनौतियों के बारे में समझ बढ़ाती हैं। कई विद्यार्थी पर्यावरण विज्ञान में अपना करियर बनाते हैं या पर्यावरण-आधारित स्टार्टअप शुरू करते हैं।

कैंपस में खान-पान और जीवनशैली

कैंपस जीवन का एक महत्वपूर्ण और अक्सर उपेक्षित पहलू भोजन और जीवनशैली है। कैंपस कैंटीन और मेस विद्यार्थियों के दैनिक जीवन का केंद्र होते हैं। यहां का भोजन न केवल पोषण प्रदान करता है बल्कि घर की याद और सांत्वना भी देता है। विभिन्न क्षेत्रों से आए विद्यार्थियों के लिए विविध व्यंजन उपलब्ध होते हैं- उत्तर भारतीय, दक्षिण भारतीय, चाइनीज और महाद्वीपीय व्यंजन।

देर रात की चाय और मैगी, परीक्षा के दौरान कैंटीन पर निर्भरता, और मध्यरात्रि में पिज्जा ऑर्डर करना कैंपस जीवन की विशेषताएं हैं। कैंपस के आस-पास की छोटी दुकानें और ढाबे अक्सर विद्यार्थियों के पसंदीदा अड्डे बन जाते हैं। सस्ते और स्वादिष्ट भोजन की तलाश में विद्यार्थी नए स्थानों की खोज करते हैं और अपनी कल्पनाभरी मानचित्र बनाते हैं।

उत्सव और परंपराएं

हर कैंपस की अपनी अनूठी परंपराएं और उत्सव होते हैं जो संस्थान की पहचान बनाते हैं। फ्रेशर्स वेलकम पार्टी नए विद्यार्थियों के लिए कैंपस जीवन की शुरुआत का उत्सव होता है। सीनियर विद्यार्थी जूनियर्स का स्वागत करते हैं, उन्हें कैंपस के नियमों और परंपराओं से परिचित कराते हैं।

फेयरवेल पार्टी भावुक और यादगार होता है जब अंतिम वर्ष के विद्यार्थी कैंपस को अलविदा कहते हैं। यादों को साझा करना, हंसी और आंसू, और भविष्य के लिए शुभकामनाएं इस अवसर की विशेषता होती हैं।

थीम पार्टी, प्रोनाइट और कॉस्ट्यूम इवेंट मनोरंजन और रचनात्मकता के अवसर प्रदान करते हैं। कुछ कैंपस में विशेष परंपराएं होती हैं जैसे कि मिडनाइट स्टडी ब्रेक, प्री-एग्जाम रिचुअल्स, विजय उत्सव इत्यादि। ये अनौपचारिक परंपराएं कैंपस संस्कृति का अभिन्न हिस्सा बन जाती हैं और पीढ़ियों तक चलती रहती हैं।

प्रेम और संबंध

कैंपस जीवन में रोमांटिक संबंध भी एक वास्तविकता है। यह वह समय होता है जब युवा अपनी भावनाओं को समझना और व्यक्त करना सीखते हैं। कैंपस रोमांस, चाहे वे स्थायी हों या नहीं, व्यक्तिगत विकास और भावनात्मक परिपक्वता में योगदान देते हैं। संबंधों के माध्यम से विद्यार्थी समझौता करना, संचार कौशल और दूसरों की भावनाओं का सम्मान करना सीखते हैं।

मित्रता और भाईचारा कैंपस जीवन के सबसे मजबूत और स्थायी संबंध होते हैं। देर रात तक पढ़ाई, परीक्षा की तनावपूर्ण रातें,

सफलताओं का जश्न और असफलताओं में सहारा- ये सभी अनुभव मित्रता के बंधन को मजबूत करते हैं। कैंपस में बने दोस्त अक्सर जीवन भर के साथी बन जाते हैं। सीनियर-जूनियर संबंध मार्गदर्शन और सीखने का एक अनौपचारिक तंत्र प्रदान करते हैं।

चुनौतियां और उनका सामना

कैंपस जीवन केवल आनंद और उत्सव नहीं है, यह चुनौतियों से भी भरा होता है। आर्थिक दबाव कई विद्यार्थियों के लिए वास्तविकता है। पार्ट-टाइम जॉब करना, छात्रवृत्ति के लिए आवेदन करना और सीमित बजट में जीवन यापन करना कठिन हो सकता है। कई विद्यार्थी ट्यूशन देकर या कैंपस में काम करके अपनी पढ़ाई का खर्च उठाते हैं। घर से दूर रहने की भावनात्मक चुनौती, विशेष रूप से पहले वर्ष में, कठिन हो सकती है।

शैक्षणिक दबाव और प्रतिस्पर्धा कभी-कभी अत्यधिक हो सकती है। कठिन पाठ्यक्रम, बार-बार परीक्षाएं और उच्च अपेक्षाएं तनावपूर्ण हो सकती हैं। असफलता का डर और माता-पिता की अपेक्षाओं का भार विद्यार्थियों पर भारी पड़ सकता है। सामाजिक दबाव, सहकर्मी दबाव और अपनेपन की खोज भी चुनौतीपूर्ण हो सकती है। बुलिंग या भेदभाव का सामना करने वाले विद्यार्थियों के लिए कैंपस जीवन कठिन हो सकता है। ये चुनौतियां विद्यार्थियों को मजबूत और अधिक लचीला बनाती हैं। समस्या समाधान, संकट प्रबंधन और अनुकूलन क्षमता का विकास होता है। सहायता तंत्र, चाहे वह मित्र हों, परामर्शदाता हों या परिवार, इन चुनौतियों से निपटने में मदद करते हैं। कैंपस जीवन में सीखे गए संघर्ष के सबक जीवन भर काम आते हैं।

अंतर्राष्ट्रीय अनुभव और वैश्विक दृष्टिकोण

आधुनिक कैंपस में अंतर्राष्ट्रीय विद्यार्थियों की उपस्थिति और विदेश में अध्ययन के अवसर वैश्विक दृष्टिकोण विकसित करते हैं। विभिन्न देशों से आए विद्यार्थियों के साथ बातचीत सांस्कृतिक समझ और वैश्विक चेतना को बढ़ावा देती है। भाषा विनिमय कार्यक्रम, अंतर्राष्ट्रीय सांस्कृतिक रातें और वैश्विक मुद्दों पर चर्चाएं विश्व नागरिकता की भावना विकसित करती हैं।

अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में भाग लेना, वैश्विक प्रतियोगिताओं में भाग लेना और अंतर्राष्ट्रीय परियोजनाओं में योगदान देना विद्यार्थियों को वैश्विक मंच पर अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करने का मौका देता है। वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग और ऑनलाइन सहयोग के माध्यम से विद्यार्थी विभिन्न देशों के साथियों के साथ काम कर सकते हैं। यह वैश्विक नेटवर्किंग भविष्य के करियर के लिए मूल्यवान होती है।

भविष्य की ओर

कैंपस जीवन समाप्त होता है, लेकिन इसके प्रभाव जीवन भर रहते हैं। यह अंत नहीं बल्कि एक नई शुरुआत का प्रतीक है। कैंपस में बिताए वर्ष, सीखे गए सबक, बनाए गए संबंध और अनुभव किए गए अनुभव व्यक्ति के चरित्र और व्यक्तित्व का अभिन्न अंग बन जाते हैं।

पूर्व छात्र नेटवर्क कैंपस के साथ संबंध बनाए रखने का माध्यम बनता है। कई लोग अपने कैंपस के विकास में योगदान देते हैं, छात्रवृत्ति स्थापित करते हैं या मेंटरशिप प्रदान करते हैं। कैंपस में बिताए दिनों की यादें और वहां बनी दोस्ती जीवन की सबसे कीमती धरोहर बन जाती हैं। कई लोग नियमित रूप से अपने कैंपस का दौरा करते हैं, पुरानी यादों को ताजा करते हैं और नई पीढ़ी के विद्यार्थियों से मिलते हैं।

कैंपस जीवन के बाद, जब विद्यार्थी पेशेवर दुनिया में कदम रखते हैं, तो वे पाते हैं कि कैंपस में सीखे गए कौशल और मूल्य उनके काम आते हैं। टीमवर्क, समय प्रबंधन, संचार कौशल, लचीलापन और अनुकूलन क्षमता - ये सभी गुण कैंपस जीवन की देन हैं। कई सफल उद्यमी, नेता, कलाकार और पेशेवर अपनी उपलब्धियों का श्रेय कैंपस के अनुभवों को देते हैं।

निष्कर्ष

कैंपस जीवन वास्तव में बहुरंगी है, जहां प्रत्येक रंग जीवन के एक महत्वपूर्ण पहलू का प्रतिनिधित्व करता है। शैक्षणिक उत्कृष्टता से लेकर सामाजिक विकास तक, सांस्कृतिक संवर्धन से लेकर शारीरिक स्वास्थ्य तक, तकनीकी कौशल से लेकर सामाजिक जिम्मेदारी तक, कैंपस जीवन समग्र विकास का मंच है। यह एक लघु समाज है जहां विद्यार्थी जीवन के लिए तैयार होते हैं, अपनी पहचान बनाते हैं और अपने सपनों को आकार देते हैं।

—साभार
श्री सुरेश तिवारी

श्री सुरेश तिवारी का जन्म बिहार राज्य के गोपालगंज जिला के मांझा प्रखण्ड के एक छोटे से आलापुर नामक गांव में एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था। श्री तिवारी की प्रारम्भिक शिक्षा गांव के समीप अवस्थित स्कूल में हुई। हाईस्कूल की शिक्षा समीप में अवस्थित माधव हाईस्कूल मांझा गढ़ से हुई। तदुपरांत उत्तरोत्तर शिक्षा साइंस कालेज पटना एवं बीएचयू वाराणसी से संपन्न हुई। इन्होंने 1986 से ही विभिन्न तकनीकी पदों पर रहते हुए राजभाषा के प्रयोग को तकनीकी क्षेत्रों में बढ़ावा दिया है।

सोन मछली

जब मैं छोटा था तो मां को पिताजी से यह कहते सुना करता था, ''कैसे विचित्र आदमी हो तुम! ठीक है, नाटक-सिनेमा के लिए तुम्हारे पास समय नहीं है, पर कभी-कभार मेरे लिए कुछ ला तो सकते हो- सेंट की शीशी या और कुछ। लाने को तो यह सब मैं खुद भी ला सकती हूं, पर तुम कोई उपहार दो तो ज्यादा अच्छा लगेगा।''

मेरे पिता अध्यापकों के एक प्रशिक्षण महाविद्यालय में भूगोल के शिक्षक थे। जब वह घर पर होते, एक मोटी-सी किताब पढ़ते रहते।

एक दिन शाम के वक्त वह बड़ी खुशी-खुशी लौटे और आते ही बोले, ''आज तुम कुछ नहीं कह सकोगी। लो, पकड़ो इसे, देखो इसमें क्या-क्या है। तुम्हारी तबीयत खुश हो जाएगी!'' यह कहते हुए उन्होंने अपना ब्रीफकेस आगे बढ़ा दिया।

मां की खुशी का ठिकाना न रहा। मुझे सीने से लगाकर, कमरे में नाच-नाचकर गाने के लहजे में कहने लगीं, ''देखा जाए, तुम्हारे पिताजी क्या लाए हैं? देखा जाए...''

उन्होंने ब्रीफकेस को बड़े एहतियात से मेज पर रखकर खोला और तत्काल चौंककर बोलीं, ''यह क्या है? यह मेरे लिए क्या ले आए तुम? मर्दों के इस्तेमाल के 'यू डी कोलोन' का मैं क्या करूंगी? मैं क्या दाढ़ी बनाती हूं? सचमुच तुम बच्चे ही रहोगे!''

मां की आंखें डबडबा आईं थीं और उनका हाथ कांप रहा था। मां के दुःख से मैं भी दुखी हो उठा।

मेरी समझ में एक बात और आ गई। मैं और मेरे पिता एक ही भाषा में बात कर सकते हैं। मां ने उन्हें बच्चा कहा था और मैं भी बच्चा था।

बस, मैं अपने पिताजी के पीछे पड़ गया, ''मेरे लिए एक सोन मछली ला दीजिए। ला देंगे न? उस बिल्ले के साथ खेलते-खेलते मैं ऊब गया हूं। वह पंजे मारता है। मेरे लिए सोन मछली ला दीजिए।''

पिताजी से सोन मछली की मांग करने में मेरा एक उद्देश्य था। मेरी मां पुश्किन की परी-कथाएं सुनाया करती थीं। मछुआरे और सोन मछली की कहानी मुझे बड़ी अच्छी लगती थी। खासतौर पर जब वह जादुई मछली इंसानी आवाज में कहती है, ''ऐ बूढ़े,

मुझे समुद्र में छोड़ दे, इसके बदले में मैं तुझे मालामाल कर दूंगी।''

मैं समझता था कि सोन मछली कोई साधारण मछली नहीं है। अगर वह हमारे घर में आ जाए तो मां को रोज उपहार मिला करेंगे।

मेरे पिताजी ने अचरज के साथ पूछा, ''तुम्हें मछली चाहिए? यह तो मैं पहली बार सुन रहा हूं। तुम्हारी मां तो कुछ-न-कुछ लाने के लिए कहती ही रहती है, अब तुम भी कहने लगे। समझ में नहीं आता क्या करूं। अच्छा, मान लो तुम्हारे लिए कवई या और कोई मछली ला दूं तो?''

मैंने दृढ़ता से कहा, ''नहीं, मुझे तो सोन मछली ही चाहिए।''

आखिर वह राजी हो गए और बोले, ''अच्छा, ला दूंगा। पर तुम उसका करोगे क्या?''

मैंने बात को टालने के लिए कहा, ''मुझे कुछ काम है। पर देखिएगा, आप भी खुश हो जाएंगे।''

फिर एक दिन एक शीशे का बर्तन लेकर हम जीव-जंतुओं की दुकान पर गए।

उस दुकान पर सारी सोन मछलियां ही थीं। जब हम लौटे तो मेरे हाथों में मछली रखने का कांच का एक बर्तन था और मेरे पिताजी वह मर्तबान लिये हुए थे, जिसमें सोन मछली थी।

घर पहुंचकर हमने कांच के बर्तन में थोड़ा बालू डाला और फिर उसमें गुनगुना पानी भरा। इसके बाद वह मछली उसमें डाल दी।

पूरे-पूरे दिन मैं खिड़की में रखी मछली को ताकता रहता। अपने कांच के घर में वह तैरती रहती और कभी-कभी अपने पंखों से बालू को कुरेदती, जैसे सचमुच के समुद्र में हो।

मछली से मेरी बड़ी दोस्ती हो गई। मैंने एक नन्ही-सी झोंपड़ी बनाई और उसे कांच के बर्तन में रख दिया। मछली तैरती हुई

उसके दरवाजे से प्रवेश करती और खिड़की से निकल जाती। जिस तरह मेरे पिताजी ने सिखाया था, मैं कांच के बर्तन पर उंगली से ठुक-ठुक करता और मछली पूंछ फैलाए तैरती चली आती। लगता, जैसे वह कोई बड़ी गुप्त बात बताने आई है।

एक दिन घर पर कोई नहीं था। मैंने बड़ी सावधानी से मछली को बर्तन में से उठा लिया। वह ठंडी और चिकनी लग रही थी। वह मेरी मुट्ठी में फड़फड़ा रही थी और बार-बार मुंह खोल व बंद कर रही थी।

मैंने सोचा, वह कुछ कह रही है। मैं उसे अपने कान के पास ले गया। तभी लगा कि बुलबुले फूटने की-सी आवाज में वह कह रही है, ''जो चाहो मांग लो, तुम्हें वही मिल जाएगा।''

''ठीक है,'' कहते हुए मैंने मछली को फिर बर्तन में छोड़ दिया। फिर पानी पाकर वह तेजी से इधर-उधर चक्कर लगाने लगी। मुझे पूरा यकीन था कि वह हमारी बातचीत पर खुशी जाहिर कर रही थी।

उस दिन शाम को पिताजी खाने की मेज पर बैठे चाय पी रहे थे और अखबार पर नजरें दौड़ा रहे थे। मां घर पर नहीं थीं, किसी बीमार पड़ोसिन को देखने गई थीं। मैं मछली के बर्तन के पास गया और कांच को उंगली से ठुकठुकाकर धीरे से बोला, ''सोन मछली, सोन मछली! मेरी मां को सेंट की शीशी चाहिए। देखो, मेरी बात खाली न जाए।''

उसके बाद मैं सोने चला गया।

अगले दिन बर्फ गिर रही थी। पिताजी बर्फ से लथपथ घर आए और मां ने बाहर के कमरे में उनका कोट उतरवाकर धीरे से झटका तो उसकी जेब से शीशी के खनकने की-सी आवाज आई।

जेब से छोटी-सी शीशी बाहर निकलते हुए देखकर उन्होंने अचरज के साथ पूछा, ''यह क्या है?''

पिताजी ने शर्मीली मुस्कान के साथ कहा, ''क्रीमियाई गुलाब है, तुम्हारे लिए।''

''मेरे लिए?''

''हां, तुम्हारे लिए।''

''सच कह रहे हो? पहले क्यों नहीं बताया?''

''अब यह सब छोड़ो।'' पिताजी ने कुछ बुरा-सा मानते हुए कहा।

मानो अपने पिता के समर्थन में मैं भी बोल पड़ा, ''तुम्हारे लिए है, तुम्हारे लिए, और भी बहुत-सी चीजें आएंगी, देखती जाओ।''

मां ने मेरी बात अनसुनी करके भौंहें सिकोड़कर पिताजी की ओर देखा, आनंद के भाव से हंसीं और वह शीशी अपनी श्रृंगार की मेज पर रख दी।

शाम को मछली के बर्तन के पास से गुजरते हुए मैंने देखा, उसके साथ एक कागज लगा है। मैंने सोचा, जरूर मछली ने चिट्ठी भेजी है और चुपके से वह कागज ले लिया। पड़ोस की बीमार फेन्या चाची के पास मैं उस चिट्ठी को ले गया। उन्होंने पढ़कर सुनायाः

''अगड़म-बगड़म-बंबा बो! मां का कहना मानो और काम में उसकी मदद करो।''

चिट्ठी लौटाते हुए फेन्या चाची ने पूछा, ''यह क्या मामला है?''

मैंने कहा, ''कुछ नहीं, यों ही।'' वे जादू के शब्द मैं दोहराना नहीं चाहता था कि कहीं वह उन्हें याद न कर लें।

घर पहुंचकर मैंने खाने की मेज साफ की और दो जूठी प्लेटें रसोई में रख आया। मैंने स्वयं अपना बिस्तर ठीक किया और पहली बार बिना मां की मदद के हाथ-मुंह धोए। सोने की पोशाक पहनकर मैंने मछली के बर्तन पर उंगली ठुकठुकाकर कहा, ''अगड़म-बगड़म-बंबा बो! सोन मछली, मां के उपहार के लिए धन्यवाद। मुझे तीन पहियों की एक साइकिल दिला दो, जैसी ल्योवा के पास है।''

आमतौर पर मैं देर से सोकर उठता हूं, करीब दस बजे। उसके बाद आंखें मलते हुए रात के सपनों को याद करता हूं।

पर उस दिन मैं आंखें मलता ही रहा और अपने कान भी मैंने खींचे। मेरे बिस्तर की बगल में चमचम करती, नई, तीन पहियों की एक साइकिल खड़ी थी।

साइकिल की निकेल की पालिशवाली घंटी पर हाथ फेरते हुए मैं सोचने लगा, 'यह तो सचमुच चमत्कार है। इच्छा करने की देर

नहीं कि पूरी हो जाती है। मुझे बराबर मां की मदद करते रहना चाहिए।'

आधा दिन मैं अपनी साइकिल पर ही घूमता रहा। जब मछली को खिलाने का समय आया तो मैंने उसका सारा चारा बर्तन में उड़ेल दिया।

मां ने पूछा, ''यह साइकिल कहां से मिली?''

मछली के बर्तन की ओर देखते हुए मैंने उत्तर दिया, ''हा-हा, तुम देखती तो जाओ, अभी तो बहुत चीजें आएंगी।''

भोजन के बाद मैं खिड़की के पास जा रहा था कि पिताजी ने मुझे बुलाकर धीरे से कहा, ''अब कुछ दिनों तक मछली से कुछ न मांगना। कुछ दिन आराम करने दो उसे।''

मैंने पिताजी की सलाह को गौर से सुना। वाकई उस नन्ही-सी सोन मछली को इतनी भारी साइकिल दुकान से यहां तक लाने में बड़ी मेहनत करनी पड़ी होगी।

मैं अहाते में खेलता और स्कीइंग करता रहा। मैंने बर्फ से आदमी का पुतला भी बनाया। इस बीच मछली को जरूर मेरी याद आ रही होगी। मैंने सोचा, बिल्ले से उसका परिचय करा दिया जाए। पहले भी वह बिल्ला उछलकर खिड़की पर चढ़ जाता था, पर पिताजी ने उसे इतनी कड़ाई से समझाया था कि वह दूर से ही चमकती हुई सोन मछली को ताकता रहता था।

नए परिचय से वह बड़ा खुश हुआ। मैंने जब उसे मछली के बर्तन के पास बैठा दिया तो मारे खुशी के उसकी आंखें एकदम गोल-मोल लग रही थीं। वह म्याऊं-म्याऊं कर रहा था और पंजों को बार-बार उठा और रख रहा था।

उस दिन जब मैं बाहर से लौटा तो सोन मछली बर्तन में नहीं थी। बिल्ला मेरी ओर पीठ किए फर्श पर बैठा बड़े प्रेम से कुछ चबा रहा था। मेरे मन में भय समा गया और मैं उसकी ओर लपका। उसकी गर्दन पकड़कर अपनी ओर घुमाई तो देखा मछली की सुनहरी पूंछ उसके मुंह में लगी हुई थी।

मैंने बिल्ले को एक घूंसा जमाया और फिर कांच के बर्तन में हाथ डालकर टटोला कि शायद सोन मछली अभी भी उसमें हो। पर वहां कुछ नहीं था। ओवरकोट और टोपी पहने-पहने ही मैं फर्श पर हाथ-पैर पटककर रोने लगा।

चीखकर मैंने बिल्ले से कहा, ''पक्का शैतान है! मैं तो सोन मछली से कहने वाला था कि हमें समुद्र-तट की सैर को ले चले और ल्योवा से कह दे कि वह मेरा स्कीइंग का सामान न ले... मैं सोन मछली से एक राइफल और हवाई जहाज भी मांगने वाला था, ताकि कुछ करके दिखा सकूं। पर अब तो सब कुछ तूने अपने पेट में भर लिया।''

उसी समय पिताजी आ गए। ठंड से उनका चेहरा लाल हो रहा था।

मैं चिल्लाया, ''पिताजी!'' और सोन मछली की पूंछ उन्हें दिखाकर कहा, ''यह सब इस बिल्ले की हरकत है। यह शैतान है... इसे मार डालिए!''

अपना ब्रीफकेस एक ओर रखकर वह मेरे पास बैठकर समझाने लगे, ''बेटे, रोओ नहीं, रोने से क्या होगा?''

हिचकियां लेते हुए मैंने कहा, ''मैं समुद्र-तट पर जाना चाहता था। एक राइफल मांगना चाहता था... और सबके लिए उपहार मांगता।''

वह बोले, ''अच्छा, तो तुम्हें इस बात का दुःख है। वाकई तुम्हारा बड़ा नुकसान हो गया। मेरी पूरी सहानुभूति तुम्हारे साथ है। पर यह सोन मछली की पूंछ भी बहुत कुछ कर दिखाएगी।''

पिताजी का कहना सही था। सोन मछली की पूंछ हमने फेंक दी थी, पर वह करामात दिखाती रही। मेरे जन्मदिन पर और नववर्ष पर उपहार आते रहे। हम लोग एक बार समुद्र-तट पर छुट्टियां मनाने भी गए। समुद्र के किनारे खड़े होकर मैं बड़ी-बड़ी देर तक सोन मछली को आवाज देता रहा था, पर वह फिर कभी नहीं आई।

बरसों बाद मेरी समझ में आया कि हमसे प्यार करने वाले और दिन-रात मेहनत करने वाले पिताजी ही मेरी सोन मछली थे।

—साभार
इओसिफ दिक

इओसिफ दिक (20 अगस्त 1922 - 22 जुलाई 1984) बच्चों की कहानियों के लेखक थे। 1940 में, वे समाचार पत्र रायबिंस्काया प्रावदा में स्थानीय साहित्यिक मंडली के सदस्य थे और कहानियां लिखना शुरू किया। समरकंद के एक सैन्य अस्पताल में एक साहित्यिक मंडली का आयोजन किया गया, जिसमें उन्हें दिव्यांग होने के कारण दांत में पेंसिल दबाकर लिखना पड़ा। 1943 के अंत में, बिना परीक्षा के, उन्हें साहित्यिक संस्थान में नामांकित किया गया।

कार्यालयीन टिप्पणियां

Approval may be accorded	अनुमोदन प्रदान कर दिया जाए
Consolidated report may be furnished	समेकित रिपोर्ट प्रस्तुत की जाए
Discretionary power	विवेकाधिकार
Exigencies of public service	लोक सेवा की तात्कालिक आवश्यकताएं
Expedite action	कार्रवाई शीघ्र करें, कार्रवाई में शीघ्रता करें
Fair and equitable	उचित और साम्ययुक्त
Hold in abeyance	प्रास्थगित रखना
In Conformity with	के अनुरूप
In good faith	सद्भाव पूर्वक
In pursuance of	के अनुसरण में, के अनुसार
Is adjourned sine die	अनिश्चित काल के लिए स्थगित
You are hereby authorised to	आपको इसके द्वारा यह प्राधिकार दिया जाता है
With retrospective effect	भूतलक्षी प्रभाव सहित, पूर्वव्यापी प्रभाव सहित
To put in abeyance	प्रास्थगित करना, प्रास्थगन
Required to be ratified	अनुसमर्थन अपेक्षित है
Required to be rectified	परिशोधन अपेक्षित है

-बीएसबीई प्रयोगशाला
भा.प्रौ.सं. कानपुर

आईआईटी कानपुर पूर्व छात्र समारोह की झलकियां

संपादक- श्री विजय कुमार पाण्डेय
राजभाषा अधिकारी
officer1_rp@iitk.ac.in

ईमेल: skmisra@iitk.ac.in, hindi_cell@iitk.ac.in
वेब: https://www.iitk.ac.in/new/antas

सम्पर्क:

राजभाषा प्रकोष्ठ
न्यू फैकल्टी बिल्डिंग एनेक्स
भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर (उ.प्र.)
पिन- 208016
दूरभाष: 0512-259-7122

फेसबुक | एक्स | राजभाषा प्रकोष्ठ | ई-पत्रिका | लिंक्ड इन | इंस्टाग्राम | यूट्यूब

ISSN : 3107-7757